www.terapanthinfo.com

इस अंक में

अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

अणुव्रत

वर्ष : 56 ■ अंक : 15 ■ 1-15 जून, 2011

संपादक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट
सहयोगी संपादक : निर्मल एम. रांका

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

❐ सदस्यता शुल्क :

- एक प्रति : बारह रु.
- वार्षिक : 300 रु.
- त्रैवार्षिक : 700 रु.
- दस वर्षीय : 2000 रु.

❐ विज्ञापन सहयोग :

- द्वितीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- तृतीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- चतुर्थ मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 20,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'पूरा' : 5,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'आधा' : 3,000 रु.

❐ सम्पर्क सूत्र :

अणुव्रत महासमिति
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली–110002

दूरभाष : (011) 23233345
फैक्स : (011) 23239963

E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
Website : anuvratinfo.org

- भ्रष्टाचार के बाहरी कारण — *आचार्य महाप्रज्ञ* — 3
- जीविका और जीवन — *आचार्य महाश्रमण* — 6
- न्यायपालिका पर नियंत्रण — *रंजीत वर्मा* — 8
- जनता के नेता अन्ना हजारे — *डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी* — 10
- भ्रष्टाचार की नींव मन में — *लक्ष्मी रानी लाल* — 12
- 33 साल से भ्रष्टाचार के खिलाफ जंग — *अखिल सक्सेना* — 13
- सरकारी बनाम जनता का लोकपाल — *हरबंश दीक्षित* — 14
- जनता को हिकारत से मत देखिए — *सीताराम येचुरी* — 16
- आप भी लड़िए — *शशि शेखर* — 18
- कॉरपोरेट की आवाज..... — *जोसफ बर्नाड* — 19
- देशभर में मिला अन्ना हजारे को समर्थन — 20
- अन्ना एक, साजिश अनेक — *आशुतोष* — 22
- घोटाले का आदर्श — *नरेन्द्र देवांगन* — 23
- अफसरशाही में कुछ ऐसे भी कुछ वैसे भी — *आशीष वशिष्ठ* — 24
- क्या भ्रष्टाचार मिट पाएगा? — *डॉ. हीरालाल छाजेड़* — 26
- अहिंसा और अनुकम्पा-3 — *मुनि सुखलाल* — 28
- कमर दर्द और प्रेक्षा चिकित्सा :3: — *मुनि किशनलाल* — 29
- नरक में चुनाव — *जसविंदर शर्मा* — 30
- हजारों विद्यालयों में अणुव्रत गीत का संगान — *मुनि राकेशकुमार* — 32

■ स्तंभ

- संपादकीय — 2
- राष्ट्र चिंतन — 9
- कविता — 17, 27
- अणुव्रत आंदोलन — 35-40

www.terapanthinfo.com

सही दिशा में उठा कदम

स्वतंत्र भारत में तेजी से बढ़ रहे भ्रष्टाचार के मूल में आर्थिक असमानता, वैभव, आडम्बर और भोगवादी जीवनशैली प्रमुख कारक तत्व हैं। प्राप्त आंकड़ों और भ्रष्टाचार में लिप्त रहे व्यक्तियों के जीवन को बारीकी से देखा जाये तो ज्ञात होता है कि आर्थिक दृष्टि से कमजोर व्यक्तियों को यकायक जब पद प्राप्त हो गये तो उनमें से अधिकांश ने अर्थ के मोहपाश में बंधकर भ्रष्ट आचरण को बढ़ावा दिया जिसके परिणामस्वरूप पिछले छः दशक में भ्रष्टाचार शिष्टाचार में परिवर्तित हो हमारे दैनिक जीवन का अंग बन गया। रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार, देश के संसाधनों की लूट-खसोट और नेताओं-नौकरशाहों की शाहखर्ची हमारी परम्परागत संस्कृति को कमजोर कर रही है। क्योंकि आजादी के बाद देश में संस्थागत भ्रष्टाचार ने अपनी जड़ें लगातार मजबूत की हैं। भारत के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति एस.एस. कपाडिया को कहना पड़ा कि न्यायपालिका की आजादी और एकजुटता कायम रखने के लिए हमें काले लिबास (न्यायपालिका) में साफ छवि के लोग चाहिएं..... भ्रष्ट जजों को राजनीतिक संरक्षण नहीं मिलना चाहिए।

कैन्सर की तरह तेजी से बढ़ रहे भ्रष्टाचार के विरुद्ध अप्रैल माह में जमीन से जुड़े गांधीवादी और सामाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे के नेतृत्व में पूरा देश यकायक उठ खड़ा हुआ और भारत सरकार को भ्रष्टाचार के विरुद्ध कार्यवाही करने को विवश किया। अन्ना हजारे के प्रस्तावों को स्वीकारते हुए भारत सरकार ने वायदा किया कि भ्रष्टाचार व सत्ता के नशे में डूबे राजनेताओं-अफसरों के खिलाफ कार्यवाही करने की दिशा में संवैधानिक प्रक्रियाओं का प्रावधान किया जायेगा। सरकार की यह पहल कितनी सार्थक होगी इस पर भी संदेह के बादल हैं क्योंकि केन्द्रीय मंत्रिमंडल तथा राज्यों के मंत्रिमंडलों में जो लोग काबिज हैं उनमें से अधिकांश अरबपति-करोड़पति हैं। ये वे लोग हैं जो राजनीति में आने से पूर्व सामान्य स्थिति में थे और आज राजा-महाराजाओं को भी पीछे छोड़ रहे हैं। इन नये-नये राजा-महाराजाओं ने अपनी सम्पति का जो ब्यौरा दिया है, वास्तविकता उससे कई गुना अधिक है।

तेजी से पांव पसारती भोगवादी जीवन शैली तथा चुनाव में जीत प्राप्त कर सत्ता प्राप्त करने की भूख राजनेताओं को भ्रष्ट आचरण करने को विवश कर रही है। चुनावों में आज अर्थ का नियोजन व्यापार की तरह किया जा रहा है। चुनाव में जितना अधिक धन लगाओगे जीतने पर उससे अधिक धन बटोरेंगे इस दृष्टि ने हमारे चुनावी तंत्र को ही पंगु कर दिया है। कहने को तो चुनाव व्यय सीमा लाखों की ही है पर एक सांसद उम्मीदवार का चुनाव के समय तीन करोड़ से अधिक का व्यय होता है। हिसाब में जोड़तोड़ कर ही चुनाव आयोग को तय सीमा का फर्जी खर्च प्रस्तुत किया जाता है जितनी विधायक-सांसद की खर्च सीमा होती है। निर्धारित सीमा से ऊपर की व्यय राशि का हिसाब ही नहीं रखा जाता, सारे सबूत तत्काल नष्ट कर दिये जाते हैं और हर निर्वाचित प्रतिनिधि, उम्मीदवार व्यय सीमा का झूठा शपथ पत्र प्रस्तुत करता है। इस प्रकार चुनाव की प्रथम प्रक्रिया ही कदाचार पर आधारित है तो फिर ईमानदारी की अपेक्षा कैसे की जा सकती है?

इसलिये भारतीय चुनावी तंत्र को स्वरथ बनाने के लिए आवश्यक है कि उम्मीद्वारों का चुनावी व्यय सरकारी कोष से किया जाये, प्रचार सामग्री एवं अन्य आवश्यक सुविधाएं केन्द्र-राज्य सरकार उपलब्ध करवाये तथा हर उम्मीद्वार पर कड़ी निगाह रखी जाये। ऐसा होने से उद्योगपतियों और आम जनता से जो चुनावी चंदा एकत्र किया जाता है उस पर रोक लगेगी और ईमानदार लोग चुनावों में प्रत्याशी बन भारतीय लोकतंत्र के पहियों को मजबूती प्रदान करेंगे।

अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी का कथन है ''कोई भी राजनैतिक दल अपने मतदाताओं को चाहे किसी भी गलत उपाय से आकृष्ट करना चाहे, यदि देश की जनता उसमें सहभागी नहीं बनती है तो वह भ्रष्टाचार आगे नहीं फैल पाएगा।''

भ्रष्टाचार के विरुद्ध अन्ना हजारे का कदम सही समय पर, सही दिशा में उठा सार्थक कदम है। आवश्यकता इस बात की है कि इस कदम के प्रति हमारी प्रतिबद्धता एवं ईमानदारी बनी रहे, चाटुकारिता नहीं निखरे।

● डॉ. महेन्द्र कर्णावट

www.terapanthinfo.com

भ्रष्टाचार के बाहरी कारण

आचार्य महाप्रज्ञ

बाह्य जगत में भ्रष्टाचार का प्रमुख कारण है आर्थिक आसक्ति और आर्थिक आकर्षण। नीतिशास्त्र में अर्थ की परिभाषा उपलब्ध होती है 'यतोऽर्थसिद्धिः स अर्थः जिससे प्रयोजन की सिद्धि होती है उसका नाम है अर्थ। पदार्थ जगत में अर्थ सब कुछ है। जीवन चलाने के लिए पदार्थ जरूरी है। अर्थ के बिना पदार्थ की प्राप्ति नहीं होती। इसलिए उसके प्रति आकर्षण स्वाभाविक है और सार्थक भी है। उस आकर्षण को दिशा देने का काम अर्थव्यवस्था का है। वह अर्थव्यवस्था स्वस्थ हो सकती है, जिसकी पृष्ठभूमि में नैतिकता और आध्यात्मिकता के प्रकंपन शक्तिशाली हों। आज भ्रष्टाचार इसलिए बढ़ रहा है कि अर्थशास्त्रीय चिंतन में नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक मूल्यों को नकारा गया है। उसमें केवल आर्थिक विकास की भूमिका ही प्रमुख है। उसका परिणाम यह है कि अर्थव्यवस्था और अर्थनीति सम्पन्नता की ओर जा रही है। विपन्नता उसके सम्मुख नहीं है, किन्तु पराङ्मुख है। यही कारण है कि संपन्नता को पोषण मिल रहा है और विपन्नता का शोषण हो रहा है। इस विषय में एक कहानी बहुत प्रासंगिक होगी

एक दुकानदार ने अपने ग्राहक से कहा पैसे के पास पैसा आता है। दूसरे दिन उसने देखा कि दुकानदार रुपयों की गिनती कर रहा है। सैकड़ों-सैकड़ों रुपये उसके सामने पड़े हैं। उसने एक रुपया निकाला और उसे दिखाते हुए बोला सब मेरे पास आ जाओ। बहुत कहने के बावजूद एक भी रुपया उसके पास नहीं आया। उसने सोचा- अपने रुपये को उन रुपयों के पास भेजूँ और सब मेरे पास आ जाएगा। अपना रुपया फेंका फिर भी रुपया उसके पास नहीं आया। तब दुकानदार से ग्राहक बोला 'आपने गलत कहा कि रुपये के पास रुपया आता है।' दुकानदार बोला 'मेरी बात सही साबित हुई है कि रुपयों के पास रुपया आ गया।

आज की अर्थव्यवस्था के अनुसार यही हो रहा है कि अमीर और अधिक अमीर बन रहा है और गरीब का पैसा भी उसकी झोली में जा रहा है। बड़े उद्योग छोटे उद्योगों को लील कर अधिक उत्पादन कर सकते हैं, अधिक धन कमा सकते हैं। किन्तु बेरोजगार लोगों की प्रतिक्रियात्मक हिंसा से नहीं बच सकते।

बड़े उद्योग और बड़ा बाजार जनता के हित में है। यह विचार आधारहीन नहीं है। किन्तु अधिक संग्रह, अधिक उपभोग की मनोवृत्ति जनहित में नहीं है। **भ्रष्टाचार का कारण बड़ा उद्योग, बड़ा व्यापार तथा सत्ता और अधिकार नहीं है। भ्रष्टाचार का कारण है शिक्षा की एकांगी अवधारणा और व्यवस्था। संयम, त्याग और उपभोग का सीमाकरण तथा सामाजिक रूढ़ियों में परिवर्तन और पारिवारिक दबाव से विचलित न होना- ये सब भ्रष्टाचार की प्रतिरोधात्मक शक्तियां हैं। शिक्षा में इनके लिए कोई अवकाश नहीं है। भावात्मक विकास के बिना होने वाला कोरा बौद्धिक विकास भ्रष्टाचार में सहायक बन सकता है, उनका प्रतिरोधी नहीं।**

प्राचीन काल में अर्थ का मूल्य बहुत था। साथ-साथ चरित्र का भी विशिष्ट मूल्य था। सामाजिक व्यवहार में अर्थार्जन के क्षेत्र में दो शब्द प्रयुक्त किए जाते थे

1. न्यायोपार्जित अर्थ।
2. अन्यायोपार्जित अर्थ।

प्रामाणिकता और राजकीय कानूनों के अनुसार अर्जित किया जाने वाला अर्थ न्यायोपार्जित अर्थ माना जाता था। अनैतिकता और राजकीय कानूनों का उलंघन कर अर्जित किया जाने वाला अर्थ अन्यायोपार्जित अर्थ माना जाता था। कौटिल्य के अनुसार न्याय से अर्जित धन अर्थ और अन्याय से अर्जित धन अर्थाभास है।

हरिभद्र सूरि के अनुसार गलत साधनों के उपयोग से अर्थ का लाभ संदिग्ध है। हो भी सकता है, नहीं भी हो सकता है,

कतरन

नौकरशाहों को देना होगा हिसाब

संपति का ब्योरा करना होगा सार्वजनिक, ऐसा न करने पर प्रमोशन से धोना पड़ेगा हाथ

हरिकिशन शर्मा

नई दिल्ली

भ्रष्टाचार पर जन आंदोलन से चौतरफा घिरी सरकार ने कड़े कदम उठाना शुरू कर दिया है। नेताओं के बाद अब भ्रष्ट बाबू निशाने पर हैं। घूसखोरी व घोटालों से करोड़ों की संपत्ति बनाने वाले नौकरशाहों को सबक सिखाने के इरादे से केंद्र ने आईएएस अफसरों सहित ग्रुप ए लेवल के सभी अधिकारियों की संपत्ति का ब्योरा सार्वजनिक करने का फैसला किया है। जो अधिकारी संपत्ति का ब्योरा नहीं देंगे, उन्हें न प्रमोशन मिलेगी और न ही भारत सरकार में संयुक्त सचिव तथा सचिव पद पर नियुक्ति किया जाएगा।

सूत्रों के मुताबिक कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग (डीओपीटी) ने 4 अप्रैल को यह फरमान सभी राज्यों के मुख्य सचिवों, राष्ट्रपति सचिवालय, प्रधानमंत्री कार्यालय, कैबिनेट सचिवालय, लोकसभा, राज्य सभा सचिवालय, नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, चुनाव आयोग और केंद्र सरकार के सभी विभागों और मंत्रालयों को भेजा है। बार-बार आग्रह के बावजूद ब्योरा न देने वाले अधिकारियों को डीओपीटी ने दो हफ्ते का समय दिया है।

सख्त कदम

- कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग ने 4 अप्रैल को जारी किया फरमान
- दो हफ्ते के भीतर अधिकारियों को देनी होगी संपति की जानकारी

डीओपीटी ने नौकरशाहों को चेतावनी देते हुए कहा है कि जो अफसर समयबद्ध तरीके से अपनी संपत्ति का ब्योरा नहीं देंगे, उन्हें विजिलेंस क्लीयरेंस नहीं दिया जाएगा। प्रमोशन पर विचार भी नहीं किया जाएगा। सरकार ने अखिल भारतीय सेवाओं और ग्रुप ए केंद्रीय सेवा अधिकारियों की संपत्ति का ब्योरा सार्वजनिक करने का फैसला भी किया है। एक जनवरी 2011 को इन अधिकारियों की जितनी संपत्ति है, उसे पब्लिक डोमेन में डाल दिया जाएगा। अब तक सिर्फ बिहार और मध्य प्रदेश ने ही इस तरह का आदेश जारी आईएएस अधिकारियों की संपत्ति का खुलासा किया है।

हिन्दुस्तान दैनिक, 9 अप्रैल 2011 से 'साभार'

www.terapanthinfo.com

जिस राष्ट्र के शीर्षस्थ व्यक्ति भ्रष्टाचार की समस्या के प्रति जागरूक होते हैं वहाँ भ्रष्टाचार को कम करने का रास्ता साफ हो जाता है और जिस राष्ट्र के शीर्षस्थ व्यक्ति भ्रष्टाचार को स्वाभाविक मान लेते हैं अथवा 'यह सर्वत्र होता है' इस तर्क से उसकी पुष्टि करते हैं वहाँ भ्रष्टाचार को पनपने का और अधिक मौका मिलता है।

किन्तु उससे अनर्थ होता है, यह असंदिग्ध है। अर्थ के अर्जन में साधन- शुद्धि का ध्यान रखना न्याय है और उसका ध्यान न रखना अन्याय है। अन्यायोपार्जित धन के लिए वर्तमान में 'भ्रष्टाचार' शब्द का प्रयोग किया जा रहा है।

मनुष्य में भ्रष्टाचार के आंतरिक कारण विद्यमान रहते हैं। जब सामाजिक और पारिवारिक व्यवहार का दबाव होता है तब अन्तर की वृत्तियां जागृत होकर भ्रष्टाचार बन जाती हैं। दहेज आदि सामाजिक व्यवहार भ्रष्टाचार का एक बड़ा कारण है। तुम इतने बड़े अधिकारी हो, हमारे लिए कुछ भी नहीं करते। परिवार का यह दबाव भ्रष्टाचार की वृत्ति को जागृत कर देता है। राजनीतिक दबाव के अनेक रूप हैं और उसकी अनेक आख्यायिकाएं प्रसिद्ध हैं। हमें यह कल्पना नहीं करनी चाहिए कि इन दबावों के होने पर व्यक्ति चरित्रनिष्ठ रह सकता है। दबाव के होने पर भी विचलित नहीं होते, वैसे लोग बहुत कम हैं। अधिसंख्य लोग दबाव की स्थिति में विचलित हो जाते हैं। इस विवेचन से स्पष्ट है कि बाहरी परिस्थिति आंतरिक भावों को संवेग बना देती है और आचार के बाधक भाव बाह्य जगत में भ्रष्टाचार बन जाते हैं।

भ्रष्टाचार के कारण भी असंख्य हैं और क्षेत्र भी असंख्य हैं। भ्रष्टाचार की समस्या अतीत में रही है, वर्तमान में है और भविष्य में नहीं रहेगी, ऐसी कल्पना भी नहीं की जा सकती। हम सच्चाई को झुठलाकर आकाश कुसुम से सुगंध नहीं ले सकते। समस्या के होने पर उसे सुलझाने का प्रयत्न न करना मानवीय बुद्धि और पुरुषार्थ का अपमान है। हम प्रयत्न कर सकते हैं और करना भी चाहिए कि भ्रष्टाचार की समस्या तीव्र न हो और वह विकास में बाधक न बने।

भ्रष्टाचार के अनेक क्षेत्र और अनेक रूप हैं

- **अवैध मुद्रा संप्रेषण**
- **तस्करी में सहयोग**
- **संवेदनशील, गुप्तज्ञान, सूचना या जानकारी को बेचने में सहयोग।**
- **अवैध शस्त्रों, नशीली दवाओं के प्रचार - प्रसार का व्यापार।**
- **मतदान, चुनाव एवं राजनीतिक दलों की कार्यप्रणाली।**
- **अपहरण, धोखाधड़ी, फिरौती, भय आदि से वसूली।**
- **सत्ता/पद का दुरुपयोग।**

भ्रष्टाचार : परिष्कार के आंतरिक उपाय

परिस्थिति मनुष्य को प्रभावित करती है, किन्तु वह उसके व्यवहार पर नियंत्रण नहीं करती। व्यवहार पर नियंत्रण करने वाले तत्त्व मनुष्य के शरीर में विद्यमान हैं नाड़ीतंत्र, ग्रंथितंत्र, रसायन, प्रोटीन। नाड़ी-तंत्र दो भागों में विभक्त है

1. केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र
2. परिधिगत तंत्रिका तंत्र

केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र के मुख्य दो अंग हैं

1. मस्तिष्क
2. सुषुम्ना अथवा मेरुरज्जु

इनके रहस्यों को समझे बिना व्यक्ति को नहीं बदला जा सकता। व्यक्ति को बदले बिना समाज को नहीं बदला जा सकता और समाज की व्यवस्था को बदले बिना भ्रष्टाचार कम नहीं किया जा सकता। उसे कम करने का सर्वोत्तम उपाय है मस्तिष्कीय प्रशिक्षण। उसके तीन पड़ाव हैं

पहला पड़ाव है विचार-भ्रष्टाचार को कम करने के लिए प्रतिरोधी विचारों का व्यवस्थापन।

दूसरा पड़ाव है विचार का संस्कार में परिवर्तन।

तीसरा पड़ाव है विचार का आचार में परिवर्तन।

विचार और आचार एक नदी के दो किनारे हैं, उनको कभी मिलाया नहीं जा सकता। नदी के इस तट से उस तट पर जाने की सुविधा के लिए सेतु का निर्माण किया जाता है। विचार और आचार की दूरी मिटाने का एक सेतु है संस्कार। एक विचार की दीर्घकाल तक पुनरावृत्ति करने पर वह संस्कार में बदल जाता है। संस्कार का निर्माण होने पर विचार और आचार की दूरी मिट जाती है।

भ्रष्टाचार : परिष्कार के बाहरी उपाय

क्रूरता और संवेदनशीलता

क्रूरता का प्रतिपक्ष है करुणा और संवेदनशीलता। करुणा और भ्रष्टाचार दो विपरीत दिशाएं हैं। भ्रष्टाचार का बीज है क्रूरता और सदाचार का बीज है करुणा। जिस व्यक्ति में करुणा का स्रोत प्रवाहित है वह

1. किसी दूसरे के प्रति अन्याय नहीं कर सकता।
2. दूसरे का शोषण नहीं कर सकता।
3. अन्यायपूर्ण व्यापार नहीं कर सकता।
4. दूसरे के स्वत्व पर अपना अधिकार नहीं जमा सकता।
5. दूसरे के अधिकारों का हनन नहीं कर सकता।
6. अप्रामाणिक तरीकों से धन का अर्जन नहीं कर सकता।
7. छलनापूर्ण व प्रवंचनापूर्वक व्यवहार नहीं कर सकता।

करुणा की चेतना को विकसित करने के लिए कुछ अवधारणाओं का बीजारोपण आवश्यक है

1. मानवीय एकता के प्रति सघन आस्था।
2. अपनी ओर से दूसरों को कष्ट न देने की मनोवृत्ति का विकास।
3. दूसरों की पीड़ा को अपनी संवेदना के साथ जोड़ने की मनोवृत्ति।

इन अवधारणाओं का विकास प्राकृतिक ढंग से होता है और अभ्यास के द्वारा भी इनका विकास किया जा सकता

www.terapanthinfo.com

है। विद्यार्थी जीवन से ही इनका अभ्यास कराया जाए तो उसके आधार पर भ्रष्टाचार को कम करने की दीर्घकालीन नीति बन सकती है।

नैतिकता के प्रशिक्षण का अभाव

नैतिकता का संबंध बौद्धिक विकास के साथ बहुत कम है। अधिक से अधिक हो तो पच्चीस प्रतिशत हो सकता है। उसका संबंध भावात्मक विकास के साथ है। संग्रह एक मौलिक मनोवृत्ति है। नैतिकता का पाठ पढ़ने और उसके लाभालाभ जानने से उसके प्रति आस्था पैदा नहीं हो सकती। आस्था के बिना उसका व्यवहार में प्रयोग नहीं हो सकता।

नैतिकता के प्रति आस्था उत्पन्न करने का सशक्त साधन है प्रशिक्षण।

उसका पहला अंग है नैतिकता के स्वरूप का परिज्ञान।

उसका दूसरा अंग है नैतिकता के साधक और बाधक तत्वों का सम्यक् ज्ञान उसका तीसरा अंग है बाधक तत्त्वों को बलहीन और साधक तत्त्वों को सबल बनाने की अभ्यास पद्धति।

भ्रष्टाचार पर चिंतन करते समय परिस्थिति और मनःस्थिति दोनों के परिवर्तन पर ध्यान देना आवश्यक है। परिस्थिति मनुष्य को प्रत्यक्षतः प्रभावित नहीं करती, वह मनःस्थिति को प्रभावित करती है। मनःस्थिति भावतंत्र को प्रभावित करती है। भावतंत्र बुद्धि और विवेक को प्रभावित करता है। भाव प्रबल बन जाते हैं, वे बुद्धि और विवेक पर आवरण डाल देते हैं। उस स्थिति में मनुष्य भ्रष्ट आचरण करता है।

हमारा ध्यान परिस्थिति और मनःस्थिति दोनों को बदलने की ओर केन्द्रित होना चाहिए। केवल परिस्थिति को बदलने से समस्या का स्थायी समाधान नहीं होता।

भ्रष्टाचार के मामले में विकासशील देश विकसित देशों की तुलना में आगे हैं। इसका निष्कर्ष हो सकता है कि जहाँ सम्पत्ति सुलभ है वहाँ भ्रष्टाचार की परिस्थिति मनःस्थिति को कम उत्तेजित करती है। जिन राष्ट्रों में संपत्ति दुर्लभ है, वहाँ भ्रष्टाचार की परिस्थिति मनःस्थिति को अधिक उत्तेजित करती है। सम्पन्न राष्ट्रों में भी भ्रष्टाचार होता है, पर वह अनुपाततः कम। **गरीबी की समस्या से ग्रस्त राष्ट्रों में भ्रष्टाचार की मात्रा अधिक मिलती है। इस सच्चाई को भी मुक्त भाव से स्वीकार करना चाहिए कि विकसित राष्ट्रों के नागरिक भ्रष्टाचार की समस्या के प्रति जागरूक हैं। विकासशील राष्ट्रों के नागरिक उसके प्रति उतने जागरूक नहीं हैं।**

विषय के उपसंहार में जो निष्कर्ष हमारे सामने आते हैं, उन पर हमारा ध्यान आकृष्ट होना चाहिए।

भ्रष्टाचार का उपादान कारण है लोभ और संग्रह की मौलिक मनोवृत्ति। उसका निमित्त कारण है अभाव अथवा अतिभाव-सुविधावादी और उपभोक्तावादी मनोवृत्ति।

जिस राष्ट्र के शीर्षस्थ व्यक्ति भ्रष्टाचार की समस्या के प्रति जागरूक होते हैं वहाँ भ्रष्टाचार को कम करने का रास्ता साफ हो जाता है और जिस राष्ट्र के शीर्षस्थ व्यक्ति भ्रष्टाचार को स्वाभाविक मान लेते हैं अथवा 'यह सर्वत्र होता है' इस तर्क से उसकी पुष्टि करते हैं वहाँ भ्रष्टाचार को पनपने का और अधिक मौका मिलता है। हमें इस सच्चाई को नहीं भूलना चाहिए कि अनैतिकता, भ्रष्टाचार और अपराध राष्ट्र की प्रतिष्ठा को ही कम नहीं करते, उसकी स्वतंत्रता पर भी प्रश्नचिह्न लगा देते हैं।

स्वस्थ समाज निर्माण के लिए

संकल्प करें

❐

मैं रिश्वत नहीं दूंगा।

मैं व्यवहार और व्यवसाय में प्रामाणिक रहूँगा।

आवाज़ उठाओ, भ्रष्टाचार मिटाओ

अणुव्रत आन्दोलन

www.terapanthinfo.com

जीविका और जीवन

आचार्य महाश्रमण

31 जुलाई 1990। रात्रिकालीन प्रवचन का विषय था 'जीविका और जीवन'। युवाचार्य महाप्रज्ञ एवं आचार्य तुलसी के प्रवचन को सुनकर एक दिगंबर भाई आया और बोला महाराजजी! मैंने आपका प्रवचन सुना। प्रवचन सुनने पर मुझे जापान की एक घटना याद आ गई। वह घटना इस प्रकार है सन् 1936 की बात है। जापान के एक शहर में एक साइकिल का कारखाना था। कारखाने के मालिक ने 7 भारतीय व्यक्तियों को भोजन के लिए निमंत्रित किया। भोजन के समय मिल मालिक एवं भारतीयों के बीच अनौपचारिक वार्तालाप शुरू हो गया।

भारतीय आपका इस कारखाने में कितना पैसा लगा है?

मिल मालिक इसमें तीन लाख येन (जापान का सिक्का) लगे हैं।

भारतीय इस कारखाने से कितनी आमदनी प्राप्त होती है?

मिल मालिक साठ येन प्रतिमाह की आमदनी है।

भारतीय अगर इतना पैसा आप बैंक में जमा कर दें तो आपकी आमदनी कितनी बढ़ सकती है।

मिल मालिक अरे भारतवासियो! आप ऐसा सोचते हैं इसीलिए गुलाम हैं। अगर मुझे तीन हजार येन की आमदनी प्राप्त हो तो भी मैं अभी जो जिन्दगी गुजार रहा हूं, इससे ज्यादा अच्छी जिन्दगी नहीं गुजार सकता। सुनिए, साठ योन में से तीस येन मैं सरकार को चन्दे में देता हूं। तीस येन बचते हैं। आपको मालूम होना चाहिए यहां एक मजदूर की मजदूरी प्रतिदिन आधा येन है। आधा येन में हमारा मजदूर खुशहाल है। मैं कितना खुशनसीब हूं कि मुझे प्रतिदिन एक येन की प्राप्ति होती है।

भारतीय आप इतने आदर्शवादी हैं तो फिर प्रतिदिन का एक येन अपने पास क्यों रखते हो, जबकि आपका मजदूर आधा येन ही प्राप्त करता है।

मिल मालिक आपका यह प्रश्न ठीक है। इसका उत्तर मेरे पास है। मैं यहां मजदूर बनकर काम करता हूं, आधा येन तो उसका लेता हूं। मजदूर तो समय पर अपना काम कर चले जाते हैं। मैं पीछे से हिसाब-किताब, देश-भाल का काम भी करता हूं। आधा येन उसका लेता हूं। जिस दिन काम नहीं करता, आधा येन सरकार के चन्दे में डाल देता हूं।

भारतीय यह जरूरी नहीं कि प्रतिमाह साठ येन की आमदनी ही हो। यह सरकारी नौकरी तो है नहीं, व्यापार है। इसमें नफा-नुकसान दोनों हो सकते हैं।

मिल मालिक नुकसान का कोई कारण नहीं है। अगर नफा ज्यादा होता है तो साइकिलें सस्ती कर देते हैं जिससे कि हमारे देश का निर्यात ज्यादा हो, देश को बाहर से ज्यादा पैसा मिले।

भारतीय आपने बीमा करवाया है क्या?

मिल मालिक हमें बीमा कराने की कोई जरूरत ही नहीं।

भारतीय यदि कारखाने में आग लग जाए तो आप क्या करेंगे?

मिल मालिक आग लगेगी तो कारखाना खत्म हो जाएगा। मेरी कार्यशीलता थोड़ी ही खत्म हो जाएगी। मैं दूसरी जगह काम करूंगा। आप लोग अपने बच्चों की बहुत चिन्ता करते हो। हम लोग बच्चों की चिन्ता नहीं करते। हम जो सरकार को चन्दा देते हैं, उससे हमारे बच्चों को ऐसी शिक्षा मिलेगी कि वे हमसे भी ज्यादा योग्य एवं कामयाब होंगे, ऐसा हमें विश्वास है।

इस घटना से जापानी जनता का देशप्रेम, स्वार्थ त्याग एवं परिग्रह के प्रति अति आसक्ति का अभाव प्रकट होता है। यही कारण है कि जापान द्रुतगति से विकास कर रहा है।

सामाजिक जीवन में अर्थ भी एक शक्ति है, यह यथार्थ प्रतीत हो रहा है। अर्थ के आधार पर सुविधा और प्रतिष्ठा की प्राप्ति भी संभव बनती है। अणुव्रत के संदर्भ में इतना ध्यातव्य है कि अर्थ अनर्थकारी न बने, उसका दुरुपयोग न हो तथा अर्थार्जन के साधन दूषित न हों।

अठारह पाप-क्रियाओं में पांचवीं क्रिया है परिग्रह। ममत्व भाव से किसी पदार्थ, प्राणी का परिग्रहण व संरक्षण परिग्रह है। स्थूल रूप से वस्तु आदि का ग्रहण न भी हो परन्तु यदि किसी के प्रति ममत्व व मूर्च्छा का भाव है तो भाव के स्तर पर तो ग्रहण हो ही जाता है।

www.terapanthinfo.com

परिग्रह के दो प्रकार हैं 1.अन्तरंग परिग्रह, 2. बाह्य परिग्रह। राग भाव अन्तरंग परिग्रह है। रागभाव से बाह्य पदार्थों का ग्रहण व संग्रह होता है, वह बाह्य परिग्रह है। प्रधानता अन्तरंग परिग्रह की ही है। उसके न होने पर बाह्य पदार्थ 'परिग्रह' संज्ञा को प्राप्त नहीं हो सकते। 'दसवेआलियं' का स्पष्ट उद्घोष है मुच्छा परिग्गहो वुत्तो मूर्च्छा को परिग्रह कहा गया है। उसका परित्याग अपरिग्रह है।

श्रीमद् भागवद् गीता में मूर्च्छा (आसक्ति) की शृंखला का सुंदर चित्रण किया गया है

ध्यायतो विषयान् पुंसः, सङ्गस्तेषूपजायते।

सङ्गात् सञ्जायते कामः, कामात् क्रोधोऽभिजायते।।

क्रोधाद् भवति सम्मोहः, सम्मोहात् स्मृतिविभ्रमः।

स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो, बुद्धिनाशात् प्रणश्यति।।

विषयों का चिंतन करने वाले पुरुष की उन विषयों में आसक्ति हो जाती है। आसक्ति से उन विषयों की कामना उत्पन्न होती है और कामनापूर्ति में विघ्न पड़ने से क्रोध उत्पन्न होता है।

क्रोध से अत्यन्त मूढ़ भाव उत्पन्न हो जाता है। मूढ़भाव से स्मृतिभ्रंश हो जाता है और स्मृतिभ्रंश हो जाने से बुद्धि ज्ञानशक्ति का नाश हो जाता है और बुद्धिनाश हो जाने से यह पुरुष अपनी स्थिति से गिर जाता है।

पाप बन्धन का मूल कारण अन्तरंग परिग्रह है, मूर्च्छा है। परन्तु मूर्च्छा को परिपुष्ट करने में बाह्य परिग्रह का भी योगदान मिल जाता है। अतः उसका भी समुचित परिवर्जन आवश्यक हो जाता है। दूसरी बात, जिसके मूर्च्छा नहीं है, वह बाह्य पदार्थों का अनपेक्षित संग्रह क्यों करेगा? 'अनासक्ति' शब्द की ओट में (हम तो भीतर से अनासक्त हैं, यह कहते हुए) पदार्थ-संग्रह और विषयभोग करने वाले व्यक्ति कभी-कभी आत्मछली बन जाते हैं। वस्तुतः अनासक्ति हो तो वह स्तुत्य और अभिनन्दनीय है।

संसार में अनेक प्रकार की शक्तियां हैं। उनमें अर्थ (धन) भी एक शक्ति है, इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता। अर्थ सुअर्थ रहे, वहां तक तो कोई चिन्ता नहीं, परन्तु जहां अर्थ अनर्थ करने वाला बन जाता है, तब विचारणीय स्थिति बन जाती है, इस संदर्भ में भिक्षु ग्रन्थरत्नाकर का निम्नांकित पद्य मननीय है

प्रेम घटारण सजना रो, दुरगत नो दातार।

अणचिन्त्या अनर्थ करे, धन ने पड़ो धिकार।।

जो स्वजनों के प्रेम को घटाता है, जीव की दुर्गति करता है, अचिन्तित अनर्थ पैदा करता है, ऐसे धन को धिक्कार।

अर्थार्जन में साधनशुद्धि का संकल्प भी अपरिग्रहीवृत्ति को पुष्ट करता है। दूसरों का शोषण कर पैसा इकट्ठा कर धनवान् बन जाना और नाम ख्याति के लिए कुछ दान देकर दानी कहलाना कौन-सा स्पृहणीय कार्य है? ऐसे दान को दूर से ही नमस्कार कर पहले अर्थार्जन की शुद्धि पर ध्यान दिया जाना चाहिए, धोखाधड़ी और शोषण का परित्याग किया जाना चाहिए।

व्यापारी ने नयी-नयी कपड़े की दुकान खोली। बार-बार उसके मन में एक ही विचार आता था कि दुकान का विकास कैसे हो? कमाई ज्यादा कैसे हो? येन-केन प्रकारेण वह धनाढ्यों की सूची में अपना नाम पढ़ने के लिए समुत्सुक था।

आवश्यकता की पूर्ति एक बात है और आकांक्षा की पूर्ति दूसरी बात है। आवश्यकता पूर्ति की मांग को असंगत नहीं कहा जा सकता। किन्तु महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति और वह भी अवैध तरीकों से समुचित कैसे हो सकती है?

रात्रि का प्रथम प्रहर। व्यापारी ने दुकान को बढ़ाया (बंद किया) और घर चला आया। भोजन करने के बाद शयनार्थ वह शैय्या पर पहुंच गया। वह लेटा, पर नींद नहीं आई। संकल्प-विकल्पों का सिलसिला चालू था। उन्हें विराम भी उसने कहां दिया था? न तो उसने शयन से पूर्व नमस्कार महामंत्र जैसे पवित्र मंत्र का स्मरण किया और न ही उसने आत्म निरीक्षण का प्रयोग किया। सत्साहित्य का स्वाध्याय भी नहीं किया। परिग्रह (कमाई) का संकल्प उसकी तृष्णाग्नि को प्रदीप्त कर रहा था। करवटें बदलते-बदलते आखिर उसे नींद अवश्य आई, पर गहरी और निश्चिन्तता भरी नींद का सुख उसे सुलभ नहीं हुआ। जिन विचारों की उधेड़बुन में वह सोया था, उन्हीं को अब वह चलचित्र के दृश्यों की भांति सपने के रूप में देखने लगा। वह देखता है कि प्रातःकाल का समय हो गया है। स्नान और प्रातराश कर मैं दुकान में पहुंच गया हूं। एक ग्रामीण आया है और वह मुझे कपड़ा देने के लिए कह रहा है। उस (ग्रामीण) ने पूछा सेठ साहिब! अमुक कपड़े का क्या दाम लेंगे?

वस्तुतः मूल्य था प्रति मीटर दो रुपया, परन्तु व्यापारी ने सोचा, अभी पैसा कमाने का अच्छा मौका है। यह ग्राहक तो भोला पंछी है। यह क्या समझेगा होशियारी को। दुकानदार ने कहा चार रुपया एक मीटर। दुगुना मूल्य बता दिया। ''सेठ साहिब! यह तो बहुत ज्यादा कीमत है, मैं कैसे चुका पाऊंगा?''

'अरे! तुम्हें लेना हो तो लो, सुबह का समय है, बकवास मत करो।'

बेचारा ग्रामीण मजदूर था। लड़के की शादी सामने थी। उसने कहा ठीक है सेठजी! पांच मीटर कपड़ा दे दीजिए। भीतर में हर्ष विभोर और बाहर से नाराजगी दिखाते हुए सेठ ने ग्रामीण द्वारा याचित कपड़ा हाथ में लिया और कुछ कम मापते हुए उसने उसे फाड़ा। (यह सब कुछ स्वप्न में हो रहा है।) ज्योंहि वस्त्र के फटने की 'चर-चर' की आवाज आई, व्यापारी की नींद टूट गई, आंखें खुल गईं। उसने सोचा अरे यह आवाज कहां से आई? इधर झांका, उधर झांका आखिर पता चला अपनी ही धोती अपने हाथ में आ गई और उसी को फाड़ डाला।

अपरिग्रह की पुष्टि के लिए आवश्यक है कि साधक शब्द, रूप, गन्ध, रस और स्पर्श इन इन्द्रिय-विषयों के प्रति होने वाले प्रियता और अप्रियता के भावों से बचें, वैसा प्रयास और भावना का अभ्यास करें।

न्यायपालिका पर नियंत्रण

क्या सरकार यह दावे के साथ कह सकती है कि 1993 से पहले न्यायपालिका में भ्रष्टाचार नहीं था? तब वह क्यों था और सरकार उसे दूर क्यों नहीं कर पाई, जबकि नियुक्ति पर उसका पूरा अधिकार था? अगर उस वक्त दूर नहीं कर पायी तो अब उसके पास न्यायपालिका को भ्रष्टाचार मुक्त करने के क्या उपाय हैं?

रंजीत वर्मा

ऊंची अदालतों में न्यायाधीशों की नियुक्ति कैसे हो, इसे लेकर विवाद एक बार फिर गहरा गया है। सूरज इंडिया ट्रस्ट ने याचिका दायर कर सुप्रीम कोर्ट से अपील की है कि वह 1993 के फैसले पर पुनर्विचार करें। सुप्रीम कोर्ट के एडवोकेट ऑन रेकॉर्ड एसोसिएशन बनाम भारत सरकार के मामले में 1993 में सुप्रीम कोर्ट के नौ न्यायाधीशों की पीठ ने जजों की नियुक्ति की चली आ रही प्रक्रिया को उलटते हुए यह व्यवस्था दी थी कि अब से हाई कोर्टों और सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीशों की नियुक्ति सुप्रीम कोर्ट के कॉलेजियम द्वारा की जाएगी और इस मामले में कार्यपालिका की कोई भूमिका नहीं होगी।

इस व्यवस्था के पहले हाई कोर्टों के न्यायाधीशों की नियुक्ति के लिए संबंधित हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश वरिष्ठ अधिवक्ताओं के नामों की सूची अपने राज्य के मुख्यमंत्री को भेजते थे और जब उनकी सहमति बन जाती थी तो उस सूची को केन्द्रीय कानून मंत्रालय के पास भेजा जाता था। फिर कानून मंत्री भारत के मुख्य न्यायाधीश से परामर्श कर और उनकी सहमति प्राप्त कर तयशुदा नामों को अंतिम मुहर के लिए राष्ट्रपति के समक्ष भेज देते थे।

नई चयन प्रक्रिया

सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश की नियुक्ति के लिए कार्यपालिका उन्हीं न्यायाधीशों के नाम पर विचार करती थी जो विभिन्न हाई कोर्टों में कार्यरत न्यायाधीशों में वरिष्ठ होते थे। अमूमन ये लोग हाई कोर्टों के मुख्य न्यायाधीश ही हुआ करते थे। यह व्यवस्था अब भी चल रही है। लेकिन 1993 के फैसले के बाद नामों पर विचार कर उसे अंतिम रूप देने का काम सुप्रीम कोर्ट के कॉलेजियम के पास आ गया है। इसे यूं भी कहा जा सकता है कि जहां पहले सब कुछ कार्यपालिका का काम सिर्फ अपनी सहमति देना होता था, वहीं अब सारी शक्ति कॉलेजियम के पास है और उसे कार्यपालिका से सहमति लेने की भी जरूरत नहीं है।

और भयानक दौर

1993 के फैसले की एक बड़ी वजह फैसले में यह बताई गई थी कि न्यायपालिका की स्वतंत्रता के लिए यह जरूरी है। शायद उस समय सुप्रीम कोर्ट को यह लगा हो कि राजनीतिक ताकतें उस पर हावी हो रही हैं। आपातकाल के अनुभव उसके पास थे, जब उसको कई बुरे फैसले देने पड़े थे। यहां तक कि मौलिक अधिकारों के हनन पर भी उसे चुप रहना पड़ा था। चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया की नियुक्ति का मामला भी एक बार काफी विवादास्पद हुआ था। देखें तो उन दिनों की तुलना में स्थिति आज ज्यादा भयानक है। भले ही देश में आपातकाल न लागू हो लेकिन जिस तरह मौलिक अधिकारों की ही नहीं, मानवाधिकारों तक की हत्या की जा रही है वह देश के किसी भी प्रबुद्ध नागरिक के लिए गहरी चिंता का विषय है।

देश के नागरिक को न्यायपालिका की स्वतंत्रता की जरूरत आज पहले से ज्यादा है, फिर भी कार्यपालिका की यह कोशिश कि जजों की नियुक्ति में उसका भी दखल हो, आखिर क्या दर्शाती है? जाहिर है कि वह न्यायपालिका द्वारा जब-तब अड़ंगा लगाये जाने से क्षुब्ध है। उसे पता है कि लोग उसकी मंशा भांप लेंगे। लेकिन उसे यह भी पता है कि लोगों के भांपने भर से कुछ नहीं होता। बस, बताने को ऐसी कोई वजह होनी चाहिए जो आम लोगों के गले उतर जाए। कार्यपालिका का कहना है कि न्यायपालिका

www.terapanthinfo.com

में जो भ्रष्टाचार है उसकी वजह नियुक्ति की कॉलेजियम वाली व्यवस्था ही है, क्योंकि इस प्रक्रिया में पारदर्शिता नहीं है, भारत के मुख्य न्यायाधीश किसी के प्रति जवाबदेह नहीं हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो यह 1993 से पहले की व्यवस्था फिर से लागू करने की कोशिश है। लेकिन क्या सरकार यह दावे के साथ कह सकती है कि 1993 से पहले न्यायपालिका में भ्रष्टाचार नहीं था? तब वह क्यों था और सरकार उसे दूर क्यों नहीं कर पाई, जबकि नियुक्ति पर उसका पूरा अधिकार था? अगर उस वक्त दूर नहीं कर पायी तो अब उसके पास न्यायपालिका को भ्रष्टाचार मुक्त करने के क्या उपाय हैं?

क्या सरकार समझती है कि जजों की नियुक्ति में उसके दखल मात्र से भ्रष्टाचार खत्म हो जाएगा? ए. राजा, कलमाड़ी और शरद पवार जैसे भ्रष्टतम नेताओं के साथ खुशी-खुशी चल रही सरकार में क्या इतनी नैतिक ताकत बची है कि वह भ्रष्टाचार का खात्मा कर सके? जो सरकार अपने अंदर के भ्रष्टाचार से लड़ पाने की इच्छाशक्ति नहीं दिखा पा रही है, वह न्यायपालिका में व्याप्त भ्रष्टाचार से कैसे लड़ सकती है? यही वजह है कि सरकार ऐसा खुल कर नहीं कह रही। वह बस यह चाह रही है कि लोग ऐसा सोचें। उसका कहना कुछ और है। वह तर्क गढ़ रही है कि 1993 के फैसले में संवैधानिक रूप से कुछ गड़बड़ी है। उसके इस तर्क को इस बात से भी बल मिल रहा है कि उस फैसले के लेखक भारत के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश जे.एस. वर्मा ने भी शंका प्रकट करते हुए कह दिया है कि फैसला सही नहीं है, अतः सर्वोच्च न्यायालय को चाहिए कि वह इस फैसले पर पुनर्विचार करें।

मंशा पर सवाल

एक तरह से देखा जाए तो यह तकनीकी मामला हो गया है। पारदर्शिता और स्वतंत्रता वाली बात पीछे छूट गई है। भ्रष्टाचारमुक्त न्याय व्यवस्था देने के संकल्प पर भी इस तरह पर्दा गिर गया है। ताकत में हिस्सेदारी की कहानी यहीं से शुरू होती है। नैतिकता यहां कमजोरी मानी जाती है। कोई उसे अपने पास नहीं फटकने देता।

सरकार पारदर्शिता की बात करती है लेकिन क्या उससे कभी जवाब देते बनेगा कि नेताओं को जो मंत्री पद दिये जाते हैं उसका आधार क्या होता है? फिर वह कौन-सा पारदर्शी तरीका अपनाएगी कि लोग जान जाएं कि न्यायाधीश के पद के लिए चुने जाने वाले व्यक्ति को आखिर किस आधार पर चुना जा रहा है? जाहिर है, सरकार की मंशा को लेकर किसी भ्रम की गुंजाइश नहीं है। लेकिन साथ में न्यायपालिका को भी अपनी चयन प्रक्रिया पारदर्शी बनानी होगी, ताकि उसके गलत चुनावों की आड़ लेकर सरकार को अपनी मंशा पूरी करने का मौका न मिले।

नवभारत टाइम्स दैनिक 11 अप्रैल, 2011 से 'साभार'

राष्ट्र चिन्तन

◆ भ्रष्टाचार के कारण आर्थिक विकास दर में तेजी का लाभ समाज के सभी तबकों को नहीं मिल पा रहा है। ई-गवर्नेंस और सर्विस क्वॉलिटी को बेहतर बनाकर ही भ्रष्टाचार को खत्म किया जा सकता है।

बेशक हमें आर्थिक विकास दर की रफ्तार को आगे बढ़ाना है, पर हमें देखना होगा कि भ्रष्टाचार पर अंकुश लगे। विकास की पहुंच सभी वर्गों और तबकों तक होना जरूरी है। इस लक्ष्य को पाने की राह में सबसे बड़ी बाधा भ्रष्टाचार है। आम आदमी तक आर्थिक विकास का लाभ पहुंचे, इसके लिए हमें प्रशासनिक ढांचे में जो भी खामियां हैं, उसमें सुधार करना होगा। अगर उसे मजबूत करना है तो इसके लिए कॉरपोरेट सेक्टर को आगे आना होगा। बेशक कई औद्योगिक संगठन इस मामले में बेहतरीन काम कर रहे हैं, पर इसे और बढ़ाने की जरूरत है।

प्रणव मुखर्जी, *वित्त मंत्री*

◆ भ्रष्ट जजों को राजनैतिक संरक्षण नहीं मिलना चाहिए। जजों को रिटायर होने के बाद नियुक्ति के लोभ में नहीं आना चाहिए। इससे भ्रष्टाचार हो सकता है, क्योंकि नियुक्ति देने वाला बदले में उनसे काम करवाना चाहेगा।

जजों के परिजन के नियमित रूप से पेश होने से जनता में विपरीत संदेश जाएगा जिससे न्यायपालिका जैसे सत्यनिष्ठ संस्थान की छवि खराब होगी। हमें लेक्चर नहीं देना चाहिए, उदाहरण पेश करने चाहिए। मैंने सामाजीकरण से दूरी बनाई है और यहां तक कि किसी गोल्फ क्लब की सदस्यता भी नहीं ली, क्योंकि वहां वकीलों, राजनेताओं आदि से घुलना-मिलना पड़ता है। जिससे लोगों में यह संदेश जा सकता है कि जज को प्रभावित किया जा सकता है।

एस.एच. कपाड़िया, *चीफ जस्टिस*

जनता के नेता अन्ना हजारे

डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

आमतौर पर जनता का नेता उन्हें माना जाता है, जो जनता के वोट से जीतकर ग्रामसभा से लेकर लोकसभा तक पहुंचते हैं। जनता इन्हें अपना बहुमूल्य मत देकर विभिन्न सभा, समिति एवं सदनों में भेजती है इस आशा एवं विश्वास के साथ कि वे जनता की सेवा करेंगे और अपने क्षेत्र के विकास में सहयोग देंगे। किन्तु दुर्भाग्य से वे जनता और क्षेत्र की सेवा करने के स्थान पर अपनी, अपने परिवारजनों एवं परिजनों की सेवा में निमग्न रहते हैं और शासन के खजाने को खाली करके अपना खजाना भरते हैं। अनेक अनैतिक कार्यों में लिप्त होकर भ्रष्टाचार को बढ़ावा देते हैं। कहते हैं जब-जब अधर्म एवं अन्याय की अति होती है तब तक कोई न कोई मसीहा सामने आता है।

ऐसा ही एक मसीहा 5 अप्रैल 2011 को जनता की आवाज बनकर देश की राजधानी दिल्ली में भ्रष्टाचार के खिलाफ शंखनाद कर आमरण अनशन पर बैठ गया। वह मसीहा कोई और नहीं महाराष्ट्र के राले गांव का निवासी अन्ना हजारे था। अन्ना ने भ्रष्टाचार के खिलाफ हुंकार भरी और जन लोकपाल बिल की मांग के साथ आमरण अनशन पर बैठ गये। देखते-देखते अन्ना के साथ कारवां जुड़ता गया। सही कहा गया है

''हम चले थे अकेले मंजिल की ओर,
लोग आते गये, कारवां बनता गया।।''

ऐसा ही कुछ देश के इस दूसरे गांधी के साथ हुआ। जनता की आवाज बने इस गांधी को देख मानों राजसिंहासन हिलने लगा हो। कांग्रेस सरकार ने अपनी कुर्सी हिलते देख आनन-फानन में मंत्रियों को सक्रिय किया। अन्ततः विजय जनता की हुई। जनता की आवाज बनकर अन्ना ने अपनी शर्तों पर सरकार को झुकाकर समझौता किया। इतिहास की पहली विरल घटना है कि जब सरकारी बिल में आम जनता के नुमाइन्दों को शामिल किया गया है अर्थात अब सरकार मनमानी नहीं कर सकती। जन लोकपाल बिल का मसौदा तैयार करने में जनता की शर्तों को शामिल करना होगा। इस बिल का प्रारूप तैयार करने में पांच सरकारी सदस्यों के साथ पांच जनता के सदस्यों को शामिल किया जाना जनता की जीत कही जा सकती है। अन्ना ने सरकार को अपनी शर्तों पर सरकार को झुकाकर यह दिखा दिया कि यदि जनता हुंकार भर ले तो हर असम्भव संभव हो जाता है। जरूरत है भ्रष्ट नेताओं एवं प्रतिनिधियों के समक्ष इस आवाज को बुलन्द करने की ''सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।'' जनता की इस विजय पर खुशियां मनाने की जरूरत नहीं है, जरूरत है इस विजय को आगे बढ़ाते हुए सही आजादी को चरितार्थ करने की। राष्ट्रपिता गांधी ने अहिंसा के बूते पर आजादी दिलायी थी और द्वितीय गांधी या छोटे गांधी अन्ना के नेतृत्व में सही आजादी लाने की जरूरत है। ऐसे आजाद देश की जरूरत है जहां अनैतिकता, भ्रष्टाचार एवं किसी भी प्रकार की बुराई के लिए कोई जगह न हो। इसके लिए देश की जनता को जागने की जरूरत है। कविवर निराला की पंक्ति याद आती है

''जागो फिर एक बार,
अरुण किरण तरुण पंख
खड़ी खोलती है द्वार
जागो फिर एक बार।।''

एक बार पुनः जागने की जरूरत है। अन्ना ने देश में जागरण का प्रभात ला दिया है। एक प्रश्न उठता है कि अन्ना की आवाज जनता की आवाज कैसे बन गयी। चल पड़े जिधर दो डग मग में, पड़ गये कोटि पग उसी ओर। अर्थात् अन्ना के दो पग जिधर चल पड़े उधर हुजूम निकल पड़ा। अन्ना राष्ट्र की आवाज कैसे बने? एक हुंकार पर लाखों लोग कैसे इकट्ठे हो गये? इस प्रश्न के उत्तर में उनके अतीत में झांकना होगा। उनके लम्बे समय तक निःस्वार्थ सेवा पर दृष्टिपात करना होगा।

समाजसेवी अन्ना हजारे का मूल नाम किशन बाबूराव हजारे था। उनका जन्म 15 जून 1938 को महाराष्ट्र के एक गांव में हुआ। वाहन चालक के रूप में 1963 में उन्होंने सेना ज्वाइन की थी। कहते हैं वर्ष 1962 में भारत चीन युद्ध के बाद भारत सरकार ने सेना में शामिल होने के लिए युवकों का आह्वान किया था। उसी आह्वान के अनुसार वे सेना में भर्ती हो गए और 1965 के भारत-पाक युद्ध के दौरान वह खेमकरन सेक्टर में तैनात थे, जहां पाकिस्तानी लड़ाकू विमानों ने भारतीय मोर्चे पर बमबारी की थी। उन्होंने अपने साथियों को शहीद होते हुए बहुत नजदीक से देखा था, इसी कारण संभवतः इन्होंने आजीवन अविवाहित रहने का संकल्प भी किया था। सेना के सेवाकाल में उन्होंने विवेकानन्द, महात्मा गांधी एवं आचार्य विनोबा भावे के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व का बखूबी अध्ययन किया। 1975 में स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेकर अपने गांव सलेगन सिद्धि लौट आये। थोड़े ही समय में उन्हें अपने गांव में सूखा, अभाव, गरीबी, अपराध और मद्यपान जैसी समस्याओं का सामना करना

www.terapanthinfo.com

पड़ा। उन्होंने अपने गांव के मंदिर में अपना आवास बनाकर अपने गांव को ही अपनी कर्मभूमि बनाया। उन्होंने पेय जल की समस्या से निजात पाने के लिए ग्रामीणों को नहर और बांध बनाकर जल संग्रह के लिए प्रेरित किया। गांव को साक्षर बनाने के लिए प्रयत्न किये। गांव में स्कूल खुलवाने, सड़क बनवाने, पेय जल की समस्या को समाहित करने, नशामुक्ति के लिए जन-जागरण आदि के उनके कार्यों से एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में उनकी पहचान होने लगी।

1990 में उन्होंने पुणे के नजदीक अलंदी में महाराष्ट्र के वन विभाग के भ्रष्टाचार के विरुद्ध भूख हड़ताल की। उनके इस आंदोलन ने शासन को हिलाकर रख दिया और भ्रष्टाचार में लिप्त अधिकारियों के खिलाफ कार्यवाही हुई। 1991 में उन्होंने भ्रष्टाचार विरोधी जन-आन्दोलन का गठन किया जिसका पूरे महाराष्ट्र में शीघ्र प्रसार हो गया। 1995 में महाराष्ट्र के तीन भ्रष्ट मंत्रियों शशिकांत सुतार, महादेव शिवंकर और बबन घोलाप के खिलाफ उन्होंने अनशन किया। सरकार झुकी और दो मंत्रियों को मंत्रिमंडल से बाहर होना पड़ा। 1997 में सूचना के अधिकार की मांग करते हुए उन्होंने एक अभियान चलाया। अभियान की सफलता के कारण ही महाराष्ट्र सरकार को इस बारे में एक कानून बनाना पड़ा। कालान्तर में सन 2005 में केन्द्र ने भी इस कानून की तर्ज पर सूचना का अधिकार कानून बनाया। 2003 में उन्होंने कांग्रेस और एन.सी.पी. सरकार के चार भ्रष्ट मंत्रियों सुरेश दादा जैन, नवाब मलिक, विजय कुमार गावित और पद्मसिंह पाटिल के खिलाफ भूख हड़ताल की। अन्ना के भूख हड़ताल से त्रस्त सरकार ने एक जांच आयोग का गठन किया। इस आयोग ने भ्रष्टाचार सिद्ध मंत्रियों के खिलाफ कार्यवाही की। अपने लोकोपयोगी कार्यों एवं जनता की सेवा के लिए उन्हें 'पद्मश्री' से भी नवाजा जा चुका है। इस प्रकार चालक से जनता की आवाज बनने तक की कर्मयोगी अन्ना हजारे की यात्रा निःस्वार्थ भाव से कार्य करने वाले पुरुषार्थी की यात्रा कही जायेगी।

इन्होंने भ्रष्टाचार को जड़ के साथ समाप्त करने के लिए जिस जन लोकपाल बिल की मांग की, उसकी विशेषताएं निम्न हैं

1. इस कानून के तहत केन्द्र में लोकपाल और राज्यों में लोकायुक्त हों।
2. यह संस्था चुनाव आयोग एवं सुप्रीम कोर्ट की तरह स्वतंत्र होगी।
3. किसी भी मुकदमे की जांच एक साल के भीतर होगी।
4. भ्रष्ट नेता, जज एवं अधिकारी को दो साल के भीतर जेल भेजा जायेगा।
5. अपराध साबित होने पर सरकारी धन की उगाही की जायेगी।
6. अधिकारी तय समय पर कार्य नहीं करते तो उन्हें दंडित किया जायेगा।
7. लोकपाल के सदस्यों का चयन जज, नागरिक और संवैधानिक संस्थाएं करेंगी, नेताओं का हस्तक्षेप नहीं होगा।
8. लोकपाल/लोकायुक्त के कार्य पारदर्शी होंगे। शिकायत आने पर 2 माह के भीतर जांचकर बर्खास्त किया जायेगा।
9. सीवीसी, विजिलैंस, सीबीआई के एण्टीकरप्शन विभाग का लोकपाल में विलय हो जायेगा।

यदि यह बिल कानून का रूप ले लेगा तो शायद किसी नेता, अधिकारी, कर्मचारी आदि की हिम्मत भ्रष्टाचार करने की नहीं होगी। तभी तो जनता ने आवाज दी अन्ना तुम संघर्ष करो, हम तुम्हारे साथ हैं। अंत में कहना चाहूंगा कि अणुव्रत महासमिति नई दिल्ली द्वारा भी एक वर्ष पूर्व भ्रष्टाचार विरोधी अभियान संचालित किया था और आज अन्ना हजारे के नेतृत्व में पूरा देश एक साथ भ्रष्टाचार के विरुद्ध मुहिम लेकर सड़कों पर है। कहते हैं हर प्रयास को मंजिल मिलती, यह सच है।

निदेशक : दूरस्थ शिक्षा निदेशालय
जैन विश्व भारती विश्व विद्यालय
लाडनूं (राजस्थान)

कतरन

इलेक्शन रिफॉर्म से ही हटेगा भ्रष्टाचार

लोकपाल बिल से 90 पर्सेंट करप्शन होगा खत्म : अन्ना

पूनम पाण्डे ॥ नई दिल्ली

लोकपाल बिल बनने के बाद भी भ्रष्टाचार का पूरा सफाया नहीं होगा। इसके लिए चुनाव प्रक्रिया में सुधार बेहद जरूरी है। अन्ना हजारे का भी मानना है कि जब तक राइट टू रिकॉल और राइट टू नो वोट का अधिकार नहीं मिल जाता, भ्रष्टाचार से पूरी मुक्ति नहीं मिल सकती। अन्ना ने कंपलसरी वोटिंग की भी हिमायत की।

अन्ना ने कहा कि लोकपाल बिल बनने के बाद भी भ्रष्टाचार पूरा खत्म नहीं होगा। भ्रष्टाचार के खिलाफ जंग खत्म नहीं हुई है और जारी रहेगी। उन्होंने कहा कि लोकपाल बिल से 90 पर्सेंट तक भ्रष्टाचार जरूर खत्म होगा। बचे 10 पर्सेंट के लिए राइट टू रिकॉल और राइट टू रिजेक्ट मिलना जरूरी है। सत्ता का विकेंद्रीकरण बेहद जरूरी है और हम इसके लिए लड़ाई लड़ेंगे। उन्होंने कहा कि भले ही यहां मुझे लोगों का इतना सपोर्ट मिला हो, लेकिन अगर मैं चुनाव लड़ूंगा तो मेरी जमानत जब्त हो जाएगी। वोटर 100 रुपये से लेकर शराब की एक बोतल या छोटे मोटे गिफ्ट लेकर वोटिंग करते हैं। वोटर को अभी अपने वोट की कीमत पता नहीं है। इसलिए चुनाव लड़ना इतना आसान नहीं है। इसके अलावा चुनाव लड़ने के लिए कम से कम 6-7 करोड़ रुपये की जरूरत है। अन्ना ने कहा कि ईवीएम में 'कोई भी उम्मीदवार पसंद नहीं' का ऑप्शन भी होना चाहिए। अगर किसी इलाके में ज्यादातर वोट 'कोई भी पसंद नहीं' पर पड़ते हैं, तो वहां चुनाव रद्द कर दोबारा चुनाव होना चाहिए। फिर करो दूसरा इलेक्शन। फिर करते रहो पैसों का बंटवारा। ऐसा होगा, तो अपने आप दिमाग ठिकाने आ जाएगा।

कंपलसरी वोटिंग की हिमायत करते हुए अन्ना ने कहा कि हम चाहते हैं कि जो वोटिंग न करें, उनकी पांच साल के लिए सरकारी फैसिलिटी बंद कर देनी चाहिए। सबको वोट देना जरूरी कर देना चाहिए।

रिप्रेजेंटेशन ऑफ पीपल्स एक्ट के रूल 49 (ओ) के तहत अगर वोटर को अपने इलाके से चुनाव लड़ रहे उम्मीदवार में से कोई भी पसंद नहीं है, तो वह पोलिंग बूथ पर जाकर वहां मौजूद अधिकारी से एक फॉर्म लेकर उस पर या फिर रजिस्टर पर यह दर्ज करा सकता है कि उसे इनमें से किसी भी उम्मीदवार को वोट नहीं देना है। लेकिन यह महज औपचारिकता है और इसका चुनाव पर कोई असर नहीं पड़ता। असोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स, यूथ फॉर इक्वैलिटी सहित कई संगठन इस संबंध में अभियान भी चला रहे हैं। दिल्ली विधानसभा के चुनाव में कई मतदाताओं ने इस अधिकार का इस्तेमाल भी किया था। एक सवाल के जवाब में अन्ना ने कहा कि कमिटी में सिविल सोसाइटी के जितने सदस्य हैं उनकी संपत्ति और लाइबिलिटीज के बारे में पब्लिक को बताने के लिए हम कमिटी में बात करेंगे। मेरा मानना है कि इसका खुलासा करना चाहिए किस बात से डरना।

जंग अभी जारी है...

- सत्ता का विकेंद्रीकरण बेहद जरूरी, इसके लिए लड़ाई लड़ेंगे
- राइट टू रिकॉल व राइट टू नो वोट का अधिकार भी जरूरी
- यह भी कहा कि सबको वोट देना जरूरी कर देना चाहिए

दैनिक हिन्दुस्तान, 11 अप्रैल 2011 से 'साभार'

www.terapanthinfo.com

भ्रष्टाचार की नींव मन में

लक्ष्मी रानी लाल

मनुष्य का मन भी अजीब है, जो वस्तु उसके पास है उसमें वह सुख नहीं मानता परंतु जो वस्तु उसके पास नहीं है उसे पाने की वह उत्कट इच्छा रखता है। मन अप्राप्त वस्तुओं की ही इच्छा करता है, वह कभी तृप्त नहीं होता। मन की इच्छा पूरी हो जाए यह संभव नहीं क्योंकि दूसरी इच्छा जन्म ले लेती है। महावीर के अनुसार, ''मनुष्य का मन कभी न भरने वाली एक चलनी है।''

हमारा मन ही हमें भ्रष्टाचार की राह दिखाता है। क्योंकि इच्छाओं को पूर्ण करने के हमारे पास उतने साधन नहीं होते। अपनी आय से हम परिवार का भरण-पोषण तथा अत्यावश्यक आवश्यकताओं की ही पूर्ति कर सकते हैं। इस भोगवादी संस्कृति में लोग सुख-सुविधाओं तथा दिखावे की वस्तुओं को खरीदने में अपनी शान समझते हैं। पत्नी तथा बच्चों की मांग भी सुरसा की तरह मुँह फैलाती जाती हैं। अनैतिक तथा अवैध ढंग से पैसे कमाने का प्रलोभन उसे अपनी ओर आकर्षित करता है। फिर वह भ्रष्टाचार की राह पकड़ लेता है और इसके दलदल में फंसता चला जाता है।

एक दिन जब उसकी काली करतूतों का पर्दाफाश होता है और हाथों में हथकड़ी लगती है तो वह अकेला ही जेल जाता है। भ्रष्टाचार के दलदल में ढकेलने में सहायक लोग उसके साथ नहीं होते। भ्रष्टाचार की नींव हमारे मन में ही पड़ती है।

इसलिए मन की इच्छाओं का दमन करने में ही मुक्ति है। योग में कहा है ''संतोषादनुत्तम सुख लाभः'' अर्थात् संतोष के द्वारा उत्तम से उत्तम सुख प्राप्त होता है। अप्राप्त वस्तु की इच्छा का नाम असंतोष है। संतोष तो सुख और आनंद की प्राप्ति की कुंजी है। टॉलस्टाय ने भी कहा है ''अच्छे जीवन का पहला सूत्र है आत्मनियंत्रण।'' इच्छाओं का परिसीमन होने से आचरण में शुद्धता होती है। शुद्ध आचरण हमें अनैतिक कार्यों से दूर रखेगा।

भगवान महावीर ने कहा ''इच्छा कम नहीं है, परिग्रह और संग्रह ज्यादा है। इस अवस्था में न तप हो सकता है, न संयम हो सकता है। इच्छा, तप, नियम और संयम सबको समाप्त कर देती है। अच्छा करने से हम इस सांसारिक मायाजाल में फंसते हैं।

मन जिस कार्य में आसक्त होगा उसी से दुःख उत्पन्न होगा। मन में नाम-स्मरण और ध्यान करना चाहिए। मनुष्य कर्म-फल की इच्छा करता है तो उसे थोड़ा मिलता है तथा इच्छा न करने पर विशेष प्राप्त होता है। इसलिए हमें अपने चित्त पर पहरा रखना चाहिए इससे इच्छा-त्याग में सहायता मिलती है।

इच्छा-मात्र का त्याग ही मुक्ति है और इच्छा की वशता ही बंधन है। इसीलिए गीता में मनोगत-कामना का त्याग करने को कहा गया है। सदा सात्विक आहार, साधु-संगति, वृद्धों की सेवा इत्यादि इच्छा-त्याग में सहायक है।

भ्रष्टाचार से तभी बचा जा सकता है जब इच्छाओं का परिसीमन हो तथा आत्म-संयम कर सकें। भगवान महावीर ने कहा ''हम अपना संयम स्वयं करें।'' जब तक मन की कामना अतृप्त रहती है तब तक वह शांत नहीं होता और अशांत मन में न तो सुख का अनुभव होता है और न आनंद का। भगवान बुद्ध ने भी दुःख का मूल कारण, इच्छा को बताया है। आत्म-नियंत्रण और संयम के द्वारा इच्छाओं का दमन संभव है। शुद्ध आचरण कभी भ्रष्टाचार को पनपने ही नहीं देगा। भ्रष्टाचार से दूर रहने के लिए हमें अपने मन की शुद्धता पर ध्यान देना आवश्यक है। शुभ इच्छाओं का अनुसरण, अशुभ इच्छाओं का नाशक होता है।

24, एम.आई.जी., आदित्यपुर-02,
जमशेदपुर- 831013

भ्रष्ट लोगों को मिटाने से भ्रष्टाचार समाप्त नहीं होगा।
भ्रष्टाचार समाप्त होगा भ्रष्ट लोगों को भला बनाने से।

● आचार्य तुलसी ●

संप्रसारक :

एम.जी. सरावगी फाउंडेशन

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-**कोलकाता**-700019

● दूरभाष : 22809695

३३ साल से भ्रष्टाचार के खिलाफ जंग

भ्रष्टाचार को लेकर अन्ना हजारे को मिली कामयाबी पर जहां आज पूरा देश गर्व महसूस कर रहा है, वहीं फरीदाबाद जिले में भी राधा सचदेवा ऐसी शख्सियत हैं, जिन्होंने अपनी युवावस्था में भ्रष्टाचार और अपराध के खिलाफ जो मुहिम छेड़ी, वह आज उनके 70 वर्षीय होने के बाद भी जारी है।

अखिल सक्सेना

भ्रष्टाचार को लेकर अन्ना हजारे को मिली कामयाबी पर जहां आज पूरा देश गर्व महसूस कर रहा है, वहीं फरीदाबाद जिले में भी राधा सचदेवा ऐसी शख्सियत हैं, जिन्होंने अपनी युवावस्था में भ्रष्टाचार और अपराध के खिलाफ जो मुहिम छेड़ी, वह आज उनके 70 वर्षीय होने के बाद भी जारी है। यह अलग बात है कि भ्रष्टाचार के चलते अपनी मुहिम पूरा न हो पाने का उन्हें मलाल है। राधा सचदेवा ने साल 1978 में फरीदाबाद में बढ़ते अपराध को लेकर दिल्ली में प्रधानमंत्री आवास के सामने बैठ कर अनशन शुरू किया था। उस समय उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। जेल में भी वह 9 दिन तक अनशन पर रहीं। राधा के आंदोलन की खबर को एनबीटी और टाइम्स ऑफ इंडिया ने प्रमुखता से छापा था। वह आज भी साल 1978 और इससे पूर्व के एनबीटी और टीओआई के संस्करण को संभाल कर रखे हैं। आज लोग जहां रक्तदान करने में हिचकिचाते हैं, वहीं राधा सचदेवा साल 1983 में अपना शरीर दान कर चुकी हैं।

अपराध के खिलाफ बिगुल

नीलम बाटा रोड पर दीनानाथ पब्लिक स्कूल का संचालन कर रही मिस राधा सचदेवा की जिंदगी में कई उतार-चढ़ाव आए और उन्होंने अपना पूरा जीवन दूसरों की सेवा में लगा दिया। राधा ने बताया कि साल 1968 में उन्होंने अपराध के खिलफ आवाज बुलंद करना शुरू किया। उस समय सड़कों पर महिलाओं का निकलना बिल्कुल भी सुरक्षित नहीं था। चौराहों पर जुओं की फड़े लगी रहती थीं। उनका आंदोलन अक्टूबर 1978 में काफी रंग लाया। वह मई में दिल्ली में प्रधानमंत्री आवास के सामने अनशन पर बैठी थीं। गिरफ्तारी के बाद भी वह 9 दिनों तक जेल में अनशन पर रहीं। प्रधानमंत्री ऑफिस से मांगें माने जाने के बाद ही उन्होंने अपना अनशन तोड़ा था।

शरीर दान

राधा सचदेवा ने दिल्ली स्थित एम्स को साल 1983 में अपना शरीर दान कर दिया था। समय काफी होने के बाद अब वह जानकारी जुटा रही हैं कि उस समय का रिकॉर्ड एम्स के पास है या नहीं या फिर अगर कुछ फेरबदल हुआ हो, तो दोबारा से कागजी कार्रवाई की जाए।

रक्तदान कर बचाई कई जान

युवावस्था के समय की बातों को बताते हुए राधा काफी उत्साहित हो जाती हैं और उनकी आंखों से आंसू बहने लगते हैं। वह कहती हैं कि पुराना समय लौट कर कभी नहीं आता। आज लोग एक-दूसरे का लहू बहाने में लगे हैं, जबकि आज जरूरत है जान बचाने के लिए लहू दान में दिया जाए। उन्होंने बताया कि उनका ब्लड ग्रुप ओ नेगेटिव है। उन्होंने कई बार अपना रक्त दान किया है। अक्सर उनके ग्रुप का ब्लड न मिलने पर डॉक्टर उन्हें ब्लड डोनेट करने के लिए बुलाते थे। दिल्ली में रक्तदान हेतु उन्हें कई बार बुलाया गया।

कतरन

'लोकपाल बिल से बाहर रहेगी हायर जुडिशरी'

बेबाक हजारे...

नवभारत टाइम्स, 9 अप्रैल 2011 से 'साभार'

www.terapanthinfo.com

सरकारी विधेयक का अधिकार क्षेत्र केवल राजनेताओं तक सीमित है। सरकारी अधिकारियों के लिए सतर्कता आयुक्त जैसी संस्थाएं हैं, जो अब तक निष्प्रभावी साबित हुई हैं। न्यायपालिका के भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए कोई संस्था नहीं है। जनता के लिए राजनेता के भ्रष्टाचार, सरकारी कारकूनों की रिश्वतखोरी और न्यायाधीशों की बेईमानी में कोई अंतर नहीं है। इस पृष्ठभूमि में जन लोकपाल विधेयक के उपबंध सरकारी विधेयक की तुलना में ज्यादा प्रभावी और प्रासंगिक हैं।

सरकारी बनाम जनता का लोकपाल

हरबंश दीक्षित

राम मनोहर लोहिया ने कहा था कि जिंदा कौमें पांच साल इंतजार नहीं करतीं, लेकिन इस देश में लोकपाल के लिए 42 साल से इंतजार चल रहा है। किसी भी कौम के जीवनकाल में 42 साल एक लंबा वक्त होता है। जिस कानून को आजादी के वक्त ही अस्तित्व में आ जाना चाहिए था, उसको लेकर वर्ष 1969 से लगातार लुका-छिपी का खेल चल रहा है। अब जाकर उसके लिए ठोस हलचल हुई है। स्वतंत्र भारत में पहली बार किसी कानून के लिए इतना बड़ा जन समुदाय उठ खड़ा हुआ है। अब बहस इस बात पर नहीं कि लोकपाल कब स्थापित हो। अब तो केवल यह तय करना बाकी है कि लोकपाल कैसा हो। वह सरकारी विधेयक में प्रस्तावित एक कमजोर संस्था हो या फिर जन लोकपाल विधेयक द्वारा प्रस्तावित एक सर्वशक्तिमान निकाय हो।

ऊंचे पदों पर भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए प्रशासनिक सुधार आयोग की ओर से वर्ष 1967 में लोकपाल की स्थापना का सुझाव आया था। 1969 में उसे लोकसभा ने पारित भी कर दिया, लेकिन उसके बाद से अब तक वह मृग मरीचिका ही साबित हुआ है। इस दौरान छोटी-बड़ी कुल चौदह कोशिशें की गईं। आठ बार सरकारी विधेयक के रूप में और छह बार गैर-सरकारी विधेयक के रूप में इसे स्थापित करने की कोशिश की गई, लेकिन किसी न किसी बहाने उसमें रोड़ा अटकाया जाता रहा है। शुरू में प्रधानमंत्री को इसके दायरे में रखे जाने को लेकर मतभेद थे, किन्तु ऊंचे पदों पर आसीन लोगों से जुड़े भ्रष्टाचार के प्रकरण इस प्रकार उजागर हो चुके हैं और उनका आभामंडल इतना क्षीण हो चुका है कि सार्वजनिक जीवन का कोई भी पदधारक अब अपने को जांच के दायरे से अलग रखने की सिफारिश करने का साहस नहीं कर सकता।

लोकपाल की स्थापना के लिए मशहूर समाजसेवी व गांधीवादी नेता अन्ना हजारे की मौजूदा पहल ऐसे समय पर हुई है, जब देश की जनता भ्रष्टाचार से आजिज आ चुकी है। मामला केवल कॉमनवेल्थ खेलों या 2-जी स्पेक्ट्रम घोटालों तक ही सीमित नहीं है। जहां कहीं भी पाखंड का सुरक्षा कवच थोड़ा-सा दरकता है, उसके नीचे भ्रष्टाचार का काला समंदर नजर आने लगता है। अदालतों से जुड़े भ्रष्टाचार के प्रकरणों के उजागर होने के बाद अब जनता के धैर्य का बांध टूटने लगा है। अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य ने भी इस मुहिम को मजबूती दी है। मिस्र जैसे देशों में भ्रष्टाचार के मुद्दे पर मुबारक सरकार को कुछ समय पहले ही गद्दी छोड़नी पड़ी है। ऐसे समय में लोकपाल पर होने वाली बहस कई मामलों में बिल्कुल अलग है। अब यह बहस सिर्फ कानून बनाने तक नहीं सीमित है, बल्कि उस कानून के स्वरूप को लेकर है। लोग सरकारी विधेयक को नाकाफी मानकर उसका विरोध कर रहे हैं। उसकी जगह जन लोकपाल विधेयक का एक वैकल्पिक प्रारूप तैयार किया गया है।

सरकारी विधेयक का अधिकार क्षेत्र केवल राजनेताओं तक सीमित है। सरकारी अधिकारियों के लिए सतर्कता आयुक्त जैसी संस्थाएं हैं, जो अब तक निष्प्रभावी साबित हुई हैं। न्यायपालिका के भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए कोई संस्था नहीं है। जनता के लिए राजनेता के भ्रष्टाचार, सरकारी कारकूनों की रिश्वतखोरी और न्यायाधीशों की बेईमानी में कोई अंतर

नहीं है। इस पृष्ठभूमि में जन लोकपाल विधेयक के उपबंध सरकारी विधेयक की तुलना में ज्यादा प्रभावी और प्रासंगिक हैं।

लोकपाल की गठन प्रक्रिया और उसके काम करने के तरीके के मामले में सरकारी और जन लोकपाल विधेयक में बहुत बड़ा फर्क है। अब तक के सभी विधेयकों में लोकपाल के लिए जरूरी था कि वह सुप्रीम कोर्ट का न्यायाधीश रह चुका व्यक्ति हो। उसकी नियुक्ति की प्रक्रिया भी संतोषजनक नहीं थी। उसकी नियुक्ति कुछ मंत्रियों, दोनों सदनों के अध्यक्षों और नेता प्रतिपक्ष की एक समिति की अनुशंसा पर की जानी थी।

लोकपाल के चयन को केवल सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीशों तक सीमित कर देने के कई नुकसान हैं। इससे उस पद के लिए उपयुक्त व्यक्ति की तलाश का दायरा बहुत सीमित हो जाता है। लोकपाल जैसे पदधारक के लिए सत्यनिष्ठा का गुण सबसे अहम है। सत्यनिष्ठ व्यक्तियों के मामले में न्यायपालिका या किसी भी एक संस्था का एकाधिकार नहीं हो सकता, इसलिए उसके लिए योग्य पात्र की तलाश करते समय पूरे समाज के अच्छे लोगों को मौका मिलना चाहिए। लोकपाल का काम मुख्य रूप से आरोपों की जांच करना होगा, इस काम में न्यायिक अनुभव से कोई खास मदद नहीं मिलती। इसलिए जन लोकपाल विधेयक के वे उपबंध स्वागत योग्य हैं, जिनमें लोकपाल की नियुक्ति की प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने की बात की गई है और समाज में अच्छी साख रखने वाले किसी व्यक्ति को उस पद का पात्र माना गया है।

दरअसल लोकपाल की मौजूदा मुहिम सरकारी नाकामी के खिलाफ एक जन प्रतिक्रिया है। लोग सरकारी हीला-हवाली से ऊब चुके हैं। जनता अब ऊंचे पदों पर बैठे लोगों की पैंतरेबाजी से भी धीरे-धीरे वाकिफ होती जा रही है। जन विधेयक के माध्यम से ऐसी संस्था की परिकल्पना की गई है, जो एक स्वतंत्र तथा अलग निकाय हो। उसके पास जांच करने का व्यापक अधिकार हो और अपनी मर्जी से भ्रष्टाचार की जांच वाले प्रकरण चुनने का अधिकार हो। उसका अपना पूर्णकालिक स्टाफ हो, उसकी जांच के निष्कर्ष और उसकी संस्तुति सरकार पर बाध्यकारी हो। यदि लोकपाल भ्रष्टाचार के आरोपों को सही पाता है, तो दोषी व्यक्ति को बर्खास्त कर दिया जाए। इसके अलावा व्हिसल ब्लोअर यानी भ्रष्टाचार के विरुद्ध आंतरिक रूप से शंखनाद करने वाले लोगों को सुरक्षा देने की जिम्मेदारी भी लोकपाल की ही हो।

अन्ना हजारे की मुहिम को मिले जन समर्थन से एक बात साफ हो गई है कि जनता भ्रष्टाचार से त्रस्त हो चुकी है। सरकार की नीयत पर उसका भरोसा नहीं रहा। अन्ना हजारे जैसे लोगों के बेदाग लोकजीवन से उसे उनकी बातों पर भरोसा है, लेकिन यदि जनता यह सोचती है कि लोकपाल के पद पर बैठ जाने मात्र से ही कोई व्यक्ति ऐसा देवतुल्य हो जाएगा कि वह कभी कोई गलती नहीं करेगा, तो वह कहीं न कहीं गलती कर रही है। इस पर ठंडे दिमाग से विचार करने की जरूरत है। व्यावहारिक धरातल पर हर संभावना का आकलन करने की आवश्यकता है, ताकि दोषों को कम किया जा सके।

हिन्दुस्तान दैनिक 7 अप्रैल 2011 से 'साभार'

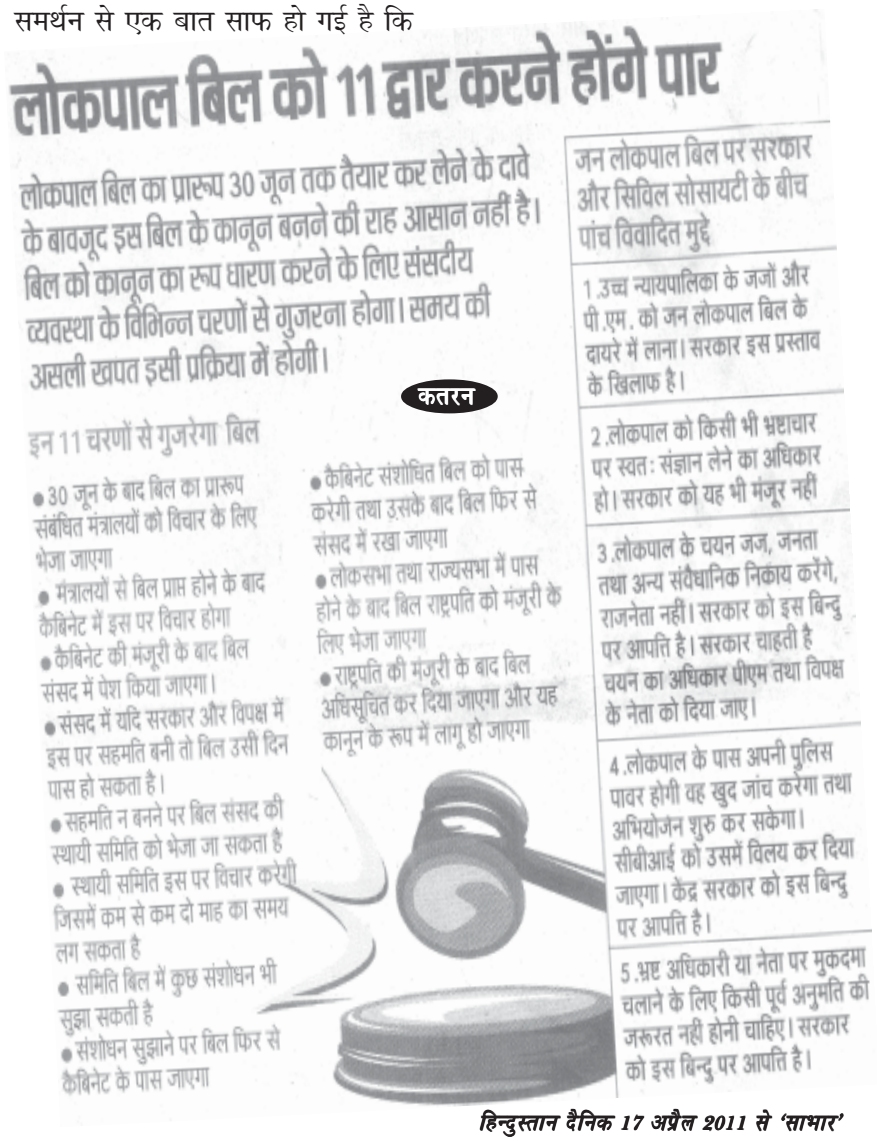

लोकपाल बिल को 11 द्वार करने होंगे पार

लोकपाल बिल का प्रारूप 30 जून तक तैयार कर लेने के दावे के बावजूद इस बिल के कानून बनने की राह आसान नहीं है। बिल को कानून का रूप धारण करने के लिए संसदीय व्यवस्था के विभिन्न चरणों से गुजरना होगा। समय की असली खपत इसी प्रक्रिया में होगी।

कतरन

इन 11 चरणों से गुजरेगा बिल

- 30 जून के बाद बिल का प्रारूप संबंधित मंत्रालयों को विचार के लिए भेजा जाएगा
- मंत्रालयों से बिल प्राप्त होने के बाद कैबिनेट में इस पर विचार होगा
- कैबिनेट की मंजूरी के बाद बिल संसद में पेश किया जाएगा।
- संसद में यदि सरकार और विपक्ष में इस पर सहमति बनी तो बिल उसी दिन पास हो सकता है।
- सहमति न बनने पर बिल संसद की स्थायी समिति को भेजा जा सकता है
- स्थायी समिति इस पर विचार करेगी जिसमें कम से कम दो माह का समय लग सकता है
- समिति बिल में कुछ संशोधन भी सुझा सकती है
- संशोधन सुझाने पर बिल फिर से कैबिनेट के पास जाएगा
- कैबिनेट संशोधित बिल को पास करेगी तथा उसके बाद बिल फिर से संसद में रखा जाएगा
- लोकसभा तथा राज्यसभा में पास होने के बाद बिल राष्ट्रपति को मंजूरी के लिए भेजा जाएगा
- राष्ट्रपति की मंजूरी के बाद बिल अधिसूचित कर दिया जाएगा और यह कानून के रूप में लागू हो जाएगा

जन लोकपाल बिल पर सरकार और सिविल सोसायटी के बीच पांच विवादित मुद्दे

1. उच्च न्यायपालिका के जजों और पी.एम. को जन लोकपाल बिल के दायरे में लाना। सरकार इस प्रस्ताव के खिलाफ है।

2. लोकपाल को किसी भी भ्रष्टाचार पर स्वतः संज्ञान लेने का अधिकार हो। सरकार को यह भी मंजूर नहीं

3. लोकपाल के चयन जज, जनता तथा अन्य संवैधानिक निकाय करेंगे, राजनेता नहीं। सरकार को इस बिन्दु पर आपति है। सरकार चाहती है चयन का अधिकार पीएम तथा विपक्ष के नेता को दिया जाए।

4. लोकपाल के पास अपनी पुलिस पावर होगी वह खुद जांच करेगा तथा अभियोजन शुरु कर सकेगा। सीबीआई को उसमें विलय कर दिया जाएगा। केंद्र सरकार को इस बिन्दु पर आपति है।

5. भ्रष्ट अधिकारी या नेता पर मुकदमा चलाने के लिए किसी पूर्व अनुमति की जरूरत नहीं होनी चाहिए। सरकार को इस बिन्दु पर आपति है।

हिन्दुस्तान दैनिक 17 अप्रैल 2011 से 'साभार'

जनता को हिकारत से मत देखिए

सीताराम येचुरी

हमारी संवैधानिक व्यवस्था के अनुसार, संसद और सिर्फ संसद ही कानून बना सकती है। हम एक ऐसा लोकपाल कानून बनाए जाने के लिए प्रतिबद्ध हैं, जो कारगर भी हो तथा पारदर्शी भी।

अन्ना हजारे के आमरण अनशन और लोकपाल विधेयक के मुद्दे पर यूपीए सरकार कम से कम फिलहाल तो गतिरोध को तोड़ने में सफल रही है। विधेयक तैयार करने के लिए गठित की गई संयुक्त समिति की अधिसूचना जारी कर दी गयी है। यह प्रक्रिया आगे चाहे जो भी रूप ले, पर इतना तो तय है कि इस समय, जब एक के बाद एक महाघोटाले बेनकाब होकर सामने आए हैं, तब एक ऐसे कानून की जरूरत और शिद्दत से महसूस की जा रही है, जो जवाबदेही के सिद्धांत को सार्थक बनाए।

लोकपाल की अवधारणा का प्रस्ताव सबसे पहले 1996 में एक प्रशासनिक सुधार कमेटी ने किया था, जिसके अध्यक्ष मोरारजी देसाई थे। इसके साथ ही राज्यों के लिए लोकायुक्त की संस्था का भी प्रस्ताव था। सत्ताधारी हलकों के प्रतिरोध के चलते यह मामला इतने अर्से से लटक ही रहा था। वामपंथी पार्टियों ने 1996 में देवगौड़ा सरकार के लिए अपने समर्थन की शर्तों में लोकपाल कानून बनाए जाने के मुद्दे को भी शामिल कराया था। फिर वामपंथी दलों के ही आग्रह पर 2004 में बनी यूपीए की सरकार के साझा न्यूनतम कार्यक्रम में यह आश्वासन दिया गया था कि 'लोकपाल विधेयक को कानून का रूप दिया जाएगा।' आगे चलकर इसके लिए एक विधेयक संसद में पेश भी किया गया और उसे स्थायी संसदीय समिति को भेज दिया गया। स्थायी समिति की सिफारिशों के साथ यह विधेयक अब संसद के सामने है। यह विधेयक भी काफी नहीं है और उसमें बड़े सुधारों की जरूरत है। उधर सामाजिक कार्यकर्ताओं की एक मंडली ने एक जन-लोकपाल विधेयक तैयार किया है, जिसे स्वीकार किए जाने की मांग को लेकर ही अन्ना हजारे ने जंतर-मंतर पर अपना आमरण अनशन छेड़ा था। इस पूरे घटनाक्रम में कुछ और महत्वपूर्ण मुद्दे भी उठ गए हैं, जिन पर भी गंभीरतापूर्वक ध्यान दिए जाने के जरूरत है।

अन्ना हजारे से जब यह पूछा गया कि देश की कानून बनाने की प्रक्रिया में शामिल होने के लिए चुनाव के जरिये आप संसद में क्यों नहीं जाते हैं, तो उनका जवाब काफी विचित्र था। उन्होंने कहा कि वह कभी चुनाव नहीं लड़ेंगे, क्योंकि वह चुनाव लड़े, तो पक्का है कि हार जाएगें, बल्कि उनकी तो जमानत ही जब्त हो जाएगी? क्योंकि, आम वोटर जागरूक नहीं है। कोई उम्मीदवार सौ रुपये या दारू की एक बोतल या एक साड़ी में ही उससे वोट डलवा सकता है। उसे अपने वोट के मूल्य का पता ही नहीं है। मतदाता और संसदीय जनतंत्र के प्रति ऐसी हिकारत वाकई बहुत चिंताजनक है।

जब भी भारत के धर्मनिरपेक्ष जनतांत्रिक स्वरूप के लिए कोई चुनौती आई है, इसी साधारण मतदाता ने एक आधुनिक भारत की कल्पना की हिफाजत की है और उसका झंडा बुलंद रखा है। इसी मतदाता ने इंदिरा गांधी के आपातकाल को शिकस्त दी थी और इतने जोशो-खरोश से देश में जनतंत्र की पुनर्स्थापना की थी कि अब वह भारतीय यथार्थ का अविभाज्य हिस्सा बन गया है। वास्तव में, यही जनतंत्र इस तरह की सामाजिक सक्रियता तथा भूख-हड़तालों के लिए गुंजाइश भी बनाता है।

जब देश में धर्मनिरपेक्षता खतरे में नजर आ रही थी, तब इसी मतदाता ने अपने विवेक से सबको हैरान कर दिया था और शाइनिंग इंडिया के आडम्बरपूर्ण तमाशे को अपनी फूंक से उड़ा दिया था।

संविधान सभा में लंबी तथा बहुत ही जानकारी भरी बहस के बाद आधुनिक भारत के निर्माताओं ने यह निर्णय लिया था कि भारत सार्वभौम वयस्क मताधिकार के आधार पर शासित होगा। इस तरह उन्होंने एक व्यक्ति, एक वोट का सिद्धांत स्थापित किया। इसका अमिट संदेश है जनता की संप्रभुता और हमारी संवैधानिक व्यवस्था में उसकी सर्वोच्चता। जनता की इस संप्रभुता के साथ हिकारत के साथ पेश आना इस संवैधानिक व्यवस्था को ही कमजोर कर सकता है।

दूसरी ओर, केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री ने भी विकास बनाम लोकपाल विधेयक की झूठी बहस खड़ी करते हुए इतनी ही विचित्र बात कही है। उन्होंने कहा था अगर एक गरीब बच्चे के लिए शिक्षा हासिल करने का साधन नहीं है, तो लोकपाल विधेयक इसमें क्या मदद करेगा? 2-जी स्पेक्ट्रम की मिसाल ली जा सकती है। नियंत्रक तथा महालेखा परीक्षक के आकलन के अनुसार इस घोटाले में सार्वजनिक खजाने को 1.76 लाख करोड़ रुपये का नुकसान उठाना पड़ा है। अगर यह राशि सरकारी खजाने में पहुंची होती, इसके बल पर बड़ी आसानी से शिक्षा की

इतनी सुविधाएं खड़ी की जा सकती थीं कि छह से 14 वर्ष तक की आयु के हरेक बच्चे को स्कूल पहुंचाया जा सके। वास्तव में, संसद द्वारा पारित किए गए शिक्षा के अधिकार कानून का यही तो लक्ष्य है।

नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर एजूकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन (नीपा) के अनुमान के अनुसार, सबके लिए शिक्षा के इस लक्ष्य को जमीन पर उतारने के लिए जरूरी स्कूल बनाने, शिक्षक भर्ती करने और बच्चों को दोपहर का भोजन, स्कूली पोशाक, पाठ्य पुस्तकें आदि जरूरी सुविधाएं मुहैया कराने के लिए, पांच साल तक लगातार हर साल 35,000 करोड़ रुपये खर्च करने पड़ेंगे। पांच वर्ष में कुल राशि होगी 1.75 करोड़ रुपये। मंत्रीजी, इसीलिए भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाना जरूरी है, जो हमारी जनता को बेहतर जिंदगी से और देश को एक बेहतर भविष्य से वंचित कर रहा है। इसी तरह, खुद सरकार की राष्ट्रीय सलाहकार परिषद का आकलन है कि देश में हरेक परिवार को (गरीबी की रेखा के नीचे और ऊपर, सभी को) तीन रुपये प्रति किलोग्राम की दर से 35 किलोग्राम खाद्यान्न मुहैया कराने के लिए 88,000 करोड़ रुपये सालाना का अतिरिक्त खर्चा करना पड़ेगा। अगर 2-जी स्पेक्ट्रम घोटाले को रोका जा सका होता और 1.76 लाख करोड़ रुपये सरकारी खजाने में पहुंचे होते, तो पूरे दो साल तक तो भारतीयों को पूरी खाद्य-सुरक्षा मुहैया कराई ही जा सकती थी।

फिर भी हमें प्रस्तावित विधेयक के मसौदे के विचार के लिए संसद के सामने लाए जाने तक इंतजार करना होगा। हमारी संवैधानिक व्यवस्था के अनुसार, संसद और सिर्फ संसद ही कानून बना सकती है। हम एक ऐसा लोकपाल कानून बनाए जाने के लिए प्रतिबद्ध हैं, जो कारगर भी हो तथा पारदर्शी भी।

सांसद और माकपा पोलित ब्यूरो के सदस्य

हिन्दुस्तान दैनिक 16 अप्रैल 2011 से 'साभार'

तुलसी का आह्वान

ऐ! सरकारी कर्मचारियों! सुनो खोलकर कान,
अगर स्वस्थ जीवन जीना तो बनो सही इन्सान।

था संकल्प करेंगे पद पर सच्चाई से काम,
वहां सत्यता आज तुम्हारी है कितनी बदनाम?
किस प्रवाह में बहकर भूल गए हो अपना भान।।

अधिकारों का दुरुपयोग या वैभव का व्यामोह,
इसीलिए तो स्थान-स्थान पर होते हैं विद्रोह,
सेवाभावी स्वतः प्राप्त कर लेता है सम्मान।।

भारी 'कर' देने में जनता, नहीं करे अफसोस,
पर यह गबन करोड़ों का जागृत करता आक्रोश,
जिम्मेदार कौन है? करना होगा स्पष्ट बयान।।

लेना नहीं चाहते रिश्वत, पर हम हैं मजबूर,
वेतन कम है, पेट न भरता, सुख-सुविधा से दूर,
छोटे स्वार्थों के खातिर क्यों बेच रहे ईमान?

रखना होगा आत्म-संतुलन, सामंजस्य महान,
सदाचार सादापन, कथनी-करनी एक समान,
चलो अणुव्रत-आदर्शों पर 'तुलसी' का आह्वान।।

अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी

आप भी लड़िए

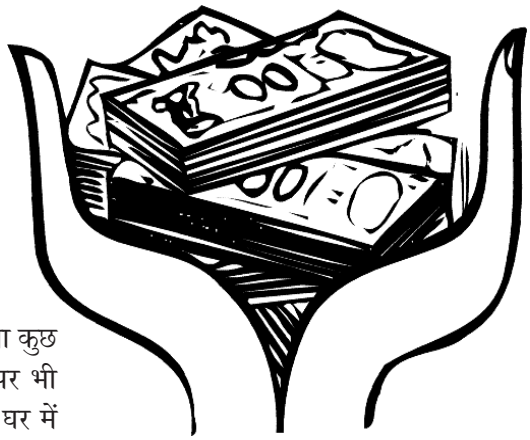

शशि शेखर

पुराना जुमला है हिन्दुस्तान अमीर है, पर हिन्दुस्तानी गरीब। पता नहीं किस खोजी दिमाग ने भारतीय शासन प्रणाली में पसरे भ्रष्टाचार के लिए यह शानदार बात कही थी, जो दशकों से लोगों के दिलो-दिमाग पर राज कर रही है। संगठित घूसखोरी ने इस देश के सत्ता प्रतिष्ठानों को ही नहीं, बल्कि समूचे सिस्टम को ही कब्जे में ले लिया है। इसके खिलाफ लोगों की छटपटाहट कभी-कभी गुस्से में तब्दील हुई, पर यह इलाकाई घटनाएं साबित होकर रह गईं। सब कुछ पहले जैसा चलता रहा। इस अनीति के कारोबार को अन्ना हजारे ने अपने साहस और दृढ़ संकल्प शक्ति से जोरदार झटका दिया है। वह और उनके सहयोगी बधाई के पात्र हैं।

अन्ना की ऐतिहासिक जीत के बाद आप भी सोच रहे होंगे कि रालेगण सिद्धि के संत में ऐसा क्या है कि उसने न केवल हिन्दुस्तान की हुकूमत को झुका दिया, बल्कि उन राजनेताओं को भी करारा धक्का दिया, जो सारी सीमाएं तोड़कर भ्रष्टाचार के दलदल में गले तक डूबे हुए हैं। लोग अन्ना की तुलना महात्मा गांधी से कर रहे हैं। पर दोनों के हालात में बहुत फर्क है। गांधी 19वीं शताब्दी से लेकर अब तक जनमे लोगों में महानतम माने जाते हैं। मुझे नहीं मालूम कि हजारे की हैसियत कभी उनके बराबर होगी या नहीं, पर यह सच है कि इस मराठी लड़ाके की लड़ाई बहुत मुश्किल है।

वैसे तो दो बड़ी शख्सियतों में कोई तुलना पूरी तरह कभी भी जायज नहीं होती, पर यह सच है कि तुलनाएं हमें सोचने का एक नया नजरिया प्रदान करती हैं। मौका है और दस्तूर भी। लिहाजा कुछ बातें गांधी और हजारे के हालात पर भी कर लेते हैं। मोहनदास एक अमीर घर में जनमे थे। वह पढ़ने के लिए लंदन भेजे गए। बैरिस्टरी की पढ़ाई की। नतीजों के मामले में भले ही अच्छे न रहे हों, परंतु अपने अनुभवों को गुनने की उनमें अद्भुत क्षमता थी। दक्षिण अफ्रीका के व्यावसायिक दौरे के दौरान जब उन्हें पीटर मेरिट्सबर्ग स्टेशन पर धक्का मारकर उतार दिया गया, तो उन्होंने विरोध के लिए प्रचलित 'ओल्ड टेस्टामेंट' के तरीके का सहारा नहीं लिया। वह चाहते, तो आंख के बदले आंख की रवायत का अनुसरण करते हुए अपने कानूनी ज्ञान का प्रयोग एक अत्याचारी गोरे को सबक सिखाने के लिए कर सकते थे। उन्होंने इससे आगे की सोची। वह उस समूची व्यवस्था के खिलाफ अकेले ही उठ खड़े हुए, जो दमनकारी मानसिकता का प्रतीक थी। संयोग से दक्षिण अफ्रीका में उसे गोरी चमड़ी वाले लोग चला रहे थे। गांधी ने अपनी जिंदगी में बार-बार साफ किया कि मेरी लड़ाई किसी व्यक्ति या तबके के खिलाफ नहीं है। मैं अत्याचारी व्यवस्था को बदलना चाहता हूं।

यही वजह है कि जब वह इस रास्ते पर चले, तो लोगों के मन में सुलग रहा गुस्सा उनके पीछे-पीछे लावे की तरह बहने लगा। भारत आने के बाद जब वह गोखले और अन्य तमाम लोगों से मिले, तो उनके मन में आने वाले दिनों की तस्वीर साफ होने लगी। इसके लिए उन्होंने सबसे पहले भारत के गांवों को नजदीक से देखने का फैसला किया। चंपारण की यात्रा के क्या निष्कर्ष निकले? किस तरह एक बैरिस्टर महात्मा में परिवर्तित हो गया? किस तरह देश के आम आदमी के मन में बदलाव की नई ललक जगी? इन सवालों के जवाब देने की जरूरत नहीं है। यह एक जाना-बूझा इतिहास है।

इसके उलट महाराष्ट्र के एक गांव में जनमे किशन बाबूराव हजारे की जिंदगी आसान नहीं थी। पिता मजदूर थे और घर में उनके अलावा छह और भाई थे। तंगी का आलम यह कि खाने के लिए हाथ और मुंह की दूरी हर रोज दूभर जान पड़ती थी। परिवार के दुख से द्रवित बुआ उन्हें मुंबई ले गईं। स्कूल में दाखिल हुए, पर सातवीं के बाद पढ़ाई छोड़नी पड़ी। गुरबत हर रोज तकलीफों का सिलसिला बढ़ा देती थी। लिहाजा 40 रुपये की पगार पर दादर के बाहर एक फूल बेचने वाले की दुकान पर नौकरी कर ली। बाद में फौज में ड्राइवर हो गए। 1965 की भारत-पाक जंग में मौत से भी सीधा सामना हुआ। एक दिन नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से विवेकानंद की एक किताब खरीदी, जिसने उनके सोचने और जीने के नजरिये को हमेशा के लिए बदल दिया। 1975 में फौज को अलविदा कहकर जब अपने गांव गए, तो उन्हें लगा कि बदलाव की हवा यहां तक आते-आते दम तोड़ देती है। इससे जूझने के लिए उन्होंने 'तरुण मंडल' नाम की एक संस्था बनाई। उन्होंने नौजवानों को शराब, अशिक्षा, अस्पृश्यता और पानी की तंगी से जूझना सिखाया। गरीबी को उन्होंने बेहद करीब से देखा है। वे जानते थे कि खाली पेट पाप की और

भी मोड़ देता है। इसलिए उन्होंने सबसे पहले रालेगण सिद्धि में दूध का उत्पादन बढ़ाने पर जोर दिया। 1975 से पहले यह गांव सिर्फ सौ लीटर दूध प्रतिदिन दुहा करता था, जो बाद में ढाई हजार लीटर तक पहुंच गया। यह वह क्रांतिकारी तकनीक थी, जिसने लोगों के आचार-विचार और व्यवहार में क्रांतिकारी परिवर्तन किए। आज यह गांव पूरी तरह आत्मनिर्भर है। लोग इसकी नजीर देते हैं।

आप देख सकते हैं। गांधी और हजारे के प्रयोगों में जहां आम आदमी के उत्थान की ललक हर कदम पर उछलती-उबलती दिखती है, वहीं उनके जमीनी हालात बहुत जुदा थे। एक बात और मैं पूरी विनम्रता के साथ कहना चाहूंगा कि राष्ट्रपिता की लड़ाई आसान थी। वह कुरीतियों के लिए अंग्रेजों से जंग लड़ रहे थे। हजारे की लड़ाई अपनों से है। अपनों से जूझना हमेशा मुश्किल होता है। हजारे इस कठिन युद्ध के विजेता हैं।

रालेगण सिद्धि से नई दिल्ली के जंतर-मंतर तक के सफर ने यह साबित किया है कि समय की नब्ज को पहचानने की उनमें अद्‌भुत क्षमता है। उन्होंने भारतीय लोक मानस को विचार और संघर्ष के लिए एक नया अवसर दिया है। इसीलिए अन्ना की जीत महान भारतीय लोकतंत्र की जीत है। हम गर्व से कह सकते हैं कि हम अपने फ्रांसीसी और इटेलियन पूर्वजों की तरह बदलाव के लिए खून नहीं बहाते। खुद-ब-खुद रास्ता निकाल लेते हैं। कभी गांधी तो कभी जयप्रकाश और कभी हजारे इसके अगुवा बनते हैं।

भरोसा न हो तो सविनय अवज्ञा के इतिहास पर एक नजर डाल देखिए। कहते हैं इसे बनारस की जनता ने 1811 में ईजाद किया था। अंग्रेजों ने संसार के प्राचीनतम शहरों में से एक माने जाने वाले इस नगर के बाशिंदों पर कुछ नए टैक्स लगा दिए थे। बनारसियों ने इससे जूझने का अद्‌भुत तरीका ईजाद किया। उन्होंने अपने घरों और दुकानों पर ताला लगा दिया। शहर के बाहर आ खड़े हुए और अफसरों से कह दिया कि हम टैक्स नहीं देंगे। जो करना है कर लो। हुकूमत को झुकना पड़ा था। यही तरीका सौ साल बाद गांधी ने और दो सौ साल बाद अन्ना ने अपनाया। कहने की जरूरत नहीं कि वे कारगर रहे, पर असली विजय जनता के दबाव की तब भी थी और आज भी है।

इसीलिए निवेदन है अन्ना में पूरी श्रद्धा रखते हुए उनके विचारों को अपने अंदर समाएं। गांधी की तरह उन्हें संत बनाकर भूलने की गलती न करें। हमारे बदलने से ही तो यह युग बदलेगा। काल हमें एक बार फिर परीक्षक की नजर से देख रहा है। हमें इस इत्मिहान में हर हाल में पास होना ही है।

हिन्दुस्तान दैनिक 10 अप्रैल 2011 से 'साभार'

कॉरपोरेट की आवाज - खत्म करो भ्रष्टाचार

जोसफ बर्नाड

कॉरपोरेट जगत भी भ्रष्टाचार के खिलाफ चली अन्ना हजारे की मुहिम में शामिल हुआ। कॉरपोरेट जगत ने कहा मौजूदा समय में सबसे बड़ी चुनौती बढ़ता भ्रष्टाचार है। भ्रष्टाचार के चलते देश का आर्थिक और सामाजिक विकास बुरी तरह से प्रभावित हो रहा है। अगर भ्रष्टाचार खत्म हो जाए तो भारत विकास नई ऊंचाई पर पहुंच जाएगा। सबसे अहम बाद आम आदमी की जिंदगी में खुशहाली आ जायेगी।

औद्योगिक संगठन फिक्की के डायरेक्टर जनरल डॉ. राजीव कुमार का कथन है कि हम देश में किसी भी तरह के भ्रष्टाचार के खिलाफ हैं। अगर हमें भ्रष्टाचार को जड़ से मिटाना है या उखाड़ फैंकना है लोकपाल सशक्त माध्यम का इस्तेमाल करना होगा। भ्रष्टाचार के खिलाफ अन्ना हजारे का अनशन सही कदम है। फियो के प्रमुख रामू देवड़ा मानते हैं कि अन्ना हजारे का अभियान देश हित में है। अगर भ्रष्टाचार खत्म हो जाता है तो हमारे देश में कारोबार सही तरीके से हो पाएगा। हम पूर्ण रूप से निर्यात को बढ़ा सकेंगे और 500 अरब डॉलर का निर्यात लक्ष्य 2014-15 तक पूरा कर सकेंगे।

भारतीय उद्योग व्यापार मंडल के सेक्रेटरी हेमंत गुप्ता का कहना है कि भ्रष्टाचार ने भारत की छवि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर धूमिल कर दी है। सरकार भ्रष्टाचार पर रोक लगाने में काफी हद तक नाकाम रही है। कोई भी ठोस कानून इस संबंध में नहीं बन पाया है या सरकार नहीं बना पाई है। अहम सवाल यह है कि आखिर भ्रष्टाचार का इस तरह से नाच कब तक जारी रहेगा। कब तक भ्रष्टाचार करने वाले खुले घूमते रहेंगे। कब तक हम और हमारी सरकार यूं बैठकर तमाशा देखते रहेंगे। भ्रष्टाचारी मुट्‌ठी भर है, वे देश को आर्थिक रूप से खोखला कर रहे हैं। हम चाहते हैं कि भ्रष्टाचार को जल्द से जल्द देश से उखाड़ फैंकना चाहिए।

दी कूचा महाजनी सर्राफ एसोसिएशन के जनरल सेक्रेटरी जी.सी. गुप्ता का कहना है कि पूरा सर्राफ समुदाय अन्ना हजारे द्वारा चलाई गयी भ्रष्टाचार मुहिम का स्वागत करता है और उसका समर्थक है। मौजूदा समय में हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार व्याप्त है। सोना और चांदी के दामों में तेजी भी भ्रष्टाचार का परिणाम है। महंगाई बढ़ाने के पीछे जमाखोरों का हाथ है। भ्रष्टाचार खत्म होने पर ही बाजार में सब कुछ ठीक होगा और हर आदमी को सभी चीजें सही दामों पर मिलेंगी।

हिन्दुस्तान दैनिक 9 अप्रैल 2011 से 'साभार'

देशभर में मिला अन्ना हजारे को समर्थन

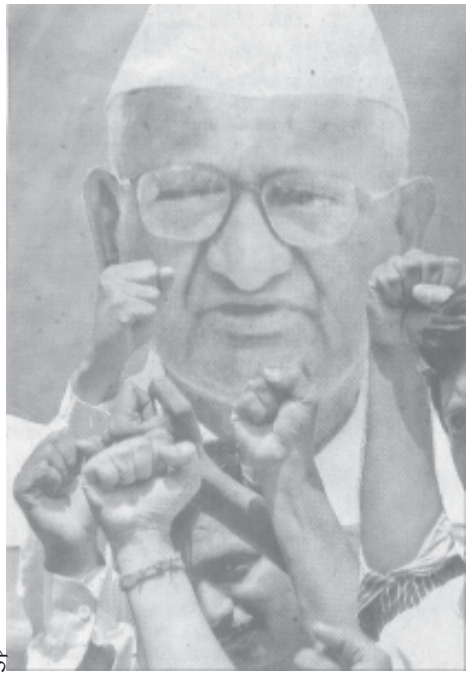

जन लोकपाल बिल लाने की मांग को लेकर अनशन पर बैठे सामाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे के साथ सारा देश आ गया। आम नागरिकों के साथ समाज के बुद्धिजीवियों ने भी सड़कों पर उतरकर भ्रष्ट तंत्र के खिलाफ नाराजगी का इजहार किया। आइये नजर डालते हैं इस आंदोलन को लेकर देश भर में पैदा हुए माहौल पर

■ उत्तर प्रदेश

अन्ना हजारे के समर्थन में राज्य के कई राजनीतिक, अधिवक्ता, डॉक्टरों और बुद्धिजीवियों के संगठन आगे आए। सीपीआई (एम-एल) ने राजधानी लखनऊ सहित कई जिलों में अन्ना के आंदोलन के समर्थन में धरना-प्रदर्शन किया। पार्टी ने सरकार से जल्द से जल्द जन लोकपाल बिल लाने की मांग की। जौनपुर में वकीलों ने करप्शन के खिलाफ हजारे की मुहिम के समर्थन में हस्ताक्षर अभियान चलाया।

■ बिहार

राज्य के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अन्ना के आंदोलन को समर्थन देते हुए कहा 'मैं पूरी तरह से अन्ना के साथ हूं। जो आक्रोश दिख रहा है, वह भ्रष्टाचार के खिलाफ जनता की अभिव्यक्ति है। लोगों में करप्शन के खिलाफ बड़े पैमाने पर नाराजगी और असंतोष है। हजारे की मुहिम को जबर्दस्त समर्थन मिला। यूपीए सरकार को जन लोकपाल बिल को प्रतिष्ठा का मुद्दा नहीं बनाना चाहिए।'

■ जम्मू

लोकपाल बिल, राज्य जवाबदेही आयोग और सतर्कता आयोग के पक्ष में नारे लगाते हुए जम्मू यूनिवर्सिटी के 300 से अधिक विद्यार्थियों ने हजारे के सपोर्ट में प्रदर्शन किया। दक्षिणपंथी संगठन श्रीराम सेना ने भी प्रदर्शन किया और हजारे के जेल भरो आंदोलन को समर्थन देने का आह्वान किया। नेशनल सैक्युलर फोरम ने जम्मू में रैली निकाली। पुंछ, कठुआ और किश्तवार में भी लोग हजारे के सपोर्ट में सड़कों पर उतरे।

■ आंध्र प्रदेश

हैदराबाद और अन्य जिलों में फिल्मी हस्तियों के अलावा विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े लोग अन्ना हजारे के समर्थन में सामने आए। मशहूर गीतकार जोन्नाविट्टला, रामलिंगेश्वर राव, तेलुगू फिल्म स्टार राणा दग्गूबती, शिवाजी, फिल्म डायरेक्टर शेखर कम्मुला ने 'यूथ फॉर बेटर इंडिया' और 'इंडिया अंगेस्ट करप्शन' की ओर से आयोजित क्रमिक भूख हड़ताल में हिस्सा लिया। कई स्कूलों और कॉलेजों के स्टूडेंट भी हड़तालों में शामिल हुए।

■ मध्य प्रदेश

इंदौर में अन्ना के समर्थन में उपवास रखा गया और सभाएं, मोमबत्ती जुलूस और रैलियां निकाली गईं। शहर में जन लोकपाल बिल के समर्थन में 5 अप्रैल से उपवास रखा गया। शहर के कई प्रतिष्ठित संगठनों और लोगों ने भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन को समर्थन दिया। मिजोरम में भी जाने-माने लोगों और भ्रष्टाचार विरोधी संगठनों के कार्यकर्ताओं ने बैठक कर अन्ना हजारे की मुहिम को समर्थन दिया। बैठक में हिस्सा लेने वालों ने कहा, 'वे देश और खासकर राज्य में इस आंदोलन को

आगे ले जाएंगे।' बैठक में एक प्रस्ताव पारित किया गया और इसकी प्रतियां राष्ट्रपति, पीएम, राज्यपाल, मुख्यमंत्री और सीवीसी को सौंपने का फैसला लिया गया।

■ उत्तराखंड

राज्य के पौड़ी जिले के कोटद्वार के तहसील परिसर में गढ़वाल यूनिवर्सिटी के स्टूडेंट्स ने क्रमिक अनशन किया। एबीवीपी, एनएसयूआई और दूसरे छात्र संगठनों ने भी हजारे को सपोर्ट किया। लैंसडाउन, सतपुली, गोपेश्वर, रुद्रप्रयाग, धूमाकोट, यमकेश्वर और दूसरी जगहों पर कैंडल मार्च निकाला गया।

देश के विभिन्न-विभिन्न प्रदेशों और जिलों में भी लोगों ने भ्रष्टाचार के खिलाफ चलाई गई मुहिम में शामिल हो अनशन और रैलियों के माध्यम से भ्रष्ट तंत्र के खिलाफ अपनी नाराजगी व्यक्त की।

नवभारत टाइम्स, 9 अप्रैल 2011 से 'साभार'

"

प्रधानमंत्री को भी लोकपाल बिल के तहत लाया जाना चाहिए। जरूरत पड़ने पर लोकपाल को उनके खिलाफ जांच का अधिकार दिया जाना चाहिए। मुझे ऐसा कोई कारण नजर नहीं आता, जिसकी वजह से ऐसा नहीं किया जा सकता। ऐसे में यह कोई विवाद का मुद्दा नहीं है।

संतोष हेगड़े, *सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज*

लोकपाल बिल के पारित हो जाने से ही करप्शन खत्म नहीं हो जाएगा। लोकपाल बनाने की कोशिशें 30 साल से हो रही हैं, लेकिन पहले की सरकारें ऐसा कर पाने में नाकामयाब रहीं। भ्रष्टाचार के खिलाफ प्रभावी कदम उठाने के लिए जनता को राइट टू रीकॉल और राइट टू रिजेक्ट भी मिलना चाहिए। सरकारें इन उचित मांगों को नजरअंदाज करती रही हैं। यह मौका है जब लोगों को संविधान में ऐसे प्रावधान शामिल कराने के लिए मुहिम चलानी चाहिए।

राजेन्द्र सच्चर, *रिटायर्ड जज*

सफेदपोशों ने खासी प्रॉपर्टी जुटाकर हमें गरीब बना दिया है। मरने से पहले मैं देश को लूटने वालों को सलाखों के पीछे देखना चाहता हूं। लोकपाल बिल करप्शन के खिलाफ आगे की लड़ाई के लिए सिर्फ एक सीढ़ी है।

राम जेठमलानी, *नामी वकील*

जन लोकपाल बिल की मांग लेकर भूख हड़ताल करने वालों को कुछ नहीं मिलने वाला। इस देश से करप्शन को कभी नहीं मिटाया जा सकता।

प्रकाश सिंह बादल, *पंजाब के मुख्यमंत्री*

नवभारत टाइम्स, 10 अप्रैल 2011 से 'साभार'

"

अन्ना एक, साजिश अनेक

आशुतोष

अन्ना न हुए, जी का जंजाल हो गए। पूरे सत्ता प्रतिष्ठान को यही लगता है। लिहाजा अन्ना और आंदोलन से जुड़े लोगों को बदनाम करने की साजिशें रची जाने लगीं। ऐसे-ऐसे तर्क दिए जा रहे हैं कि हंसी आ रही है। एक जनाब लिखते हैं कि मैं अन्ना का समर्थक हूं, लेकिन उनके आंदोलन में शरीक नहीं हो सकता, क्योंकि जंतर-मंतर पर जिस भारत माता की तस्वीर लगी हुई थी, वह आरएसएस का पोस्टर है। एक विद्वान मोहतरमा हैं, जिनको लगता है कि आमरण अनशन के दौरान वंदे मातरम के नारे क्यों लगे? इंकलाब जिंदाबाद क्यों नहीं बोला गया? अफसोस! इनमें से कुछ केन्द्र सरकार के सलाहकार भी हैं।

पर यह सच है कि पूरे आंदोलन की साख को बट्टा लगाने के लिए इसे आरएसएस द्वारा प्रायोजित बताने की जबर्दस्त मुहिम जारी है। कुछ गलती अन्ना हजारे की भी है। उन्हें इस पचड़े में पड़ने की जरूरत नहीं थी कि नीतिश कुमार और नरेन्द्र मोदी क्या कर रहे हैं? उनकी प्रेस कान्फ्रेंस में सबने यह तो सुना कि ग्रामीण विकास पर मोदी की तारीफ अन्ना ने की, लेकिन अखबारों में यह नहीं छपा कि लगे हाथ उन्होंने दंगों की निंदा भी की। लिहाजा उन्हें मोदी का सबसे पक्का दोस्त बता दिया गया। मल्लिका साराभाई जैसे समर्थकों को भी उन पर शक होने लगा।

एक और मुहिम जारी है। अन्ना और उनके साथियों के खिलाफ अनाप-शनाप छपने लगा। यह बताने की कोशिश की जाने लगी कि भ्रष्टाचार के खिलाफ मुहिम चलाने वाले ये लोग खुद कितने भ्रष्ट और गंदे हैं। किसी की सीडी निकाली जा रही है, तो किसी के खिलाफ उनके किसी पुराने साथी से लिखवाया जा रहा है। लब्बो-लुआब यही कि ये सभी फ्रॉड हैं। इन पर भरोसा करके लोग बड़ी भारी भूल कर रहे हैं। इन सबके बीच एक अहसास मुझे भी हो रहा है कि सत्ता प्रतिष्ठान बुरी तरह से डरा हुआ है। वह दूध का जला है।

इस डर के पीछे दो कारण हैं। एक, आमरण अनशन के दौरान देश भर में अन्ना के समर्थन में लोगों का अपने आप निकलना। जम्मू से लेकर चेन्नई तक हजारों की संख्या में लोगों ने धरना दिया। लोग उपवास पर बैठे, जबकि ऐसी भीड़ इकट्ठा करने के लिए राजनीतिक दलों को पानी की तरह पैसा बहाना पड़ता है, हफ्तों मेहनत करनी पड़ती है। दो, अन्ना में लोगों का गांधी को खोजना। नई पीढ़ी को उनमें महात्मा गांधी दिखे। वही सरलता, वही नैतिक आभा, वैसी ही ईमानदारी और अपनी बात रखने का वही अहिंसावादी तरीका। सत्ता प्रतिष्ठान को अनशन के तीसरे दिन ही अन्ना के अनशन की ताकत का अंदाजा हो गया था। उन्हें लग गया था कि अगर समय रहते मांगों को नहीं माना गया, तो लेने के देने पड़ सकते हैं। इसलिए सोनिया गांधी ने अपील जारी की और चौथे दिन ही ड्राफ्टिंग कमेटी में पांच आंदोलनकारियों को जगह दे दी गई और साथ ही सरकारी अधिसूचना भी जारी कर दी गई। आंदोलनकारी भी सरकार की तेजी से हतप्रभ थे, वरना लोग महीनों अनशन पर बैठे रहते हैं और सरकार के कान पर जूं तक नहीं रेंगती। यानी सरकार को कहीं न कहीं पिछले साल हुए घोटालों और अपनी कमजोरी का अहसास था और साथ ही एक गांधीवादी के सत्याग्रह के तेज का भी, वरना सरकारें इतनी आसानी से नहीं पिघला करतीं।

फिर इस डर के पीछे है इतिहास के सबक। सत्ता में बैठे लोग जानते हैं कि जेपी और वीपी सिंह के आंदोलन का कितना बड़ा खमियाजा उन्हें भुगतना पड़ा था। जेपी आंदोलन ने यह मिथक ध्वस्त कर दिया था कि कांग्रेस अपराजेय है। छात्रों के मेस से शुरू हुए आंदोलन ने इंदिरा गांधी के दंभ को चकनाचूर कर दिया था। देश की प्रधानमंत्री और उनके ताकतवर बेटे संजय गांधी को अपने पसंदीदा चुनाव क्षेत्र में हार के अपमान का घूंट पीना पड़ा था। 1984 में अप्रत्याशित 415 सीटें जीतने वाले राजीव गांधी को 1989 में नेता विपक्ष बनना पड़ा था। बोफोर्स कांड के दौरान भी लोगों को वीपी सिंह की ईमानदारी में गांधी दिखे थे और नारे लगा करते थे कि राजा नहीं फकीर है, देश की तकदीर है। ऐसा नहीं है कि तब कांग्रेस की सरकारों ने जेपी और वीपी को भला-बुरा नहीं कहा था। जेपी को बाकायदा फासीवादी बताया गया। जेपी ने जब पुलिस से आह्वान किया कि वे सरकार के गैरवाजिब आदेश मानना बंद कर दें, तो उन्हें अराजकतावादी करार दिया गया। जेपी को उसी तरह से ब्लैकमेलर कहा गया, जैसा कि आज अन्ना के बारे में कहा जा रहा है। वीपी सिंह को तो फंसाने के लिए सेंट किट्स जैसा फ्रॉड रचा गया। जैसा कि आज शांति भूषण के बारे में किया जा रहा है।

लेकिन लोग भूल जाते हैं कि गांधी के देश में जनता आसानी से किसी पर यकीन नहीं करती और जब करती है, तो आंखें मूंदकर। उसने गांधी पर यकीन किया। ऐसा नहीं कि गांधीजी ने गलतियां नहीं की थीं, लेकिन जनता उनको माफ करती गई, क्योंकि उसे गांधीजी की ईमानदारी पर शक नहीं था। उनकी मंशा संदिग्ध नहीं थी। बूढ़े बीमार जेपी पर जनता का दिल आया, तो पूरी तरह से। उसे लगा कि यह बूढ़ा शेर वाकई देश के बारे में सोच रहा है। अपने बारे में नहीं। यह सत्ता का भूखा नहीं है। जेपी सत्ता के भूखे होते, तो नेहरूजी की कैबिनेट में मंत्री बन जाते और इंदिरा गांधी की हार के बाद देश के प्रधानमंत्री। वीपी में लोगों को जेपी की छवि दिखी। उन पर भरोसा किया तो प्रधानमंत्री बना दिया, लेकिन भरोसा टूटा, तो कहीं का न छोड़ा।

सत्ता प्रतिष्ठान यह भूल जाता है कि लोग आज के नेताओं पर यकीन नहीं करते। उसने अन्ना जैसे फकीर को दिल दिया है, तो कुछ कारण होगा। क्या कीचड़ उछालने मात्र से आम जन का यकीन अन्ना से टूट जाएगा? मुझे ऐसा लगता नहीं। डर सिर्फ इस बात का है कि इतिहास से सबक नहीं लेने वाले कहीं एक बार फिर इतिहास के कूड़ेदान में न चले जाएं।

मैनेजिंग एडीटर आईबीएन–7

हिन्दुस्तान दैनिक 18 अप्रैल 2011 से 'साभार'

आदमी सार्वजनिक जीवन में ऊंचे-ऊंचे ओहदे पर जाए और घोटाले न करे, यह शोभा नहीं देता। ऊंची-ऊंची कुर्सियों पर बैठकर व्यक्ति घोटाला नहीं करेगा तो उसको क्या कहा जाएगा? जो जितना बड़ा घोटाला करेगा, वह उतना ही बड़ा मर्द कहलाएगा। जिस तरह यह मानुस तन बार-बार नहीं मिलता, उसी तरह ऊंची कुर्सी और घोटाला करने का मौका बार-बार हाथ नहीं आता।

घोटाले का आदर्श

नरेन्द्र देवांगन

हमारे देश में घोटाला होने पर इतना शोर-शराबा क्यों होता है, यह हमारी समझ से परे है। घोटाला करना कोई छोटा-मोटा काम तो है नहीं। बहुत बड़ा जोखिम उठाने वाला व्यक्ति ही कोई घोटाला कर सकता है। वैसे घोटाले कैसे भी हों सब आदर्श ही होते हैं। घोटाला करने वाला एक आदर्श जीव ही होता है। घोटालेबाजों को हमें अपना रोल मॉडल जरूर बनाना चाहिए। शर्म आनी चाहिए इस देश के करोड़ों लोगों को, जो हीरो-हीरोइन और क्रिकेट खिलाड़ियों के पीछे भागते हैं, उन्हें अपना रोल मॉडल बनाते हैं। अरे, बड़े परदे पर थोड़ा-बहुत नाचने-कूदने, अभिनय कर देने से कोई महान हो जाता है क्या? उसी तरह बैट-बाल लेकर कोई भी इधर-उधर हाथ घुमा देगा, तो इसमें महानता की क्या बात है? महान और आदर्श पुरुष एक घोटालेबाज होता है। उसे मालूम रहता है कि घोटाला उजागर होने के बाद उसे कई तरह की कठिनाइयों से लोहा लेना पड़ेगा। उससे कड़ी पूछताछ होगी, उसकी गिरफ्तारी होगी, उसका हगना-मूतना भी पुलिस की निगरानी में होगा। इसके बाद भी वह घोटाला करने की हिम्मत करता है। एक घोटालेबाज से बड़ा साहसी आदमी इस दुनिया में दूसरा नहीं मिलेगा।

वैसे घोटालाबाजी में राष्ट्रीयता और सामाजिकता की भावना निहित है। जिस तरह मानव सभ्यता 'जियो और जीने दो' की भावना को बल देता है, उसी प्रकार घोटाला सभ्यता 'खाओ और खिलाओ' वाली परोपकारी भावना से प्रेरित है। एक घोटाला होता है तो कई लोगों का भला होता है। ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी के एक घोटाले में मात्र पांच हजार रुपए का घोटाला हुआ, तो उसमें तीन अफसर, तीन बाबुओं और दो चपरासी को हिस्सा मिला। दस हजार रुपए के एक घोटाले में लगभग पंद्रह लोगों को हिस्सा मिला। जितने बड़े घोटाले होंगे उतने अधिक लोगों को हिस्सा-बंटवारा मिलेगा। देख लीजिए घोटालेबाजी में संगठन, सहयोग, परोपकार और बहुजन हिताय बहुजन सुखाय की आदर्शता है। घोटाला करने वाला व्यक्ति, घोटाला करते ही गुमनामी के अंधेरे से निकलकर चर्चा का केंद्र बिंदु बन जाता है। टीवी चैनल, अखबारों, पत्रिकाओं के कैमरे उसकी तरफ घूम जाते हैं। एक अदद घोटाला होते ही मीडिया में सनसनीखेज सुर्खियां ही सुर्खियां। संपादक अपने संपादकीय में घोटालेबाज पर बढ़-चढकर लिखते हैं, लोकसभा और विधानसभा में हंगामा मच जाता है, गली-मुहल्ले, होटल-पान ठेलों में सिर्फ उसी के चर्चे होते हैं। हो सकता है प्रतियोगी परीक्षाओं के सामान्य ज्ञान के पर्चे में भी घोटालेबाज का नाम जुड़ जाए। हां, घोटाला होने के बाद कुछ दिन तक घोटालेबाज को कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, लेकिन घोटालेबाज अंत में बाइज्जत बरी होता ही है, इस बात की गारंटी है। क्योंकि हमारे कानून में बच निकलने की अनेक गलियां हैं और महा से महा झूठ को सच साबित करने के लिए सत्यवादी वकीलों की भरमार है। तभी तो घोटालेबाजों का बाल भी बांका नहीं हो पाता। इसीलिए तो कितनी तेजी से बढ़ रही है घोटालेबाजों की बिरादरी। वैसे भी एक घोटाला के होने के कुछ ही दिन बाद दूसरा घोटाला हो जाता है। और सबका ध्यान नए घोटाले पर लग जाता है। पुराने घोटाले की फाइल ही बंद हो जाती है।

आदमी सार्वजनिक जीवन में ऊंचे-ऊंचे ओहदे पर जाए और घोटाले न करे, यह शोभा नहीं देता। ऊंची-ऊंची कुर्सियों पर बैठकर व्यक्ति घोटाला नहीं करेगा तो उसको क्या कहा जाएगा? इस मामले को 'राखी का इंसाफ' में ले जाइए। राखी सावंत झट से कह देगी 'नामर्द'। फिर ऊंची कुर्सी पर बैठने वाले व्यक्ति के लिए आत्महत्या के सिवाय कोई रास्ता नहीं बचेगा। तो भाई, आत्महत्या क्यों करें, क्यों नामर्द कहलाएं। घोटाला करके अपनी मर्दागनी दिखाएं। जो जीतना बड़ा घोटाला करेगा, वह उतना ही बड़ा मर्द कहलाएगा। जिस तरह यह मानुस तन बार-बार नहीं मिलता, उसी तरह ऊंची कुर्सी और घोटाला करने का मौका बार-बार हाथ नहीं आता।

नरेन्द्र फोटो कॉपी
पोस्ट - खरोरा 493225
जिला-रायपुर (छ.ग.)

अफसरशाही में कुछ ऐसे भी कुछ वैसे भी

आशीष वशिष्ठ

हरियाणा वन विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार की परते जैसे ही खोलनी शुरू की तो संजीव पर मुसीबतों का पहाड़ ही टूट पड़ा। चार साल की नौकरी में ग्यारह बार ट्रांसफर का दंश संजीव को झेलना पड़ा। जब मंत्री और भ्रष्ट अधिकारियों का मन इतने से नहीं भरा तो अनाप-शनाप, आधारहीन और तथ्यहीन आरोप लगाकर संजीव को संस्पेंड कर दिया। अपने को बेगुनाह सिद्व करने के लिए संजीव को कोर्ट का सहारा लेना पड़ा लेकिन राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल के हस्तक्षेप के बाद ही वे सेवा में बहाल हो सके।

पद्म सिंह देश के सबसे बड़े सूबे उत्तर प्रदेश की पावरफुल सीएम मायावती के पीएसओ (पर्सनल सिक्योरिटी आफिसर) हैं इस परिचय से शायद आप पद्म सिंह को पहचान न पाएं। लेकिन कुछ दिन पहले आपने मीडिया के माध्यम से एक पुलिस आफिसर को सीएम मायावती के जूते साफ करते देखा होगा। ये कारनामा करने वाले अफसर पद्म सिंह ही थे। विपक्षी दलों ने सीएम के इस कृत्य को सामंतवाद की संज्ञा दी और खूब हो-हल्ला मचाया। सरकारी नुमांइदों ने सुरक्षा का वास्ता देकर पद्म सिंह के कृत्य को जायज ठहराया। दो-चार दिन की चर्चा और तकरार के बाद मामला रफा-दफा हो गया लेकिन पद्म सिंह ने जो कुछ भी किया वो अपने पीछे कई अनुत्तरित प्रश्न जरूर छोड़ गया। असल में देखा जाए तो आज लगभग हमारी पूरी व्यवस्था, सरकारी अमला और ऊंचे ओहदों पर विराजित महानुभाव पद्मसिंह की भांति ही सत्ता और सिहांसन के जूते साफ और चमका कर मलाई काट रहे हैं, और जो अफसर पूरी मेहनत, ईमानदारी, कर्मठता और सच्ची देश और समाज सेवा की भावना से काम करते हैं उन्हें भ्रष्ट, नक्कारा और चम्मच टाइप व्यवस्था के पोषक और अंग पग-पग पर सताते हैं और नित नए तरीके से उनके लिए मुश्किलें खड़ी करते रहते हैं। पद्म सिंह ने तो बड़ी बहादुरी दिखाई कि सारी दुनिया और मीडिया के सामने अपनी वफादारी और चम्मचागिरी को दिखाने और छिपाने से परहेज नहीं किया लेकिन हमारे देश में पद्म सिंह की कमी नहीं है। देश में दूसरे जितने भी पद्म सिंह हैं उनमें इतनी हिम्मत नहीं है कि वो अपने मालिकों, सरपरस्तों और आकाओं के सरेआम सारी दुनिया और मीडिया के सामने जूते साफ कर पाए। ऐसे अनेक पद्म सिंह को मैं, आप और सारा समाज किसी न किसी तरह से जानता पहचानता है लेकिन मीडिया के कैमरों में उनकी तस्वीरें कैद नहीं है सही मायनों में देखा जाए तो देश में सारी व्यवस्था का इस कदर ''पद्मीकरण'' हो चुका है कि ईमानदार, कर्मठ, सच्चे और जनता के दुःख-दर्द को समझने वालों को तो महत्वपूर्ण पदों से दूर रखा जाता है और उन्हें परेशान करने, सताने या प्रताड़ित करने की कोई कोर कसर नहीं छोड़ी जाती है, और जो अपना जमीर, इज्जत को किनारे रखकर पद्म सिंह की कतार में खड़े हो जाते हैं वो अपने आकाओं की सरपरस्ती में जीवन भर मलाई काटते हैं।

अमिताभ ठाकुर 1992 बैच उत्तर प्रदेश काडर के आईपीएस अधिकारी हैं वर्तमान में मेरठ जनपद में एसपी आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्लू) में तैनात हैं। 19 साल की नौकरी के दौरान में लगभग 10 जिलों में एसपी के अलावा विजीलेंस, इंटेलिजेंस, सीबी-सीआईडी और पुलिस प्रशिक्षण आदि में अपनी सेवाएं दे चुके अमिताभ की गिनती प्रदेश के कर्मठ, ईमानदार, सच्चे, जनपक्ष को तरजीह देने वाले अधिकारियों में होती हैं। 19 साल के कार्यकाल में अपनी कार्यशैली, बेदाग छवि और समाज सेवा की भावना और राजनीतिक आकाओं की मनमर्जी कें मुताबिक काम न करने के कारण ठाकुर नेताओं और शासन की आंख की किरकरी ही बने रहे। मूलतः बोकारो, झारखंड के निवासी अमिताभ का आईआईटी कानपुर से मैकेनिकल इंजीनियरिंग करने के बाद 1992 में भारतीय पुलिस सेवा में चयन हुआ। प्रारंभिक दौर पर से ही अपनी साफ-सुथरी छवि के साथ अमिताभ ने पुलिस जैसे बदनाम मकहमे में जीवन की शुरूआत की थी, वो आज भी जारी है। वर्तमान सरकार से लेकर पूर्ववर्ती सभी सरकारों और राजनीतिक आकाओं की हां में हां न मिलाने के कारण आज 19 साल की नौकरी के बाद भी अमिताभ एसपी ही हैं। मेरी जानकारी के हिसाब से लगभग दो दशकों की नौकरी के बाद कोई भी आईपीएस आफिसर डीआईजी के रैंक तक तो पहुंच ही जाता होगा। अमिताभ का अक्टूबर 2007 में पुलिस अधीक्षक (बलिया) की तैनाती के दौरान आईआईएम का कॉमन एंट्रेंस टेस्ट (कैट) दिया था। इसके बाद उनका चयन अप्रैल 2008 में आईआईएम में फेलो प्रोग्राम इन मैनेजमेंट में हो गया। 30 अप्रैल 2008 को आईआईएम लखनऊ में होने वाले इस कोर्स करने के लिए उन्होंने स्टडी लीव के लिए आवेदन किया था लेकिन सरकारी हीला-हवाली के चलते अमिताभ को कोर्ट का सहारा लेना पड़ा। अध्ययन अवधि के दौरान दो साल तक अमिताभ को वेतन ही नहीं मिला। ये वही व्यवस्था है जो अपने चम्मच और चप्पल साफ करने वालों को ढेरों सुख-सुविधाएं देने से हिचकती नहीं

है। अमिताभ की गलती एक ही है कि वह अपनी डयूटी को पूरी ईमानदारी, लगन और मेहनत से करते है और गरीब, मजलूम और पीड़ित पक्ष के साथ खड़े दिखाई देते हैं। वो अपने दूसरे साथियों की तरह राजनीतिक आकाओं के इशारे पर न तो दुम हिलाते हैं और न ही उनकी हां में हां। वो अपने राजनीतिक और रसूखदार आकाओं की खुशी या चम्मचागिरी के लिए किसी बेगुनाह, गरीब, कमजोर, और ऊंची पकड़ न रखने वालों को सलाखों के पीछे भी नहीं धकेलते हैं और न ही किसी अहिंसक प्रदर्शनकारी को अपने जूते की ऐडी से कुचलते और मसलते हैं।

इसी सिलसिले में वर्ष 2002 बैच के भारतीय वन सेवा के हरियाणा कैडर के अधिकारी संजीव चतुर्वेदी का संदर्भ लिया जा सकता है। **संजीव ने हरियाणा वन विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार की परते जैसे ही खोलनी शुरू की तो संजीव पर मुसीबतों का पहाड़ ही टूट पड़ा। चार साल की नौकरी में ग्यारह बार ट्रांसफर का दंश संजीव को झेलना पड़ा। जब मंत्री और भ्रष्ट अधिकारियों का मन इतने से नहीं भरा तो अनाप-शनाप, आधारहीन और तथ्यहीन आरोप लगाकर संजीव को संस्पेंड कर दिया। अपने को बेगुनाह सिद्व करने के लिए संजीव को कोर्ट का सहारा लेना पड़ा लेकिन राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल के हस्तक्षेप के बाद ही वे सेवा में बहाल हो सके। ये है हमारी व्यवस्था जहां ईमानदारी, निष्पक्षता, सच्चाई, समाज सेवा और राष्ट्रप्रेम की कसमें तो बहुत खाई और खिलाई जाती हैं लेकिन उन कसमों का सम्मान नहीं होता।**

अमिताभ और संजीव की तरह ही बेदाग छवि वाले कई शासकीय अधिकारी-कर्मचारी हाशिए से बाहर कर दिए जाते हैं। गत वर्ष बरेली, उत्तर प्रदेश में एसपी ट्रैफिक के पद पर तैनात 1990 बैच की पीपीएस अधिकारी कल्पना सक्सेना को सूचना मिली की उनके मातहत पुलिसकर्मी ट्रक वालों से अवैद्य वसूली कर रहे हैं तो उन्हें रंगे हाथों पकड़ने पहुंची तो उनको उनके ही मातहतों ने ही जीप के साथ एक-डेढ किलोमीटर घसीट डाला। बुरी तरह से घायल और चोटिल कल्पना को अस्पताल में भर्ती करवाया गया और कार्रवाई के तौर पर पांच पुलिसवालों को संस्पेंड कर दिया गया। अगर कल्पना उनके गुनाहों में शामिल होती तो उन्हें कोई परेशानी न होती।

वर्ष 1985 बैच के बिहार कैडर के आईएएस अधिकारी जी. कृष्णैया की 5 दिसंबर 1994 को जिस तरह सरेआम हत्या कर दी गई थी उसे अब तक भुलाया नहीं जा सकता है। कृष्णैया ने आंनद मोहन सिंह और उनकी पत्नी लवली आनंद सिंह के नेतृत्व में प्रदर्शन करने वाली भीड़ को रोकने का प्रयास किया था। माफिया छवि वाले आनंद मोहन सिंह को ये बात नागवार गुजरी और उन्होंने अपनी ड्यूटी निभा रहे युवा अधिकारी को मरवा डाला। हाल ही में महाराष्ट्र के नासिक जिले के एडीएम यशवंत सोनावणे का प्रकरण और उनकी ही तरह वर्ष 2005 में इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन के युवा, कर्मठ और ईमानदार अधिकारी मंजुनाथ षड़मुगम की हत्या भी मिलावटखोर पैट्रोल पंप मालिक व उसके गुर्गों ने कर दी थी। वर्ष 2003 में नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इण्डिया के इंजीनियर सत्येन्द्र नाथ दुबे की हत्या भी नेता-माफिया गठजोड़ ने करवाई थी। उत्तर प्रदेश के वर्ष 1994 बैच के पीपीएस अधिकारी शैलेन्द्र सिंह को भी इसी प्रकार के तत्वों के कारण अपने पद से इस्तीफा देना पड़ा था। वर्ष 2004 में शैलेन्द्र की नियुक्ति वाराणसी में एसटीएफ यूनिट में हैड के तौर पर हुई। सेना से एलएमजी चुराकर उसे पूर्वांचल के अपराधियों को बेचे जाने के कांड का भंडाफोड़ करना ही शैलेंद्र को भारी पड़ गया। तत्कालीन प्रदेश सरकार से लेकर मीडिया तक सभी को भली भांति मालूम था इस सारे कांड में मऊ के विधायक का हाथ था। शैलन्द्र ने अपनी जांच रिपोर्ट में विधायक पर पोटा लगाने की सिफारिश की थी। तमाम सुबूतों और गवाहों के बावजूद सरकार ने उन पर दबाव डालना शुरू कर दिया और वाराणसी की एसटीएफ यूनिट बंद कर दी गई। उसूल के पक्के शैलेंद्र ने अपना इस्तीफा राज्यपाल को सौंप दिया। जब किसी अपराधी, भ्रष्ट और रसूखदार के सामने किसी ईमानदार अधिकारी के खिलाफ कार्रवाई होती है तो बेईमानों और भ्रष्टों का हौंसला बुलंद होता है।

माना जाता है कि विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका और स्वतंत्र प्रेस लोकतंत्र के आधार स्तंभ हैं, लेकिन जब विधायिका के क्रियाकलापों में अन्य तीनों संस्थाएं बराबर की भागीदार हो जाती हैं तो हालात बिगड़ने का डर रहता है। हमारी शासन व्यवस्था में सारी शक्तियां विधायिका को दी गई हैं। ऐसे में निजी स्वार्थों को साधने के लिए कार्यपालिका और न्यायपालिका विधायिका के गुनाहों में बराबर हिस्सेदारी निभाने लगी है। कार्यपालिका पूरी तरह से राजनीतिक आकाओं और मंत्रियों की मर्जी पर काम करती है। ऐसे में टी.एन. शेषन, जी.आर. खैरनार, किरण बेदी, आर.वी. कृष्णा, अमिताभ ठाकुर, कल्पना सक्सेना, संजीव चर्तुवेदी, मंजुनाथ, यशवंत सोनावणे, शैलेन्द्र सिंह, सत्येन्द्र दुबे, जी. कृष्णैया और उन जैसे दूसरे अधिकारी व्यवस्था की आंखों में चुभते हैं। व्यवस्था को अखंड प्रताप सिंह, नीरा यादव, गौतम गोस्वामी, अरंविद जोशी, टीनू जोशी आदि जैसे महाभ्रष्ट अधिकारी बेहतर लगते हैं। ऐसे वातावरण में अधिकारी आकाओं की जी-हजूरी में ही भलाई समझते हैं और काली कमाई, मलाईदार पोस्टिंग का तोहफा पाते हैं। यह स्वस्थ लोकतंत्र की निशानी नहीं है।

स्वतंत्र पत्रकार, बी-96,
इंदिरा नगर, लखनऊ-226016 (उ.प्र.)

क्या भ्रष्टाचार मिट पाएगा?

डॉ. हीरालाल छाजेड़

जिस लोकपाल बिल के लिए अन्ना को आमरण अनशन पर बैठना पड़ा यह लोकपाल बिल 43 साल में संसद में पारित नहीं हो सका। विभिन्न पार्टियों की सरकारों व प्रधानमंत्रियों के बदलने के साथ-साथ आठ बार इस बिल को संसद में रखा गया। किन्तु कभी भी लोकपाल बिल परवान नहीं चढ़ सका। लेकिन सांसदों का वेतन बढ़ाने वाला बिल 43 मिनट में पारित हो गया। यह एक अजूबा ही है।

लोकपाल बिल एक बार फिर इस विधेयक के रूप में पारित हो जाने की संभावना बढ़ गयी है। अन्ना हजारे द्वारा शुरू की गयी यह मुहिम सराहनीय है। इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती, परन्तु क्या सिर्फ लोकपाल बिल पास हो जाने मात्र से इस देश को भ्रष्टाचार से सदा-सदा के लिए मुक्ति मिल जाएगी? बिल पास हो जाने के बाद क्या हमारे नेताओं, सांसदों और मंत्रियों को रातोंरात फरिश्ता व नैतिक बना देगा?

लोकपाल बिल का एक मात्र लक्ष्य उन शिकायतों की जांच करना है, जिनका संबंध भ्रष्टाचार निरोधक कानून 1988 के उल्लंघन से हो। यह विधेयक सिर्फ भ्रष्टाचार के मामलों की जांच करेगा और वह भी प्रधानमंत्री, मंत्री और सांसदों की। क्या हमारे इन बाकी लोगों पर लगा भ्रष्टाचार के आरोपों की जांच के लिए कोई कानून और सजा का प्रावधान नहीं होगा?

आम जनमानस, इस विधेयक को जादू की छड़ी मानकर चल रहा है क्योंकि उसे सभी राजनीतिक पार्टियों पर से विश्वास उठ गया है। यदि सरकार में भ्रष्ट नेताओं को सजा दिलाने की इच्छाशक्ति होती तो क्या अपने भ्रष्ट नेताओं के अनैतिक आचरण पर पर्दा डालने का काम करती? इस देश में मंत्रिमंडल नहीं ताकतवर ब्यूरोक्रेसी का सिंडीकेट चलाता है। क्या बिना नौकरशाही के मंत्री भ्रष्टाचार कर सकता है? देश में व्याप्त भ्रष्टाचार की रीढ़ तो देश की नौकरशाही है। इस नौकरशाही के आगे सभी बेबस है।

पहली बार मंत्री बनने पर मंत्रियों के भ्रष्टाचार के रास्ते कौन खोलता है? मधु कोड़ा, शिबु सोरेन, ए राजा क्या बिना नोकरशाही के मिलीभगत के अरबों-खरबों का खेल कर सकते थे? नेताओं और नौकरशाही का यह खतरनाक गठबंधन देश को दीमक की तरह चट कर रहा है। नेताओं को फिर भी मतदाताओं का, मीडिया का और पार्टी का थोड़ा बहुत डर होता है लेकिन इन बड़े मंत्रालयों में बैठी नौकरशाही को किसी का डर नहीं है।

भारतीय समाज की विडम्बना है कि वह दोहरे मापदंडों पर जीता है। भ्रष्टाचार के खिलाफ हर आदमी अपना पूरा समर्थन दे रहा है। अन्ना हजारे के समर्थन में और भ्रष्टाचार के खिलाफ हल्ला बोल रहे व्यवसायी, वकील, अभिनेता, डॉक्टर, इंजीनियर, मीडियाकर्मी और आम नागरिक सभी भ्रष्टाचार नामक रोग से परेशान जरूर है, लेकिन क्या खुद भी इसमें लिप्त नहीं हैं? पैसा देकर टेन्डर लेने वाला इंजीनियर क्या भ्रष्ट नहीं। ठेकेदार से रिश्वत लेकर घटिया निर्माण सामग्री पर आंख मूंदने वाला इंजीनियर क्या भ्रष्ट नहीं है। व्यवसायी क्या भ्रष्ट नहीं है? करोड़ों रुपये का नगद भुगतान कर आयकर बचाने वाला व्यवसायी क्या भ्रष्ट नहीं? बहू को दहेज के लिए जिंदा जलाने वाले वकील क्या भ्रष्ट नहीं हैं? मरे हुए मरीज को वेन्टीलेटर पर रखकर अपना मीटर घुमाने वाले डॉक्टर क्या भ्रष्ट नहीं है? बिना आवश्यकता के रोगी की सर्जरी कर पैसा लूटने वाला सर्जन क्या भ्रष्ट नहीं है? बेलेंससीट में हेराफेरी करने वाले चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट क्या भ्रष्ट नहीं हैं? किस-किस व्यवसाय का कच्चा चिट्ठा खोलें। क्या लोकपाल बिल पास हो जाने मात्र से सभी का सुधार हो पायेगा? लोकपाल बिल से ज्यादा जरूरी आमजन में देश के प्रति उसकी नैतिक जिम्मेदारी का अहसास कराने और जागरूक करने की जरूरत है। भ्रष्टाचार से लड़ाई सिर्फ विधेयक के दम पर नहीं जीती जा सकती। इसके लिए समाज के प्रत्येक वर्ग की सोच को बदलने और उन्हें जागरूक करने के लिए भी आंदोलन शुरू करना होगा। केवल इंडिया गेट पर कैंडल मार्च करने से परिवर्तन नहीं आयेगा। इसके लिए अणुव्रत आंदोलन जैसे विराट अभियान की आवश्यकता पड़ेगी। अणुव्रत आंदोलन इसी कार्य में लगा हुआ है।

जयश्री टी. कंपनी, चौधरी बाजार
नन्दीशाही, कटक-1 (उड़ीसा)

क्या लोकपाल बिल पास हो जाने मात्र से सभी का सुधार हो पायेगा? लोकपाल बिल से ज्यादा जरूरी आमजन में देश के प्रति उसकी नैतिक जिम्मेदारी का अहसास कराने और जागरूक करने की जरूरत है। भ्रष्टाचार से लड़ाई सिर्फ विधेयक के दम पर नहीं जीती जा सकती। इसके लिए समाज के प्रत्येक वर्ग की सोच को बदलने और उन्हें जागरूक करने के लिए भी आंदोलन शुरू करना होगा। केवल इंडिया गेट पर कैंडल मार्च करने से परिवर्तन नहीं आयेगा। इसके लिए अणुव्रत आंदोलन जैसे विराट अभियान की आवश्यकता पड़ेगी। अणुव्रत आंदोलन इसी कार्य में लगा हुआ है।

क्षणिकाएं

• सेहत

भ्रष्टाचार
एक ऐसा
वृक्ष है
जिस पर
बारह मास
फल लगते हैं
यदि
भ्रष्टाचार के फल
खाना है
तो भ्रष्टाचार का
पौधा उगाओ
फिर इसके
फल खाकर
अपनी सेहत बनाओ

• सपोर्ट

एक भ्रष्टाचारी
दूसरे भ्रष्टाचारी से
जब भी मिलता है
तो दोनों ही
आपस में
रिश्तों की
वकालात करते हैं
अर्थात दोनों होते हैं
आपस में जाति भाई
अतः खाते हैं
दोनों ही
माखन-मिश्री
दूध-मलाई
जब भी उन पर
भ्रष्टाचार का
कोई आरोप
लगता है
एक दूसरे को
सपोर्ट करता है।

• स्तर

भ्रष्टाचार की
न होती है
कोई भी सीमा यार
जो जहां
जिस स्तर पर
बैठा है
वो कर रहा है
भ्रष्टाचार

• सगा

एक भ्रष्टाचारी
दूसरे भ्रष्टाचारी को
देता नहीं
कभी दगा
बनकर रहते हैं
एक दूजे का सगा।

गज़ल

आगे रहकर जो टकराव की बात करते हैं,
खुद अपने ज़मीर से विश्वासघात करते हैं।

कानून भी कितना बेखबर है देखिए जनाब,
आतंकवादी घर में आकर मात करते हैं।

गीता पढ़ो, कुरआन पढ़ो और पढ़ो अरदास,
पैदा इसमें धर्म-मज़हब की जात करते हैं।

हिन्दू मुसलमान तो बन जाते हैं सभी मगर,
इंसानियत पर यार कुठारघात करते हैं।

दिखे जहां अपना फायदा ही फायदा दोस्त,
प्रायः उनसे आजकल वे मुलाकात करते हैं।

जो कमाई दौलत गरीबों का खून चूसकर,
उसी का कुछ हिस्सा यहां जकात करते हैं।

मिल जायेंगे ऐसे लोग बहुत सारे यारो,
इंसानियत में पैदा आदमजात करते हैं।

पूजे जाते हैं वे लोग यहां जो सूखे में,
तेल निकालने की यार खुराफ़ात करते हैं।

रमेश कैसे रह लें सुख-शांति से जहां में,
इसलिए उसे गिराने की खुराफात करते हैं।

दोहे

इस दौर का देखे जी, कमाल साफ-साफ,
सच को मिलती है सजा, झूठे को इंसाफ़।

पैसों की दास पीढ़ी, पैसा है भगवान,
मिले जहां से भी उसे, दे वहीं पर ध्यान।

यूं तो उनमें गुण नहीं, बने गुणों की खान,
ऐसो का ज़माना है, समझे भाई जान।

• रमेश मनोहरा
शीतला गली, जावरा जिला- रतलाम (म.प्र.)

www.terapanthinfo.com

अहिंसा और अनुकम्पा-३

मुनि सुखलाल

1 अप्रैल 2011। अणुव्रत ग्राम भारती संस्थान में अहिंसा यात्रा का प्रवास। चारों ओर महिला विद्यापीठ के स्कूल, कॉलेज, हॉस्टल तथा अन्य भव्य भवन खड़े हैं। कुछ-कुछ हरियाली भी लहरा रही है। मध्यमाकार के कुछ वृक्ष भी खड़े हैं। वातावरण अत्यन्त मनोरम बन गया है। पर मैं सन् 1982 की बात सोच रहा हूं जब अपने आचार्य काल के 50वें वर्ष को उपलक्षित कर आचार्य तुलसी मेवाड़ में यात्रायित थे। तब इस धरती पर मकान क्या घास का कोई तिनका भी दीख पाना कठिन था। आचार्यश्री इस क्षेत्र के विधायक बिहारीलाल पारीक के उत्कट आग्रह पर उनके गांव बांकली पधारे थे। पारीकजी आचार्यश्री के व्यक्तित्व से इतने प्रभावित हुए कि अणुव्रत के रंग में रंग गए। यह कोई प्रकृति का संयोग था कि कुछ समय बाद उनके पैर की हड्डी का फ्रेक्चर हो गया, अतः वे भीलवाड़ा के हॉस्पिटल में इलाज के लिए दाखिल हुए। संयोग से उस समय मेरा चातुर्मास भी भीलवाड़ा में ही था। मुझे जब यह जानकारी मिली तो मैं कई दिनों तक उनसे हॉस्पिटल में मिलता रहा।

एक दिन उन्होंने कहा मेरी लड़की वनस्थली विद्यापीठ में पढ़ती है। मेरे पास तो कुछ साधन है अतः अपनी लड़की को वनस्थली विद्यापीठ में पढ़ा सकता हूं। पर मेरे चुनाव क्षेत्र में ऐसी हजारों लड़कियां हैं जो अर्थाभाव में वनस्थली तो क्या गांव के स्कूल का दरवाजा भी नहीं देख पाती। मेरे गांव के पास 200 बीघा सरकारी जमीन पड़ी हुई है। मैं चाहता हूं उस जमीन पर वनस्थली जैसा कोई विद्यालय खड़ा करूं। मैंने सुझाव दिया कि उस विद्यालय का नाम अणुव्रत महिला विद्यापीठ रखा जाये तथा गांव के विकास के लिए वहां अणुव्रत ग्राम भारती संस्थान खड़ा किया जाये तो एक रचनात्मक काम हो सकता है। पारीकजी का मानस इतना सकारात्मक था कि तत्काल उन्होंने मेरे सुझाव को स्वीकार कर लिया तथा स्वस्थ होते ही अणुव्रत महिला विद्यापीठ तथा अणुव्रत ग्राम भारती की रूपरेखा तैयार कर आचार्य तुलसी के सामने प्रस्तुत कर दी। आचार्य तुलसी ने उनकी योजना को पसंद ही नहीं किया अपितु उनके आग्रह पर मुझे भी चार वर्षों तक बांकली के आसपास के गांवों में चातुर्मास करने का निर्देश किया।

इसी बीच एक दुःखद प्रसंग आया कि बिहारीलाल का असामयिक निधन हो गया। बांकली का सारा भविष्य धुंधला गया। पर अणुव्रत कार्यकर्ता मोहन भाई, कनकमल जैन तथा बच्छराज सेठिया आदि के सघन प्रयासों से संस्थान को नवजीवन मिला उसी का परिणाम है कि आज वहां न केवल आसपास के 45 गांवों की लड़कियां ही पढ़ने आती हैं अपितु महिला बी.एड. कॉलेज भी चल रहा है। छात्राओं को बस के द्वारा लाने-पहुंचाने की व्यवस्था के साथ-साथ उनको पाठ्य-सामग्री एवं गणवेष भी संस्थान द्वारा निःशुल्क प्रदान किया जाता है। निश्चय ही इससे इस क्षेत्र के सामाजिक जीवन में भी एक नया परिवर्तन आया है। आचार्य महाश्रमणजी ने जंगल में मंगल करने वाले इस प्रयास की सार्थकता पर मुहर लगाते हुए कार्यकर्ता शक्ति को आह्वान किया कि महिला विद्यापीठ के विस्तार को सुनिश्चित किया जाये।

इस अवसर पर साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने अपने उद्‌बोधन में कहा आचार्य तुलसी के अमृत महोत्सव के अवसर पर शिक्षा के क्षेत्र में रचनात्मक कार्यों को गतिशील बनाने का निर्णय किया गया था, अब 25 वर्ष के बाद आचार्य महाश्रमण के 50वें वर्ष के उपलक्ष्य में मनाये जाने वाले अमृत महोत्सव के अवसर पर उस संकल्प को और आगे बढ़ाया जाये तो वह परम्परा जन कल्याण के पथ को आलोकित कर सकती है। यद्यपि हर कार्य के सामने बाधाएं तो आती हैं पर यदि संकल्पपूर्वक कोई कार्य किया जाये तो बाधाओं को पार भी किया जा सकता है।

बांकली गांव के नाम पर टिप्पणी करते हुए उस समय युवाचार्य महाप्रज्ञ ने कहा था कि यह गांव बांका तो दिखाई नहीं देता फिर इसका नाम बांकली क्यों रखा गया है। आचार्यश्री की उस टिप्पणी को ध्यान में रखकर ही बांकली का नाम विनयपुरम् कर दिया गया है। यद्यपि पिछले कुछ वर्षों में इस संस्थान को अनेक अभावों से जूझना पड़ा, पर इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस संस्थान ने इस क्षेत्र की सैकड़ों गरीब वर्ग की लड़कियों को शिक्षा के साथ जोड़ा है तथा उनके भविष्य को उज्जवल बनाया है। आचार्य महाश्रमण के आगमन से कार्यकर्ताओं के उत्साह में वृद्धि हुई है अब संस्थान के सामने से निराशा का कुहासा हट गया है। आवश्यकता इसी बात की है कि साहस के साथ आगे बढ़ कर समुचित कार्यशैली के साथ इसके भविष्य को संवारने का प्रयत्न किया जाये। इससे अहिंसा यात्रा की उपलब्धियों में अणुव्रत ग्राम भारती तथा अणुव्रत महिला विद्यापीठ का एक नया अध्याय जुड़ जायेगा।

कमर दर्द और प्रेक्षा चिकित्सा :3:

मुनि किशनलाल

अनुप्रेक्षा : सूक्ष्म भस्त्रिका करते समय जिस आसन में बैठे थे उसी स्थिति में अपने आपको बनाए रखें। अपने चित्त को दर्द के स्थान पर केन्द्रित करके मन ही मन सुझाव दें– ''मेरी कमर का दर्द जा रहा है।'' इस वाक्य को मन ही मन बार–बार दोहराएं। आपको स्वयं आश्चर्य होगा कि आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता जो गफलत के कारण शान्त, शिथिल पड़ी हुई थी वह सक्रिय हो गई है और आपका दर्द दूर होता जा रहा है।

जप

अब उसी अवस्था में बैठे हुए ध्यान के अन्तर्गत ''ह्रौं'' का जप शुरू करें। जप मन ही मन करें। बाहर आवाज आने की आवश्यकता नहीं है। इस प्रयोग को 10 मिनट तक जारी रखें।

मुद्रा

अब आसन बदलें। बाएं पैर की एड़ी को गुदा एवं मुत्रेन्द्रिय के मध्य के रिक्त स्थान पर लगाएं। दाएं पैर को ऊपर उठाकर बाएं पैर के ऊपर वाले टखने पर टिकाएं। मेरुदण्ड सीधा रहे। अब अनामिका अंगुली और अंगूठे को सटाकर दबाव दें। यह मुद्रा दोनों हाथों से बनाकर हाथों को घुटनों पर स्थित करें। इस मुद्रा को 15 मिनट तक बनाए रखें। अंगूठे से अनामिका पर दबाव जारी रखें। इसे सूर्य मुद्रा कहते हैं।

सूर्य मुद्रा

लाभ :

1. शक्ति का विकास होता है।
2. ऊर्जा पूरे शरीर मे फैलती है।
3. सन्तुलन बनने से दर्द के स्थान पर लाभ महसूस होता है।
4. शरीर का संतुलन बनता है।
5. वजन घटता है। तनाव और मोटापे में कमी आती है।

तप

गरिष्ठ व तली हुई वस्तुओं का सेवन वर्जित है। भोजन में चीनी और चिकनाई को बन्द कर दें। अगर यह न कर सकें तो इतना जरूर करें कि इनकी मात्रा अधिक न हों। भोजन का संयम किसी भी बीमारी में लाभदायक होता है। स्वस्थ जीवनशैली व संयम का पालन करें।

मुद्रा – शंख मुद्रा

1. बाएं हाथ के अंगूठे को दाएं हाथ की हथेली में स्थापित करें। मुट्ठी बंद करें।
2. शेष अंगुलियों को दाहिने हाथ के अंगूठे से स्पर्श कराएं।
3. उकडू आसन या समपादासन में यह प्रयोग करें। सुखासन और वज्रासन में भी प्रयोग किया जा सकता है।

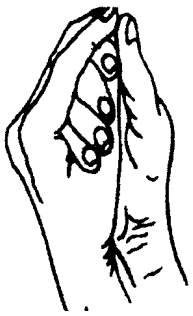

शंख मुद्रा

4. प्रारम्भ में यह मुद्रा 16 मिनट तक की जाए। धीरे–धीरे अभ्यास बढ़ाकर 48 मिनट तक कर सकते हैं।

लाभ :

1. चारों अंगुलियों से अग्नि तत्त्व का योग होता है। शरीर में कहीं भी दर्द होने से लाभ होता है
2. वाणी दोष दूर होते हैं। ध्वनि मधुर होती है।
3. नाभि केन्द्र व्यवस्थित होता है।
4. पाचन क्रिया सुधरती है।

वायु मुद्रा

1. वज्रासन में दोनों घुटने मोड़कर बैठें।
2. तर्जनी अंगुली को मोड़कर अंगूठे के मूल में स्थापित करें।
3. शेष अंगुलियों को सीधा रखें।

वायु मुद्रा

लाभ

1. मेरुदण्ड के दोष के कारण होने वाला दर्द कम होता है।
2. प्राण सन्तुलित होता है।
3. वायु विकार से होने वाला दर्द दूर होता है।
4. कमर दर्द में विशेष लाभकारी है।

www.terapanthinfo.com

कहानी

नरक में चुनाव

जसविंदर शर्मा

दो बार अपने राज्य के मुख्यमंत्री रह चुके नेता सज्जन कुमार अभी कुछ महीने पहले केन्द्र में केबिनेट स्तर के मंत्री बने थे। हर तरफ से खजाने का मुंह उनकी तरफ खुल गया था। उनके स्विस बैंकों के लेखों में दनादन माया बढ़ती जा रही थी। राजधानी के गलियारों में उनका रौब-रुतबा बढ़ गया था। जहां उनके इतने दोस्त बने वहां दुश्मनों की भी कमी नहीं थी। उन्हें एक तरफ करके खुद आगे आने के लिए कई लोग लालायित थे।

चाल चलने वाले आखिरकार कामयाब हो ही गए। सज्जन कुमार पर कई जानलेवा हमले हुए मगर हर बार वह चमत्कारिक रूप से बच निकलते मगर बकरे की मां कब तक खैर मनाती। मौत उनके आसपास मंडराती रही।

एक दिन नेताजी अपने हलके से दल-बल सहित लौट रहे थे कि कुछ आत्मघाती लोगों की कारें उनके काफिले से भिड़ गईं। उसी सड़क दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई। उनका शरीर तो खैर देश की अमानत था सो हर तरफ शोक मनाया जा रहा था। नेता जी की आत्मा को देवदूतों ने देवनगरी के बाहर के गेट पर ला पटका था।

द्वार पर एक सीनियर अधिकारी ने नेताजी का स्वागत करते हुए कहा, 'सर, माफ कीजिएगा, धरती पर आपके रुतबे के अनुरूप यहां आपका स्वागत तो नहीं किया जा सकेगा मगर आप जैसे वीआईपी लोगों के लिए हमारे इस लोक के संविधान में एक विशेष प्रावधान है। आप जैसे समाजसेवियों को मृत्यु के बाद स्वर्गलोक में आने पर एक विकल्प दिया जाता है।'

नेताजी की बांछें खिल गई। मुस्कराते हुए उन्होंने कहा, 'जल्दी बताएं श्रीमान, मैं तीन दिनों से भूखा-प्यासा हूं। जल्दी से स्वर्गलोक के द्वार खुलवाएं। नृत्य और मदिरा का इन्तजाम करवाएं। और बताएं कि यहां मुझे क्या क्या विशेष अधिकार मिलेगें।'

देव अधिकारी ने विनम्रता से कहा, 'सर, आप तो धरती पर साक्षात राजा जैसा जीवन बिताकर आए हैं। यहां भी आपको राजसी सत्कार दिया जाएगा। आपको आपकी मर्जी से ही स्वर्ग या नरक की अलॉटमेंट दी जाएगी। यह आप की खुशी पर निर्भर करता है कि आपको क्या पसन्द है। आपको एक रात नरक में गुजारनी है और फिर अगला एक दिन स्वर्ग में। फिर उसके बाद आप बता देना कि पक्के तौर पर आपने कहां रहना है।'

नेताजी तपाक से बोले, 'सच में क्या ऐसा मुमकिन है। मैने तो सुना है कि कर्मों के अनुसार ही जन्नत या दोजख के दरवाजे खुलते हैं मगर जनाब आपकी बातों ने तो मुझे निहाल कर दिया। अगर आप मेरी माने तो मैने अभी से ही फैसला ले लिया है। मुझे स्वर्ग में भेज दो।'

अधिकारी ने थोड़ा सख्त लहजे में कहा, 'आई एम सॉरी, सर। यूं हड़बड़ी में फैसला लेना ठीक नहीं और फिर यहां के कानून की पालना करना जरूरी है। आपको पहले एक दिन नरक में रहना होगा और फिर अगले दिन स्वर्ग में रात बितानी होगी और फिर उसके बाद आपको सोचने विचारने का समय दिया जाएगा, फिर आपकी मर्जी के मुताबिक आपका निवास स्थान आबंटित कर दिया जाएगा। यह औपचारिकता निभानी बहुत जरूरी है क्योंकि एक बार नरक या स्वर्ग में जगह दे देने के बाद चित्रगुप्त महोदय फिर किसी की शिकायत पर गौर नहीं करते। देखने में आया है कि लोगों के मन बहुत विचलित होते हैं। बहुधा लोग स्वर्ग चुन लेने के बाद अर्जी लगा देते हैं कि उन्हें नरक में स्थान चाहिए और ऐसे प्रार्थना पत्र नष्ट कर दिए जाते हैं, उन पर कोई गौर नहीं किया जाता। मैं नहीं चाहता कि आपको भी अपने फैसले पर क्षोभ हो।'

देवदूत ने थोड़ी सांस लेकर कहा, 'सर, आपको हैरानी हो रही है मगर यह सत्य है। धरती पर पता नहीं किन खब्ती लोगों ने अफवाहें फैला दी है कि अच्छे कर्मो के कारण स्वर्ग मिलता है और बुरे कामों के कारण नरक की यातना भोगनी पड़ती है। ऐसी बात नहीं है सर। नरक और स्वर्ग व्यक्ति की रुचि, मानसिकता और चुनाव पर आधारित है। कोई जबरदस्ती वाली बात नहीं है यहां। सच माने तो यहां असली जनतंत्र है। बस एक बात है कि एक बार चुन लेने के बाद आदमी अपना विकल्प नहीं बदल सकता।'

नेता जी अजीब-सी मनस्थिति में पहुंच गए थे। ऐसा कुछ उनके लिए समझ से बिल्कुल परे था। धरती के हर कानून को वह अपने या अपने लोगों के पक्ष में

कर लेते थे मगर यहां उनके साथ क्या घटने वाला है यह सोचकर उनका कलेजा कांप उठा। हर तरफ अनिश्चय व भय वाली स्थिति थी।

सज्जन कुमार को स्वर्ग या नरक में से एक चुनने का अधिकार मिल तो गया मगर वह इस लोक की वास्तविक रणनीति समझ नहीं पा रहे थे। अगर हर किसी को उसकी मर्जी के मुताबिक जगह मिल जाएगी तो फिर स्वर्ग और नरक को चलाने का क्या तुक है। धरती पर पाप और पुण्य का क्या औचित्य रह जाएगा।

देवदूत नेता जी को एक विशाल लिफ्ट में लेकर नीचे बहुत नीचे उतरते गए। नेताजी का दिल यह सोचकर कांप रहा था सच में ही नरक को रसातल की संज्ञा दी गई है। काफी देर नीचे उतरने के बाद नरक का गेट उनके सामने था। नरक का स्वागती गेट देखकर उनका मन खिल उठा। वह सोचने लगे कि अगर नरक ऐसा है तो स्वर्ग तो न जाने कितना आकर्षक और लुभावना होगा।

सामने का दृश्य देखकर नेता जी गद्‌गद्‌ हो गए। एक बड़ा-सा हरा-भरा गोल्फ का मैदान था। थोड़ी ही दूरी पर एक सुन्दर क्लब हाउस था। उसके पास खड़े नेता जी के कई जिगरी दोस्त नजर आ रहे थे जिनके साथ नेता जी ने राजनीति की दलदल में गैर-कानूनी ढंग से करोड़ों कमाए थे।

हरेक व्यक्ति बेहद खुश नजर आ रहा था। आसपास चुलबुली शोख और बिंदास महिलाएं भी इतरा रही थी। सारा कुछ उनकी जवानी के दिनों के समान ही माहौल था जब वह क्लबों में रात-रात भर मौज-मस्ती करते रहते थे।

उन लोगों ने बड़ी गर्म-जोशी से नेताजी को गले लगाया व उनकी शान में कसीदे कहे। वे लोग आम आदमी के खर्च पर की गई एय्याशियों के किस्से सुना-सुनाकर कहकहे लगाते रहे। क्लब में कई प्रकार के मनोरंजक खेल हुए, डांस किए गए, लजीज व्यंजन और उमदा शराब और कबाब परोसा गया।

नेता जी तो यह सब पा कर मस्त ही हो गए। कहां तो उन्हें अपनी मौत का गम खाए जा रहा था। अभी-अभी तो दिल्ली की सुनहरी गद्‌दी पर काबिज हुए थे। अभी तो विदेशों में ऐशो-इशरत का रास्ता खुला था और तभी मौत ने आ घेरा था। मगर नरक में आज का यह दिलकश मंजर देखकर सज्जन कुमार तृप्त हो गए। असमय मरने का सारा गम जाता रहा। वहां शैतान भी आया जो दिखने में बहुत फिराकदिल, खुशमिजाज और दोस्ताना था। उसने भी मस्त मन से नृत्य किया और कई प्रकार के गन्दे जोक्स सुनाए।

इतने सब में पता ही नहीं कब एक दिन गुजर गया। देवदूत नेताजी को लेने आ पहुंचा। सभी लोगों ने नेताजी को भरे गले से गुड बॉय कहा। देवदूत नेता जी को फिर उसी लिफ्ट में लेकर चला।

काफी देर तक बहुत ऊपर जाने के बाद स्वर्ग के मुख्यद्वार के सामने देवदूत ने नेताजी को स्वर्ग में एक दिन के लिए जाने के लिए कहा। स्वर्ग यूं तो बहुत ही बढ़िया जगह थी मगर नेताजी के स्वभाव और रुचि के अनुकूल वहां कुछ भी नहीं था। सबसे ज्यादा खलने वाली बात तो यह थी कि कोई जाना-पहचाना व्यक्ति वहां नहीं था। सज्जन कुमार आज तक भीड़ में घिरे रहते तो ही उन्हें अपना जीवन सार्थक लगता था। स्वर्ग के अनजान माहौल में एक पल में ही उनका दम घुटने लगा था।

स्वर्ग में एक अपूर्व नीरस शांति थी। नेताजी को सारा मामला बहुत बोर लगा। बादलों पर इतराते प्रसन्न मुद्रा में ध्यान पर बैठे लोगों को देख-देखकर बहुत ही कष्टपूर्ण ढंग से नेता जी का एक दिन बीता।

देवदूत के साथ नेताजी वापिस मुख्य कार्यालय में लौटे। एक फॉम पर उन्हें अपना विकल्प चुनने के लिए कहा गया। नेताजी ने कूटनीति से यह कहते हुए नरक में जाने की इच्छा व्यक्त की, 'सोचकर तो यही चला था कि स्वर्ग में रहकर ऐश करूंगा मगर नरक में मेरे साथी भी हैं और मस्ती का माहौल भी है। स्वर्ग वैसे तो बहुत अच्छी जगह है मगर मुझे लगता है कि मैं नरक में ही रह कर खुश रह सकूंगा। कृपया मुझे नरक में स्थान दे दिया जाए। सज्जन कुमार की अर्जी मंजूर कर ली गई। नरक मिलने की खुशी में वह झूम उठे।

खैर, उसी लिफ्ट से देवदूत नेताजी को नरक द्वार तक छोड़ गया। जब नेताजी नरक के गेट से अन्दर दाखिल हुए तो वहां का सारा नजारा बहुत बदला हुआ था। कहीं कोई गोल्फ का मैदान नहीं था, न ही क्लब और वह रंगीनियां। हर तरफ उजाड़ था, गन्दगी थी, लोग गन्दगी को बोरों में भर रहे थे और ऊपर से और कचरा व गन्दगी गिर रही थी। लोगों ने गन्दे फटे कपड़े पहने हुए थे।

तभी शैतान ने आकर नेता जी के कन्धे पर हाथ रखा। नेता जी ने बौखलाकर कहा, 'माफ करना जनाब, मुझे समझ नहीं आ रहा है कि माजरा क्या है। कल जब मैं यहां आया था तब यहां गोल्फ क्लब था, हमने खूब मस्ती की थी, शराब और कबाब की पार्टी थी मगर आज यहां सब कुछ दरिद्रमय है। मेरे सारे दोस्तों ने फटे कपड़े पहने हैं और वे कितने घृणित लग रहे हैं। बात क्या है?'

नरक के मुखिया शैतान ने अट्‌हास करते हुए कहा, 'बन्धु! धरती पर तुम भी तो यही सब करते रहते हो। चुनाव के आसपास लोगों को कैसे उल्लू बनाते हो। यहां नरक में लोागें की भीड़ जुटाने के लिए हमें भी यह सब करना पड़ता है। कल हम लोग नरक के पक्ष में आपका वोट लेने के लिए एक प्रकार का चुनावी प्रचार कर रहे थे। उसी का नतीजा है तुम जैसे मशहूर नेता ने हमे सेवा का मौका दिया। कल का सारा तामझाम आपको रिझाने के लिए था।'

नेता सज्जन कुमार को पहली बार महसूस हुआ कि धरती पर जब वे चुनावी प्रचार के दौरान जनता को सब्ज-बाग दिखाते थे और चुनावों के बाद उन्हें छलते थे तब जनता को भी कुछ-कुछ ऐसा ही लगता होगा।

5/2 डी, रेलविहार, मंसादेवी, पंचकुला-134109 (हरियाणा)

www.terapanthinfo.com

संस्मरण

हजारों विद्यालयों में अणुव्रत गीत का संगान

मुनि राकेशकुमार

ई. सन् 1969 में छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में मेरा चतुर्मास हुआ। मुंबई से होली चतुर्मास के बाद लगभग 800 किलोमीटर का विहार कर हम रायपुर पहुंचे। मुनि हर्षलाल और मुनि मिश्रीलाल उस समय मेरे सहयोगी संत थे। छत्तीसगढ़ की सीमा में प्रवेश करने के पश्चात् चतुर्मास के पूर्व लगभग एक मास राजनांदगांव, दुर्ग व भिलाई रहना हुआ। इन सभी स्थानों पर स्थानीय समाज की उदार भावना का दर्शन हुआ। प्रतिदिन के प्रवचनों में सैकड़ों की उपस्थिति रहती थी। तीनों ही स्थानों पर राष्ट्र के विशिष्ट व्यक्ति मिले। वे अणुव्रत के साथ भावनात्मक रूप से जुड़े। उनमें कई अणुव्रती भी बनें। छत्तीसगढ़ की सीमा में प्रवेश के साथ ही रायपुर के समाचार पत्रों में प्रवचनों और कार्यक्रमों से संवाद प्रकाशित होने शुरू हो गए थे। दुर्ग में अखिल भारतीय कांग्रेस पार्टी के वर्तमान कोषाध्यक्ष तथा राष्ट्र के प्रसिद्ध नेता श्री मोतीलाल बोरा निकट सम्पर्क में आए। वे प्रतिदिन व्याख्यान में उपस्थित रहते थे तथा प्रवचन के संवाद रायपुर के पत्रों में लिखकर भेजते थे। वे अणुव्रत के कार्यक्रम से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने केन्द्रीय सरकार में मंत्री पद पर रहते हुए भी दिल्ली तथा दिल्ली के बाहर कई बार अणुव्रत के कार्यक्रमों में भाग लिया।

भिलाई में उस समय एक दो तेरापंथी परिवार थे फिर भी रात्रि में आयोजित अवधान कार्यक्रम में लगभग 1000 की उपस्थिति थी। स्टील प्लांट के जनरल मैनेजर की प्रेरणा से यह कार्यक्रम बहुत सफल रहा। भिलाई से विहार कर रायपुर में चातुर्मास प्रवेश किया।

अणुव्रत अभियान को आगे बढ़ाने के लिए व्यापक जन सम्पर्क आवश्यक होता है। रायपुर में इसके लिए विशेष प्रयास नहीं करना पड़ा। वहां अपनी भावना और प्रेरणा से लोग स्वतः व्याख्यान में उपस्थित होने लगे तथा क्रमशः उनकी संख्या बढ़ती गई।

रायपुर शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र है। वहां विश्वविद्यालय है, अनेक महाविद्यालय है तथा सैकड़ों विद्यालय हैं। इसके अलावा विशिष्ट धार्मिक और सामाजिक संस्थाएं हैं। साधारणतया अन्य स्थानों पर साधु-साध्वियों के प्रवचन के लिए श्रावक लोग समय मांगने के लिए जाते हैं।

रायपुर में इस प्रकार के प्रयास की आवश्यकता नहीं पड़ी। शिक्षण संस्थाओं तथा अन्य संस्थाओं के कार्यकर्त्ता स्वयं समय मांगने के लिए आते तथा अपने यहां अणुव्रत का कार्यक्रम रखकर प्रसन्नता का अनुभव करते। जहां भी कार्यक्रम होता वहां के शिक्षक, प्राध्यापक या पदाधिकारी लेने व छोड़ने के लिए आते। अधिकतर बुद्धिजीवी लोग हमारे कार्यक्रमों में भाषण देना हो तो उपस्थित हो जाते हैं। पर प्रवचन श्रवण के लिए कम उपस्थित होते हैं। रायपुर में रविवार के दिन शिक्षक, प्राध्यापक व अन्य अनेक बुद्धिजीवी लोग उत्साह से प्रवचन का लाभ लेते थे। विश्वविद्यालय के उपकुलपति बंशीलाल पांडे कई बार प्रवचन श्रवण करने आए।

रायपुर पहुंचते ही अनेक समाजसेवी कार्यकर्त्ता मिले। उनमें भी केयूर भूषण का नाम विशेष उल्लेखनीय है। वे बाद में संसद् सदस्य भी बने। अणुव्रत के कार्य को आगे बढ़ाने में उनका विशेष सहयोग मिला। उन्होंने कई मोहल्लों में प्रवचन का कार्यक्रम रखा, जिससे स्थानीय जनता का व्यापक संपर्क बना।

एक दिन श्री केयूर भूषण के साथ राज्य के मुख्यमंत्री श्यामाचरण शुक्ल दर्शन करने आये। मैंने अणुव्रत के संबंध में उनको विस्तार से जानकारी दी। वे बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा मैं अणुव्रत के संबंध में थोड़ा-बहुत सुनता रहा हूं। पर मुझे आज व्यवस्थित जानकारी मिली है। अणुव्रत के कार्य को आगे बढ़ाने में मध्य प्रदेश सरकार की ओर से पूरा सहयोग रहेगा। मैंने कहा अणुव्रत के कार्य का शिक्षा के क्षेत्र से बहुत संबंध रहा है। यहां भी हम सबसे पहले उसी क्षेत्र में कार्य करना चाहते हैं, इसलिए स्थानीय शिक्षा अधिकारियों को सहयोग करने का आप निर्देश कर दें।

मुख्यमंत्री ने कहा यह तो हमारा ही कार्य है। सरकार भी नैतिक शिक्षा का कार्यक्रम आगे बढ़ाना चाहती है। पर नैतिक शिक्षा के नाम पर कुछ लोग साम्प्रदायिक शिक्षा देना चाहते हैं। यह उचित नहीं है। अणुव्रत असाम्प्रदायिक नैतिक आंदोलन है, उसके द्वारा संचालित किसी भी योजना में सरकार का पूरा समर्थन रहेगा। मुख्यमंत्री के निर्देश पर शिक्षाधिकारियों का ग्रुप मुझ से मिला। उनके साथ अणुव्रत और नैतिक शिक्षा पर विस्तार से परिचर्चा हुई। बाद में प्रश्नोत्तर का कार्यक्रम हुआ।

शिक्षाधिकारियों ने सहमति प्रकट करते हुए कहा विद्यालयों में अणुव्रत का कार्य शुरू करने से पहले प्रधानाचार्यों की एक सभा होनी चाहिए। वे परिचित और प्रभावित होंगे तभी यह कार्य व्यवस्थित रूप से आगे बढ़ेगा। शिक्षकों की रुचि और श्रद्धा के अभाव में हमारा निर्देश उपयोगी नहीं होगा। अधिकारियों के सुझाव के अनुसार नगर के विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की संगोष्ठी आयोजित की गई। गोष्ठी में नैतिक शिक्षा के महत्त्व की चर्चा करते हुए मैंने कहा विद्यार्थी शिक्षक के चरित्र से बहुत प्रभावित होते हैं। विद्यालय में उसका मानस जिज्ञासु और

ग्रहणशील होता है। वहां के वातावरण का उसके चरित्र पर गहरा प्रभाव पड़ता है। शिक्षकों को अन्य विषयों के अध्यापन के साथ विद्यार्थी के चरित्र निर्माण का विशेष ध्यान देना चाहिए।

अणुव्रत के आदर्शों का विवेचन करते हुए मैंने कहा बौद्धिक विकास के साथ भावनात्मक संतुलन और अनुशासन की आवश्यकता है। इसके लिए संयमप्रधान जीवनशैली का विकास होना चाहिए। अणुव्रत का घोष है-''संयम खलु जीवनम्'' संयम ही जीवन है। जीवन की हर प्रवृत्ति के साथ संयम का विकास जरूरी है। इस वक्तव्य के साथ अणुव्रत गीत का संगान किया गया। शिक्षकों के हाथ में अणुव्रत गीत के पत्र थे। उन्होंने भी साथ-साथ में गीत का संगान किया। शिक्षकों की जिज्ञासा पर गीत के प्रत्येक पद का विवेचन किया गया। गोष्ठी में प्रार्थना सभा में अणुव्रत गीत बोलने का निर्णय हुआ। हिन्दु-मुस्लिम, इसाई सभी धर्मों के शिक्षक कार्यक्रम में उपस्थित थे। इस निर्णय पर सबने प्रसन्नता प्रकट की। शिक्षकों का उत्साह देखकर शिक्षा अधिकारी भी बहुत प्रसन्न हुए। कुछ दिनों बाद राज्य के उप शिक्षा मंत्री भोपालराव पंवार रायपुर आये। वे मेरे से मिले। शिक्षा अधिकारी भी उनके साथ थे। शिक्षकों की गोष्ठी का संवाद सुनकर पंवार बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने शिक्षा अधिकारियों से कहा अणुव्रत गीत का संगान पूरे जिले के विद्यालयों में होना चाहिए। इसका एक परिपत्र आप शीघ्र प्रसारित करें। उस समय रायपुर जिला बहुत बड़ा था। आज का राजनांदगांव जिला भी उसके अन्तर्गत था। प्रधानाध्यापकों ने परिपत्र को बहुत सम्मान दिया तथा अपने विद्यालयों में अणुव्रत गीत का संगान प्रारंभ कर दिया। शिक्षकों की मांग के अनुसार शिक्षा विभाग और तेरापंथी समाज के सहयोग से हजारों पोस्टर व पेम्पलेट छपाए गए। उन पोस्टरों में आचार्य तुलसी के चित्र के साथ अणुव्रत गीत व विद्यार्थी अणुव्रत के नियम थे। शिक्षा विभाग की व्यवस्था से जिले के सभी स्कूलों में पोस्टर व पेम्पलेट भेजे गए। उन पोस्टरों व पेम्पलेट्स का सही उपयोग भी किया गया।

अणुव्रत गीत का प्रारंभ होने के बाद रायपुर तथा अन्य गांवों के कई प्रमुख नागरिक मिलने के लिए आये। उन्होंने इस कार्य के लिए हार्दिक प्रसन्नता प्रकट की। कुछ समय पश्चात् एक विशाल नैतिक शिक्षा सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें आठ-दस हजार विद्यार्थियों ने भाग लिया। मुख्यमंत्री श्यामाचरण शुक्ल ने भी उस आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। मुनि हर्षलालजी और मुनि मिश्रीलाल के भी वक्तव्य हुए। मैंने विद्यार्थी जीवन का महत्त्व बताते हुए विद्यार्थियों को अणुव्रत के आदर्शों को अपने जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी। उसके बाद विद्यार्थियों ने अणुव्रत गीत का सामूहिक संगान किया। उस समय सारा वातावरण अणुव्रतमय बन गया। विद्यार्थियों ने अणुव्रत की प्रतिज्ञाएं दोहराई।

मुख्यमंत्री शुक्ल ने कहा अणुव्रत का संदेश मानव मात्र के लिए कल्याणकारी है। यह जातिवाद और सम्प्रदायवाद की संकीर्णता से मुक्त है। जब तक राष्ट्र में संयम और अनुशासन का संस्कार नहीं जागेगा हमारी कोई भी योजना सफल नहीं हो सकती।

मैं शिक्षक समाज से कहना चाहता हूं अन्य शिक्षा के साथ विद्यार्थियों को नैतिक संस्कारों की भी प्रेरणा दें तथा अणुव्रत के कार्य को अपने विद्यालयों में आगे बढ़ायें। इस सम्मेलन में नगर के सैकड़ों प्रमुख व्यक्ति उपस्थित थे। सबने इस कार्य की मुक्त कंठ से सराहना की।

उन नागरिकों ने मुख्यमंत्री से कहा नैतिक शिक्षा और चरित्र निर्माण का यह प्रयत्न बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस कार्यक्रम में किसी भी संप्रदाय के व्यक्ति को कोई आपत्ति नहीं हो सकती। यह प्रयास निरन्तर आगे चालू रहना चाहिए। हर वर्ग के लोग क्रमशः अणुव्रत के साथ जुड़ते गये। उसके बाद अणुव्रत समिति का व्यवस्थित संगठन बनाया गया। उसके अन्तर्गत व्यापारियों व राज्य कर्मचारियों के कई कार्यक्रम आयोजित किये गये। उनमें कई लोग अणुव्रती बनें। चातुर्मास काल में प्रातःकालीन व्याख्यान के अलावा दोपहर और रात्रि में अणुव्रत से संबंधित कार्यक्रम आयोजित हुए। कई बार चिलचिलाती धूप में भी अन्य स्थानों पर प्रवचन करने गए। जब चतुर्मास की समाप्ति का समय निकट था तब कई स्थानों के अन्य सम्प्रदायों के लोग संघबद्ध होकर अपने क्षेत्र में आने का निवेदन करने आये। श्रावक समाज के सुझाव के अनुसार कुछ दिन उपनगरों में रहकर रायपुर के बाहर अन्य क्षेत्रों में जाने के

मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा अणुव्रत का संदेश मानव मात्र के लिए कल्याणकारी है। यह जातिवाद और सम्प्रदायवाद की संकीर्णता से मुक्त है। जब तक राष्ट्र में संयम और अनुशासन का संस्कार नहीं जागेगा हमारी कोई भी योजना सफल नहीं हो सकती।
मैं शिक्षक समाज से कहना चाहता हूं अन्य शिक्षा के साथ विद्यार्थियों को नैतिक संस्कारों की भी प्रेरणा दें तथा अणुव्रत के कार्य को अपने विद्यालयों में आगे बढ़ायें।

लिए विहार किया। जिन स्थानों में जाना होता वहां के विद्यार्थी अणुव्रत गीत का संगान करते हुए अगवानी करने आते। उनके साथ स्थानीय नागरिक भी होते। राजिम, महासमन्द आदि क्षेत्रों में चार-पांच दिन ठहरना हुआ। जहां भी जाना हुआ वहां विद्यालयों में दोपहर के प्रवचन का कार्यक्रम रहता। उन विद्यालयों में गुरुदेव के चित्र सहित अणुव्रत आचार संहिता के पोस्टर व्यवस्थित रूप से लगे हुए थे। रात्रि में नागरिकों के लिए प्रवचन का कार्यक्रम रहता जिसमें अणुव्रत के आधार पर संयमप्रधान जीवनशैली तथा नशामुक्ति के लिए सबको विशेष प्रेरणा दी जाती। लगभग 200 किलोमीटर का यह भ्रमण बहुत सफल और उपयोगी रहा।

उस वर्ष मर्यादा महोत्सव हैदराबाद होने वाला था। उसका समय निकट था। रायपुर का श्रावक समाज गुरुदेव का आगामी चातुर्मास रायपुर में कराना चाहता था, इसलिए हम मर्यादा महोत्सव के पूर्व रायपुर आ गये। इस पर चिन्तन करने के लिए विभिन्न लोगों की एक सभा आयोजित की गई। उपस्थित सभी लोगों ने चातुर्मास के लिए उत्साहपूर्वक सहमति प्रकट की। सरकार ने भी इसमें सहयोग का आश्वासन दिया। इस निर्णय के अनुसार हैदराबाद मर्यादा महोत्सव पर रायपुर से सैकड़ों व्यक्ति गये तथा चातुर्मास का निवेदन किया।

रायपुर के समाज की प्रबल भावना देख गुरुदेव ने थोड़ा आश्वासन प्रदान किया। उसके बाद श्रावक समाज ने चातुर्मास की प्रारंभिक व्यवस्था शुरू कर दी। गुरुदेव ने हैदराबाद से विहार कर नागपुर होते हुए छत्तीसगढ़ की सीमा में प्रवेश किया, क्रमशः राजनंदगांव पधारे। वहां मुख्यमंत्री श्यामाचरण शुक्ल भोपाल से आए। उन्होंने वहां हजारों लोगों के मध्य रायपुर चातुर्मास का निवेदन किया। गुरुदेव ने जनता के तीव्र उत्साह को देखकर रायपुर चातुर्मास की घोषणा की। उससे चारों ओर हर्ष की लहर दौड़ गयी।

उड़ीसा के श्रावक समाज में गुरुदेव के वहां पदार्पण की बहुत भावना थी। उनकी पिपासा शांत करने के लिए राजनंदगांव से उड़ीसा की ओर विहार किया। वहां अनेक क्षेत्रों में प्रभावशाली कार्यक्रम संपन्न हुए। गुरुदेव के पधारने से छत्तीसगढ़ और उड़ीसा में अद्भुत धर्म जागृति का संचार हुआ। उड़ीसा यात्रा संपन्न कर रायपुर की ओर विहार किया।

पूर्व घोषित कार्यक्रम के अनुसार गुरुदेव के विशाल जुलूस के साथ रायपुर नगर में पधारना हुआ। जुलूस को शांति यात्रा का रूप दिया गया। हजारों लोग साथ-साथ में मौन चल रहे थे। विभिन्न सम्प्रदाय के धर्मगुरुओं ने दूर तक जाकर गुरुदेव की अगवानी की और पूरे जुलूस में साथ-साथ चले। जिस मार्ग से भी पधारना हुआ उधर जनता की अपार भीड़ स्वागत में पलक पांवड़े बिछाये खड़ी थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो पूरा नगर ही स्वागत में उमड़ रहा हो। नगर की परिक्रमा संपन्न कर गुरुदेव अणुव्रत पंडाल में पधारे। उस समय गगनभेदी जयनादों से श्रद्धालुओं ने स्वागत किया।

विशाल पंडाल जनता से भरा था। हजारों लोग बाहर खड़े थे। स्वागत भाषणों की शृंखला में शिक्षामंत्री जगदीश नारायण अवस्थी ने कहा आचार्य तुलसी नैतिक जागरण के लिए पद यात्रा कर रहे हैं। वे राष्ट्र के महान संत हैं। हमारा सौभाग्य है कि वे रायपुर में चातुर्मास के लिए पधारे हैं। मध्यप्रदेश सरकार उनके अणुव्रत मिशन को आगे बढ़ाने में पूरा सहयोग करेगी। मैं राज्य की ओर से आपका स्वागत करता हूं। विवेकानंद आश्रम के स्वामी आत्माराम ने कहा आचार्य तुलसी के संबंध में हम वर्षों से सुन रहे हैं। पिछले वर्ष उनके विद्वान शिष्य मुनि राकेशकुमार का चातुर्मास होने से हमें उनके विचारों और कार्यक्रमों की पूरी जानकारी मिली। अणुव्रत का कार्यक्रम मानव मात्र के लिए कल्याणकारी है। हम सभी यहां आने पर आपका हार्दिक स्वागत करते हैं। अन्य धर्मगुरुओं ने भी अपने विचार प्रकट किये। नगर के प्रमुख कार्यकर्ताओं के भी स्वागत भाषण हुए। गुरुदेव ने नगर की जनता को संबोधित करते हुए कहा भारत धर्मप्रधान देश है। जीवन के हर क्षेत्र के साथ सत्य, अहिंसा प्रधान धर्म का गहरा संबंध है। हमें धर्म को साम्प्रदायिकता से मुक्त रखना है तथा सब धर्मों के नैतिक आदर्शों का स्वागत करना है।

गुरुदेव ने रायपुर की जनता की उदारता और श्रद्धाभावना की प्रशंसा करते हुए कहा यहां मुनि राकेशकुमार के चातुर्मास से अणुव्रत का बहुत सुंदर कार्य हुआ है। इससे मैं बहुत प्रसन्न हूं। हमें इस चातुर्मास में उस कार्य को आगे बढ़ाना है।

गुरुदेव ने रायपुर के कार्य के संबंध में मेरे प्रति कृपापूर्ण उद्गार फरमाये तथा कुछ पद्य भी कहे। उनमें से एक पद्य इस प्रकार है

मुनि राकेश रो ओ भारी, सार्वजनिक उद्योग।

घर-घर गलि-गलि छायो, अणुव्रत गीत प्रयोग।।

रायपुर की चर्चा के साथ एक प्रश्न सबके मन में उत्पन्न होता है यदि वहां इतना सुंदर वातावरण था तो अग्नि परीक्षा के नाम पर विरोध क्यों हुआ? यह प्रश्न स्वाभाविक है। गुरुदेव के पधारने के पूर्व रायपुर जिले में लगभग एक वर्ष मेरा रहना हुआ। रायपुर के प्रमुख दैनिक पत्रों में प्रवचन व अन्य कार्यक्रम विस्तार से प्रकाशित होते रहे। छह महीनों तक लगभग 3000 विद्यालयों में प्रतिदिन अणुव्रत गीत का संगान होता रहा तथा विद्यार्थी अणुव्रत की आचार संहिता दोहरायी जाती रही। जिले भर के प्रायः सभी प्रमुख स्थानों पर प्रवचन हुए पर कहीं से भी विरोध का स्वर सुनाई नहीं दिया।

रायपुर में जो भी विरोध हुआ उसके मूल में कुछ लोगों की ईर्ष्यालु मनोवृति थी। उन ईर्ष्यालु लोगों में कुछ जैन और कुछ अजैन थे। उन लोगों को ईर्ष्या की आग प्रकट करने का अवसर मिल गया, ऐसा लगता है। वे गुरुदेव के प्रभाव और वर्चस्व को सहन नहीं कर सके।

भ्रष्टाचार के खिलाफ सार्थक प्रयास करने होंगे : आचार्य महाश्रमण

रेलमगरा, 9 अप्रैल। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने राजस्थान पत्रिका के संवाददाता से बातचीत करते हुए कहा देश में फैल रहे भ्रष्टाचार के खिलाफ सबको सार्थक प्रयास करने होंगे। चाहे वह संत समाज हो या राजनीति से जुड़े लोग। यह विषय मंथन का है। इसके विरोध में जो कदम अन्ना हजारे ने उठाया है उसी पुरुषार्थ की अपेक्षा सभी वर्ग के लोगों से है। संतों को सक्रिय राजनीति में उतरने की बजाय राजनीति कर रहे लोगों का पथ-प्रदर्शक बनना चाहिए। संत यदि अपनी ही भूमिका में रहें तो ज्यादा अच्छी बात है। देश में कई जातियां और धर्म सम्प्रदाय हैं। सबकी अपनी-अपनी आचार संहिता हैं। वर्तमान में जरूरत इस बात की है कि सब संतों में मैत्री भाव बना रहे।

आचार्य महाश्रमण ने नैतिक जीवन जीने एवं अहिंसात्मक जीवन शैली अपनाने पर जोर देते हुए कहा मनुष्य को ईमानदारी के साथ कार्य कर धोखा नहीं करना चाहिए। अगर मनुष्य को जीवन बचाना है तो जीवन में जुआ नहीं खेलें। मृत्यु शाश्वत है शरीर अस्थायी है लेकिन आत्मा चिरकाल तक स्थायी है। इस स्थायित्व एवं अस्थायित्व के चक्र को ही जीवन कहते हैं।

प्रातः नशामुक्ति रैली का आयोजन हुआ एवं पंचसूत्रीय संकल्प पत्र आचार्यश्री को भेंट किये गये। नशामुक्ति रैली उपरांत आयोजित धर्मसभा में सुखाड़िया विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. बी.एल. चौधरी, हिंदुस्तान जिंक दरीबा माइंस के महाप्रबंधक पी.के. जैन, भाजपा जिलाध्यक्ष नंदलाल सिंघवी, प्रकाश खेरोदिया, श्यामलाल चौहान इत्यादि उपस्थित थे।

आचार्य महाप्रज्ञ की पुण्यतिथि

२८ अप्रैल, वैशाख कृष्णा एकादशी। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ की वार्षिक पुण्यतिथि पर आयोजित विशेष कार्यक्रम में उनका भावपूर्ण स्मरण किया गया और उनके व्यक्तित्व और कर्तृत्व की विभिन्न कोणों से व्याख्या करते हुए महाश्रमण में महाप्रज्ञ की छवि को निहारने के साथ उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने का संकल्प व्यक्त किया गया। मजेरा प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक फतेहलाल मेहता ने आगंतुकों का स्वागत किया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष उदयपुर के महाराणा महेन्द्रसिंह मेवाड़ ने कहा 'अच्छी बात कहीं से भी मिले, उसे स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए। मैं आचार्य तुलसी से आमेट में मिला था। समाज कल्याण की दिशा में किए गए उनके प्रयत्न को कभी भुलाया नहीं जा सकता। तनाव दूर करने के लिए आचार्य महाप्रज्ञ ने प्रेक्षाध्यान के रूप में जो प्रयोग बताए, वे बहुत उपयोगी हैं।'

मुख्य अतिथि राजस्थान के खेल एवं युवा राज्यमंत्री मांगीलाल गरासिया, विशेष अतिथि कुंभलगढ़ के विधायक गणेशसिंह परमार, राजसमन्द की नगर पालिकाध्यक्ष श्रीमती आशा पालीवाल, जिलाप्रमुख किशनलाल गमेती एवं उप जिलाप्रमुख मदन गुर्जर के प्रासंगिक वक्तव्य हुए।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने अपने वक्तव्य में कहा 'जीवन को बुलंदियों तक पहुंचाने के लिए भाग्य और पुरुषार्थ दोनों की अपेक्षा होती है। आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन में इन दोनों का योग था। उन्हें पूज्य कालूगणी एवं पूज्य आचार्य तुलसी का सान्निध्य मिला। भाग्य ने भी उनका साथ दिया और पुरुषार्थ में उन्होंने जीवन भर कमी नहीं आने दी। उसी का परिणाम है कि वे अलौकिक महापुरुष बन गए।'

मंत्री मुनि सुमेरमल ने कहा 'आचार्य महाप्रज्ञ का भौतिक शरीर कृश था, पर श्रुत शरीर मजबूत था और समय के साथ वह और ज्यादा पुष्ट होता गया। उनका साहित्य जीवनदायी, बोधप्रद व समादृत है। उनके द्वारा प्रस्तुत प्रेक्षाध्यान तनावमुक्ति के रूप में संजीवनी है।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा 'आचार्य महाप्रज्ञ इतिहास पुरुष और आगमपुरुष थे। वे दार्शनिक, प्रखर वक्ता, लेखक और आशुकवि थे, चैतन्य जागरण के महान साधक यात्री थे। तेरापंथ और जैन समाज में ही नहीं, जन-जन में, विशेषकर प्रबुद्ध वर्ग और विदेशी लोगों में भी उनके व्यक्तित्व का व्यापक प्रभाव था। वे अध्यात्म के सुमेरु थे। उनके चिंतन में अध्यात्म और विज्ञान दोनों का दर्शन होता था। गुरु के प्रति समर्पण और श्रद्धा के वे अप्रतिम उदाहरण थे।'

आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा 'आचार्य महाप्रज्ञ बहुश्रुत थे। विविध विषयों का उन्हें तलस्पर्शी ज्ञान था। वह ऐसा मानव सूर्य था, जिसने कितनों को ज्ञान का आलोक बांटा। मुझे भी उनका विद्यार्थी होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वह एक महाग्रंथ का दसवां अध्याय था जो गरिमा के साथ आलेखित होकर संपन्न हो गया। एक ऐसा शशि, जिसने सबको शीतलता प्रदान की। ऐसा महासागर, जिसके चिंतन में गाम्भीर्य था। ऐसा गंधहस्ति, जिसके यूथ में विविध रूपों में सेवा देने वाले व्यक्ति थे।'

आचार्य महाप्रज्ञ की अनुपमेय अनुकंपा की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने भावपूर्ण शब्दों में कहा 'मेरे साथ उनका निकट संबंध रहा। गुरुदेव तुलसी के समय से ही मुझे आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में संघीय कार्य करने और उड़ान भरने का सुअवसर मिला। मुझ पर उनकी अगाध कृपा व करुणा की धारा प्रवाहित हुई। उन्होंने मुझे शिखर के आसपास पहुंचा दिया। आचार्यश्री ने कार्य करने का मुझे मुक्त आकाश दिया। संघीय व्यवस्था के कार्य में हम दोनों अभिन्न थे। ऐसे महान गुरु को पाया, उनके सान्निध्य में रहा और खुलकर काम किया। उनके ज्ञान में गंभीरता का स्पष्ट दर्शन होता था।'

एक वर्ष पूर्व हुए महाप्रयाण का स्मरण करते हुए आचार्यश्री ने कहा 'उस दिन गुरुदेव ने 'संबोधि' पर प्रवचन दिया था। कुछ ही प्रवचन दे पाए थे। संबोधि पर लंबी प्रवचनमाला चलनेवाली थी। वह पूरी न हो सकी। मैं यथासंभव यथासमय संबोधि पर अधूरी रही उस प्रवचनमाला को पूर्ण करने का भाव रखता हूं।' आचार्यवर ने आगे कहा 'एक व्यक्ति ने कितने अवदान दिए। उनकी सप्तवर्षीय अहिंसा यात्रा बहुत प्रभावी रही। उन्होंने आगम संपादन का महनीय कार्य किया। मैं उस कार्य को यथासंभव आगे बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील हूं और रहूंगा।'

आचार्यवर ने आगे कहा 'शासनसेवी फतेहलाल मेहता के निवेदन पर मैंने सरदारशहर में इस कार्यक्रम को मजेरा में मनाने की घोषणा की थी। मेरा वह वचन पूरा हो रहा है, इसका मुझे सात्विक संतोष है।' आचार्य महाप्रज्ञ को श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए आचार्यवर ने कहा 'हमें वह

लोगों ने लिया नशामुक्ति का संकल्प

महान व्यक्तित्व मिला, हमने उसका उपयोग भी किया और अपना कार्य पूरा कर वह महासूर्य अदृश य हो गया। हम उनकी महानता, उनके उपकारों और अवदानों के प्रति प्रणत हैं। उनकी आत्मा मुक्ति का वरण करें।' इस अवसर पर आचार्यवर ने स्वरचित स्मृति गीत का संगान किया। वह गीत पूर्व विज्ञप्ति में प्रकाशित हो चुका है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार ने किया। रात्रि में आयोजित भजन संन्ध्या के कार्यक्रम में संदीप बरड़िया एवं वीणा सेठिया ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किए।

'साधारण व्यक्ति : असाधारण क्षमताएं' पुस्तक का लोकार्पण

१ मई। प्रातःकालीन कार्यक्रम में अणुव्रत सेवी स्वर्गीय पृथ्वीराज कच्छारा के जीवन पर प्रकाशित 'साधारण व्यक्ति : असाधारण क्षमताएं' स्मृतिग्रंथ का लोकार्पण किया गया। अणुव्रत से संबंधित संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं पारिवारिकजनों ने स्व. कच्छारा के संदर्भ में अपने उद्‌गार व्यक्त किए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केन्द्रीय भूतल परिवहन मंत्री डॉ. सी.पी. जोशी व राजस्थान के खेल मंत्री मांगीलाल गरासिया, राजसमन्द के सांसद गोपाल सिंह शेखावत, कुंभलगढ़ के विधायक गणेश सिंह परमार ने स्व. कच्छारा की समाजिक सेवाओं को उल्लेखनीय बताया। मुनि किशनलाल का प्रासंगिक वक्तव्य हुआ।

केन्द्रीय मंत्री जोशी, बाबूलाल कच्छारा व स्व. पृथ्वीराज के सुपुत्र सुरेन्द्र कच्छारा ने ग्रंथ की प्रथम प्रति आचार्यश्री को भेंट की। प्रेमलता कच्छारा ने ग्रंथ की प्रति साध्वीप्रमुखा को भेंट की। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा, मुख्यनियोजिका एवं मंत्री मुनि ने अपने वक्तव्य में स्व. पृथ्वीराज की संघीय सेवाओं का उल्लेख किया।

आचार्य महाश्रमण ने कहा 'पृथ्वीराज कच्छारा परोपकार वृत्ति वाले, विनम्र व मिलनसार व्यक्ति थे। उन्होंने अणुव्रत के क्षेत्र में बहुत काम किया। ऐसे विरल व्यक्ति मिलेंगे, जिन्हें दो अलंकरण 'अणुव्रतसेवी' व 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' प्राप्त हुआ हो। उनके जीवन से अन्य लोग भी प्रेरणा प्राप्त करें।'

मुनि दुलहराज द्वारा अनुदित पांच उपन्यास मुनि राजेन्द्रकुमार, मुनि जितेन्द्रकुमार व मुनि गौतमकुमार ने आचार्यश्री को उपहृत किए। आचार्यवर ने इस संदर्भ में कहा 'मुनि दुलहराज आगम मनीषी संबोधन प्राप्त विद्वान संत थे। आचार्य महाप्रज्ञ के साथ लंबे समय तक आगम कार्य, साहित्य संपादन व सेवा से जुड़े रहे। वे मिलनसार व विनोदप्रिय थे। बहुश्रुत परिषद में उनका एक नाम जुड़ना महनीय बात है। मुनि राजेन्द्रकुमार सेवाभावी व संस्कृत भाषा के विद्वान संत हैं। ये आचार्य महाप्रज्ञ की सेवा करने वाले प्रमुख संतों में एक रहे। मुनि जितेन्द्र उत्साही और साहित्यिक कार्य से जुड़े हुए हैं। ये जहां भी रहें, अच्छा कार्य करते रहें।

अणुव्रत शिक्षक सेमिनार

३ मई। प्रातः आचार्यवर ने खीमजमाता मंदिर और अनेक घरों का स्पर्श किया। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मुनि प्रसन्नकुमार ने अपने ननिहाल क्षेत्र की ओर से आचार्यवर की अभिवंदना की। स्थानीय महिला मंडल ने गीत का संगान किया। मंत्री मुनिश्री का अभिभाषण हुआ।

आचार्य महाश्रमण ने गुरु सन्निधि में बैठने में जागरूकता रखने और उसके तौर-तरीकों की विस्तार से चर्चा की। परिवारों में सौमनस्यपूर्ण वातावरण की उपादेयता को रेखांकित करते हुए मैत्रीभाव को वृद्धिंगत करने का आह्वान किया। मध्याह्न में शिक्षा में जीवन विज्ञान की उपयोगिता विषयक अणुव्रत शिक्षक सेमिनार का आयोजन हुआ। लगभग तीन सौ अध्यापक इस सेमिनार में सहभागी बने। प्रेक्षाध्यापक मुनि किशनलाल एवं समण सिद्धप्रज्ञ ने जीवन विज्ञान के संदर्भ में अवगति देते हुए प्रयोग करवाए। मुनि नीरजकुमार के जीवन विज्ञान गीत की प्रस्तुति के बाद कुंभलगढ़ के ब्लॉक शिक्षाधिकारी पृथ्वीसिंह कच्छारा, सर्व शिक्षा अभियान अधिकारी मंगलविहारी दाधीच व अन्य शिक्षकों ने अपने प्रासंगिक विचार रखे। आचार्यवर के प्रेरक उद्‌बोधन से सभी लाभान्वित हुए। सेमिनार में यह घोषणा हुई कि कुंभलगढ़ तहसील के सभी सरकारी स्कूलों की प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान लागू किया जाएगा।

६ मई। आचार्यश्री ने प्रातः सायों का खेड़ा से साकरोदा की ओर विहार किया। मार्ग में १ किमी. का चक्कर लेकर सांगठकलां गांव पधारे। आचार्यवर की प्रेरणा से अनेक लोगों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। ज्यों-ज्यों पहाड़ी इलाका मगरा प्रान्त छूट रहा है, त्यों-त्यों गर्मी अपने अस्तित्व का अहसास करा रही है। अधिकांश कच्चे मार्ग से लगभग १०.३ किमी का विहार कर आचार्यवर साकरोदा पधारे। कई वर्षों बाद सभी घर एक साथ खुले। यहां आचार्यवर का प्रवास फूलचन्द भंडारी के आवास पर रहा।

आचार्य महाश्रमण ने अपने मंगल प्रवचन में मनोज्ञ और अमनोज्ञ पदार्थों में राग-द्वेष से बचने का अभ्यास करने की प्रेरणा प्रदान की।

कांकरोली में भव्य प्रवेश

१० मई। आचार्य महाश्रमण फव्वारा चौक, सदर बाजार, धानी चबूतरा होते हुए भिक्षु बोधिस्थल राजनगर में मुनि बालचन्द की पार्थिव देह के समीप पधारे। बोधिस्थल से सदर बाजार, गांधी सेवा सदन, जलचक्की, चोपाटी व जे.के रोड होते हुए मौन व भव्य जुलूस के साथ प्रज्ञा विहार में पधारे। द्वारकाधीश की इस नगरी में बोहरा मुस्लिम समुदाय के लोग अपने बैण्ड के साथ एवं अन्य समुदायों के लोग भी बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए। मुनि बालचन्द के देवलोक गमन के कारण प्रातःकालीन कार्यक्रम स्थगित रखा गया।

रात्रि में आयोजित स्वागत कार्यक्रम में महिला मंडल और कन्यामंडल के गीत हुए! अनेक वक्ताओं ने पूज्यवर के स्वागत में अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। मुस्लिम एवं हिन्दू समुदाय के कई विशिष्ट व्यक्ति इस अवसर पर उपस्थित थे। ज्ञानशाला के बच्चों ने संस्कार बोल, तत्त्वज्ञान कोच आदि के माध्यम से शानदार प्रस्तुति दी। प्रशिक्षिकाओं ने इस संदर्भ में अच्छा श्रम किया।

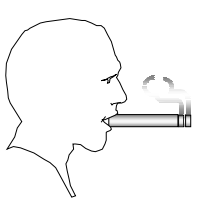

आपका मुँह
ऍश-ट्रे या कूड़ादान
नहीं

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव

नई दिल्ली। मुनि राकेशकुमार, मुनि जयकुमार के सान्निध्य में अणुव्रत भवन में दिल्ली सभा द्वारा 'आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव' का भव्य आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व उपप्रधानमंत्री व भाजपा के वरिष्ठतम नेता लालकृष्ण आडवाणी व विशिष्ट अतिथि के रूप में भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव व पूर्व केन्द्रीय मंत्री विजय गोयल ने भाग लिया। आचार्य महाश्रमण के संदेश का वाचन जया राखेचा ने एवं साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा के संदेश का वाचन महिला मंडल की अध्यक्षा सुमन नाहटा ने किया।

मुनि राकेशकुमार ने कहा आचार्य महाश्रमण आचार्य की अर्हताओं और संपन्नताओं से संपन्न हैं। वे गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के सफल उत्तराधिकारी हैं। उनका जीवन बौद्धिक बल और चरित्र बल से सुशोभित हैं। वे पंचाचार के प्रबल साधक हैं। मुनि जयकुमार ने कहा आचार्य महाश्रमण का व्यक्तित्व उदार और विशाल है। वे अध्यात्म के कुशल प्रवक्ता ही नहीं साधक हैं। उन्हें दो-दो गुरुओं का सान्निध्य मिला है। आचार्य महाश्रमण के अमृत महोत्सव से प्रेरणा लेकर त्याग और संयम का विकास करना चाहिए।

भाजपा के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी ने कहा भारतीय संस्कृति त्याग-प्रधान है। यहां धनकुबेरों के नहीं बल्कि ऋषि-मुनि व तपस्वी संतों की पूजा होती है। मैं आचार्य महाश्रमण के अमृत महोत्सव पर उनके प्रति मंगलकामना करता हूं। उनका चिंतन व प्रवचन राष्ट्रीय एवं समसामयिक समस्याओं को समाधान देगा। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात कर राष्ट्र की महान सेवा की है। अणुव्रत दर्शन युगीन समस्याओं का समाधान देता है। आचार्य महाप्रज्ञ का भी मुझे अत्यधिक स्नेह मिला। वे अहिंसा और शांति के पुरोधा थे। आचार्य महाश्रमण के 50वें जन्मदिवस पर आयोजित अमृत महोत्सव देश में नैतिक व अध्यात्म मूल्यों की प्रतिष्ठा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा, ऐसी मंगलभावना व्यक्त करता हूं।

भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव विजय गोयल ने कहा आज चारों ओर से संस्कृति को विकृत बनाने का प्रयास किया जा रहा है। ऐसी परिस्थितियों में आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव समाज को नई दिशा व दर्शन देता हुआ आध्यात्मिक व नैतिक मूल्यों की पुनःप्रतिष्ठा में भगीरथ दर्शन व आशीर्वाद लेने का अवसर मिला है। आचार्य महाश्रमण के जन्म दिवस पर मंगलकामना करता हूं।

इस अवसर पर मुनि रोहितकुमार, मुनि मुदितकुमार, मुनि दीपकुमार, रतन जैन, सलेकचंद जैन, के.के. जैन, मांगीलाल सेठिया, धनराज बोथरा, सम्पतमल नाहटा, के.एल. जैन, संजय खटेड़, सायर बैंगाणी, बाबूलाल दूगड़, मनोज नाहर, जयसिंह दूगड़ ने वक्तव्य, गीत व कविता के माध्यम से आचार्य महाश्रमण के प्रति मंगलभावना एवं अभ्यर्थना के स्वर बुलंद किये। आभार व्यक्त नरपत मालू ने एवं संयोजन मुनि सुधाकर ने किया।

रक्तदान शिविर

जालना। अणुव्रत समिति जालना एवं सभा के संयुक्त तत्वावधान में महावीर जयंती पर हर वर्ष की भांति रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ। इस अवसर पर 30 व्यक्तियों ने रक्तदान किया। कार्यक्रम का संचालन दर्शना सेठिया व सुरेन्द्र धोका ने किया। इस अवसर पर समणी निर्देशिका डॉ. निर्वाणप्रज्ञा ने प्रभावी उद्बोधन दिया। अमृत सांसद महावीर धारीवाल ने प्रश्नों का उत्तर दिया। समणी निर्देशिका डॉ. निर्वाणप्रज्ञा ने महावीर के अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत के सिद्धांतों का उल्लेख किया।

मानवता से बड़ा कोई धर्म नहीं

सिलीगुड़ी। मानवता से बड़ा कोई धर्म नहीं है। धर्म हमेशा ही प्यार एवं शांति का संदेश देता है। अणुव्रत समिति सिलीगुड़ी द्वारा जरूरतमंद लोगों के लिए किये जा रहे कार्य सराहनीय हैं। ये विचार साध्वी त्रिशलाकुमारी ने विवेकानंद हिन्दी विद्यापीठ में अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित निःशुल्क मोतियाबिंद ऑपरेशन एवं नेत्र जांच शिविर के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

मुख्य अतिथि डॉ. उदय गोविन्द बर्मन राय, विशेष अतिथि गंगाधर नकीपुरिया, स्थानीय पार्षद काजल चंद, मेघराज सेठिया, किशन रामपुरिया, डॉ. डी.आर. नकीपुरिया सहित गणमान्य वक्ताओं ने अपने विचार रखे।

संस्था अध्यक्ष करण सिंह जैन ने कहा हमारा लक्ष्य है जरूरतमंद तबके के लोगों को दृष्टि-प्रदान करना। इसके लिए सिलीगुड़ी ग्रेटर लायंस आई हॉस्पिटल के सहयोग से यह कार्य किया जा रहा है। शिविर में 400 सौ मरीजों के नेत्रों की जांच की गयी। इसमें पचास लोगों में मोतियाबिंद के लक्षण पाए गए। उक्त लोगों के ऑपरेशन की व्यवस्था की जाएगी। संस्था मंत्री सुरेन्द्र घोड़ावत ने कहा कि भविष्य में भी इस तरह के शिविर आयोजित होते रहेंगे। कार्यक्रम की सफलता में संजय वर्मा, बच्छराज बोथरा, अमित गोलछा, हनुमान मालू, राकेश मालू, रतन मालू, प्रमोद दूगड़ सहित सभी सदस्यों का सराहनीय श्रम रहा।

अणुव्रत समिति की बैठक

जोधपुर, 7 मई। अणुव्रत समिति जोधपुर की बैठक साध्वी यशोधरा के सान्निध्य में आयोजित की गयी। संगोष्ठी में नवनियुक्त अध्यक्ष गोविन्दराज पुरोहित को आशीर्वाद प्रदान करते हुए उन्होंने परिषद् को संबोधित किया।

अध्यक्ष महोदय ने सुधा भंसाली को सचिव, रूपचंद भंसाली को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया। साध्वीश्री ने अणुव्रत समिति के माध्यम से शिक्षक संसद व छात्र संसद बनाने का सुझाव देते हुए कहा कि सक्रिय पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं से ही संस्था का गौरव बढ़ता है। पद से आपकी गरिमा नहीं, किन्तु आप से पद की गरिमा बढ़े। सरदारपुरा सभा के अध्यक्ष सुमेर तातेड़ ने भी विचार रखे।

संगोष्ठी में कानराज सालेचा व पूर्व अध्यक्ष घेवरचंद बोहरा ने भी विचार रखे। संचालन सुधा भंसाली ने एवं आभार हनवंत राजसा ने किया। सभी कार्यकर्ताओं की राय थी कि हमारा मुख्य कार्य होगा ज्यादा से ज्यादा स्कूलों में जाकर सभी को अणुव्रत से परिचित करवाना एवं अधिक से अधिक विद्यार्थियों को अणुव्रत परीक्षाओं में संभागी बनाने का। विद्यार्थियों से अणुव्रत संकल्प पत्र भरवाना। इसके अलावा केन्द्र से प्राप्त वार्षिक कार्ययोजना के अनुरूप समिति द्वारा क्षेत्र में अणुव्रत आंदोलन की गतिशीलता में कार्य किये जाने पर भी चिंतन किया गया एवं सभी को जागरूक रहने की बात कही गयी।

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव

छापर। कस्बे के भिक्षु साधना केन्द्र में गुरुवार को तेरापंथ धर्मसंघ की सभी संघीय संस्थाओं द्वारा धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता आचार्य महाश्रमण का पचास वां जन्म दिवस अमृत महोत्सव के रूप में मनाया गया। मुनि ताराचन्द व सेवा केन्द्र व्यवस्थापक मुनि सुमतिकुमार के सानिध्य में आयोजित कार्यक्रम की शुरूआत महिला मण्डल एवं कन्या मण्डल द्वारा गीतिका से की गई। तत्पश्चात मुनि ताराचन्द ने सन्तों के जीवन को त्याग का पर्याय बताते हुए कहा कि आचार्य महाश्रमण एक महातपस्वी सन्त है जिन्होंने धर्मसंघ को नई ऊँचाईयों की ओर अग्रसर किया है। उन्होंने कहा कि ऐसी महातपस्वी के जीवन चरित्र से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए। जबकि सेवा केन्द्र व्यवस्थापक मुनि सुमतिकुमार ने अपने वक्तव्य में आचार्य महाश्रमण के संयमित जीवन से श्रावक समाज को प्रेरणा लेने की बात कही। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व प्रधान पूसाराम गोदारा ने कहा कि सन्तों के त्यागमय जीवन से प्रेरणा लेने के साथ– साथ उनके बताये गये मार्ग पर चलने वाले प्राणी का अन्धकारमय जीवन प्रकाश की ओर अग्रसर हो जाता है। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ की अहिंसा यात्रा को आचार्य महाश्रमण ने जारी रख कर विश्व में नई चेतना का संचार किया है। कार्यक्रम में सभा प्रवक्ता प्रदीप सुराणा ने आचार्य महाश्रमण का एवं यशा दुधोड़िया ने साध्वी प्रमुखा के सन्देशों का वाचन किया।

इस अवसर पर मुनि देवार्य कुमार, मुनि आदित्य कुमार, सूरजमल नाहटा, धन्नाराम प्रजापत, मंजू दुधोड़िया, कुसुम दुधोड़िया एवं प्रिया नाहटा ने भी विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम के अन्त में बिमल दुधोड़िया, भीकमचन्द नाहटा, छत्रसिंह नाहटा, हेमलता नाहर एवं प्रीति सुराणा ने अतिथियों के अलावा पालिका उपाध्यक्ष फूलवती घोटड़, डॉ. चम्पालाल सोनी, मौलाना मुमताज कादरी, नारायणदास कामड़, पार्षद ईश्वरचन्द सोनी एवं अली मोहम्मद को साहित्य भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम में बजरंग यादव, रामेश्वर बेनीवाल, तोलाराम जड़िया एवं शिवशंकर अंठवाल सहित अनेक कस्बेवासी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन प्रदीप सुरणा ने किया।

स्कूल में अणुव्रत-प्रेक्षाध्यान के प्रयोग

हैदराबाद। मुनि जिनेशकुमार के सान्निध्य में अणुव्रत समिति आन्ध्र प्रदेश के तत्वावधान में कृष्ण वेनी टेलेन्ट विद्यालय में कार्यक्रम आयोजित हुआ। विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए मुनि जिनेशकुमार ने कहा जिस तरह तेजी के साथ विश्व की आबादी बढ़ रही है उसी तरह तेजी के साथ स्मृति कमजोर होती जा रही है। सभी माता-पिता, अभिभावक चाहते हैं कि हमारा बच्चा अध्ययन में अव्वल रहे। हमारे घर और शाला का नाम रोशन करे। मुनिश्री ने कहा जो आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छावास, भाषा, मन का संयम रखता है वह श्रेष्ठ जीवन जीता है। मुनिश्री ने विद्यार्थियों को पाथेय देते हुए कहा अगर संत नहीं बन सकते हैं तो कम से कम अच्छे इंसान तो बन सकते हो। विद्यार्थियों को एकाग्रता के विकास के लिए अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान तथा प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करने चाहिए।

प्रादेशिक अणुव्रत समिति की उपाध्यक्षा निर्मला बैद ने मुनिश्री का परिचय देते हुए विद्यार्थियों को प्रयोग करवाये। उन्होंने अणुव्रत के नियम, पुस्तिका व स्टीकर भेंट किए। प्रिंसीपल चन्द्रशेखर ने विचार रखे।

भ्रष्टाचार उन्मूलन रैली

पटना। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र पटना द्वारा भ्रष्टाचार उन्मूलन रैली का आयोजन हुआ। रैली कदमकुआं स्थित भवन कांग्रेस मैदान से प्रारंभ होकर नाला रोड, बाकरगंज, गांधी मैदान, डाक बंगला, आयकर चौराहा व आर. ब्लॉक चौराहा होते हुए मीठापुर मंदिर परिसर में गयी। डॉ. अवधेश प्रसाद की अगुवाई में केन्द्र के तीन प्रशिक्षणार्थी संतोष कुमार, अमित कुमार और विमलेश कुमार छात्र-छात्राओं के साथ रैली में चल रहे थे। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र की 32 मुस्लिम छात्राएं भी रैली में शामिल हुई। रैली का संयोजन केन्द्र प्रभारी सौरभ आचार्य ने किया।

सौरभ आचार्य ने कहा भ्रष्टाचार के विरोध में आज साधु-संत भी सड़कों पर उतर आये हैं। अतः भ्रष्टाचार को जल्द से जल्द खत्म करना होगा। रैली में 'घूस को दो घूंसा', 'हम रिश्वत नहीं देंगे', 'हम खिलाते हैं इसलिए वो खाते हैं' इत्यादि नारों के साथ भ्रष्टाचार के खिलाफ विरोध प्रदर्शित किया गया। कार्यक्रम में जैन संघ पटना द्वारा केन्द्र की पांच प्रशिक्षणार्थियों को एक-एक सिलाई मशीन दी गयी।

राणी ने ग्रहण किया संथारा

पड़िहारा की 78 वर्षीय श्राविका श्रद्धा की प्रतिमूर्ति रतनी देवी उर्फ राणी धर्मपत्नी स्व. धनराज सुराणा ने अपनी निराहार तपस्या के 22वें दिन संथारा ग्रहण कर लिया है। साध्वी धर्मप्रभा व विनीतप्रभा ने उनके व परिजनों के अनुरोध पर दोपहर ढाई बजे संथारा पचखाया। इस अवसर पर रतनी देवी के सभी पुत्र,पुत्रवधुएं, पुत्रियां, पौत्र–पौत्रियां व अन्य परिजन उपस्थित थे। रतनी देवी का स्वास्थ्य अत्यंत कमजोर एवं निर्वस लग रहा है। रतन जैन ने बताया कि राणीजी पड़िहारा में धीर वीर गंभीर श्राविका के रूप में जानी जाती है। महिलाओं के विकास में उनकी खासी भागीदारी रही है।

अन्ना हजारे के समर्थन में रैली

जयपुर, 9 अप्रैल। समाजसेवी अन्ना हजारे की भ्रष्टाचार के विरुद्ध मुहिम के समर्थन में अणुव्रत समिति ने रैली में भाग लिया। अनेक संस्थाओं द्वारा आयोजित यह रैली 9 अप्रैल को जयपुर के राज मन्दिर से राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के पूर्व महामंत्री पंचशील जैन के संगठन नेशनलिस्ट पीपल्स फ्रंट द्वारा प्रारम्भ हुई। इसमें अणुव्रत महासमिति के उपाध्यक्ष जी.एल. नाहर तथा जयपुर अणुव्रत समिति की अध्यक्षा आशा नीलू टाक के नेतृत्व में जयपुर अणुव्रत समिति भी शामिल हुई। इस रैली में समग्र सेवा संघ, जमाते इस्लाम, रूवा आदि अनेक संस्थाओं की रैलियाँ भी जुड़ती गईं और एक विशाल रैली के रूप में पाँच बत्ती सर्कल पर पहुँची, जहाँ पाँच बत्ती के चारों ओर घेरा बना कर संस्थाओं द्वारा भ्रष्टाचार के विरुद्ध मुहिम तेज करने की घोषणा की गई। यह रैली विभिन्न मार्गों से होती हुई उद्योग मैदान में पहुँच कर सभा के रूप में तब्दील हो गई जहाँ भ्रष्टाचार से सम्बन्धित जन सुनवाई के साथ-साथ विशेष व्यक्तियों द्वारा भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज उठाई गई।

खेती व किसानों को बचाने की अपील

जयपुर, 8 अप्रैल। राजस्थान समग्र सेवा संघ परिसर गोकुलभाई भट्ट मार्ग दुर्गापुरा जयपुर में राजस्थान सरकार के बहुराष्ट्रीय व एग्रो बिजनेस कम्पनियों से किए गए हाल के समझौते के संदर्भ में राजस्थान में पंचायत राज व कृषि पर एक दिवसीय गोष्ठी आयोजित की गई जिसमें ग्रामीण किसानों व विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। भारत डोगरा ने समझौते के विभिन्न पहलुओं का विस्तृत ब्यौरा देते हुए खेतीहर किसानों को इसके कारण किन-किन कठिनाइयों को झेलना पड़ेगा का भी विवेचन किया। राजस्थान की कृषि नीति के संदर्भ में नगेन्द्र सिंह खंगारोत व वीरेन्द्र विद्रोही इन्साफ राजस्थान ने भी एक साथ मिल कर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के प्रभाव में प्रवाहित सरकार के दुष्परिणामों से सचेत करने के लिए सभी को मिल कर कार्य करने का संकल्प दोहराया। उक्त गोष्ठी में जी.एल. नाहर, उपाध्यक्ष अणुव्रत महासमिति ने सहभागिता निभाई।

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष

अहमदाबाद, 9 मई। गुजरात राज्य अणुव्रत समिति द्वारा अणुव्रत महासमिति के उपाध्यक्ष जी.एल. नाहर की उपस्थिति में अणुव्रत विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ। गुजरात राज्य अणुव्रत समिति के अध्यक्ष जवेरीलाल संकलेचा ने स्वागत भाषण में कहा अणुव्रत महासमिति द्वारा प्रेषित अणुव्रत आचार संहिता के बेनर, पानी बचाओ स्टीकर एवं अन्य प्रचार-प्रसार साहित्य पालनपुर, डीसा, गांधीधाम, भुज, बड़ौदा इत्यादि शहरों में भेजे जा रहे हैं। स्कूलों में अणुव्रत का कार्य, निबन्ध प्रतियोगिता, क्विज प्रतियोगिता आदि कई सामाजिक व नैतिक कार्य सक्रियता से करवाया जा रहा है।

चुनाव अधिकारी सुरेन्द्र लूणिया ने बताया कि सबको पत्र सूचना के बाद अंतिम तारीख तक अध्यक्ष पद हेतु किसी का फार्म नहीं आने से साधारण सभा में चुनाव की जगह मनाव प्रक्रिया द्वारा सर्व सहमति से जवेरीलाल संकलेचा को आगामी कार्यकाल हेतु अध्यक्ष बनाया गया। अणुव्रत महासमिति की महरौली स्थित जमीन का कार्य पूज्यवरों की दृष्टि से होना चाहिए।

अणुव्रत महासमिति के उपाध्यक्ष जी.एल. नाहर ने कहा अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष नजदीक आ रहा है। अभी से सक्रियता से सभी को जुड़ने का आह्वान किया। जवेरीलाल संकलेचा ने जी. एल. नाहर का साहित्य द्वारा स्वागत किया। अशोक दूगड़ ने पानी बचाओ स्टीकरों का वितरण किया।

पर्यावरण बचाओ रैली

जोधपुर। अणुव्रत समिति जोधपुर के तत्वावधान में साध्वी यशोधरा के सान्निध्य में महावीर जयंती पर पर्यावरण बचाओ संबंधी झांकी निकाली गयी। झांकी में अणुव्रत समिति जोधपुर की अध्यक्षा सुधा भंसाली एवं सभी कार्यकर्ताओं ने जुलूस में भाग लेकर पर्यावरण बचाओ संबंधी उद्घोषों को बुलंद किया। रैली में मुख्य रूप से भ्रष्टाचार रोको, पर्यावरण बचाओ, जीवन सुखी बनाओ इत्यादि नारे लगाये गये एवं अणुव्रत प्रचार-प्रसार साहित्य का भी वितरण किया गया।

झांकी में लिखे बड़े-बड़े वाक्यों में लिखे प्रेरक वाक्यों की ग्रामीण लोग सराहना कर रहे थे एवं जुलूस में सहभागी बन उद्घोष कर रहे थे। अणुव्रत-पर्यावरण बचाओ झांकी बहुत ही जीवन्त एवं प्रेरक रही।

गांधी सेवा सदन में आचार्य महाश्रमण अभिवंदना समारोह

राजसमन्द, 13 मई। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण की आचार्य शासना की प्रथम वर्षगांठ पर गांधी सेवा सदन में आयोजित अभिवंदना समारोह को उद्‌बोधित करते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा वैशाख शुक्ल दशमी भगवान महावीर का केवल कल्याण दिवस है। इस दिन के साथ मुझे जोड़ा गया है। तिथि के अनुसार मेरा जन्म दिवस है। एक वर्ष पूर्व इसी तिथि को आचार्य का दायित्व सौंपा गया। वह मेरा पुनर्जन्म था। दशम् अधिशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने मुझे दायित्व सौंपा, लेकिन इसे व्यावहारिक स्वरूप संघ ने प्रदान किया। मेरे लिए स्थूल शरीर के जन्म से अधिक महत्वपूर्ण पट्टोत्सव का जन्म है।

गांधी विद्या मंदिर सरदारशहर से गांधी सेवा सदन राजसमंद तक की मेरे आचार्यकाल की 365 दिनों की यात्रा में मुझे सभी का पूर्ण सहयोग मिला है। गांधी सेवा सदन अणुव्रत आंदोलन के पुरोधा कार्यकर्ता देवेन्द्र भाई का साधना स्थल है। उन्हीं की स्मृति में आज मैं गांधी सेवा सदन आया हूं। मेरी कामना है कि संस्थान में अच्छा कार्य चले तथा शैक्षणिक-सामाजिक क्षेत्रों में सघन विकास कार्य करें।

गांधी सेवा सदन द्वारा संचालित बाल निकेतन की छात्राओं के ''आचार्य प्रवर श्री महाश्रमण का करते हम अभिनंदन हैं, अभिनंदन की इस वेला में हर्षित सारा यहां जन-जन है।'' गीत से अभिवंदना समारोह का प्रारंभ हुआ। लक्ष्मी जैन एवं गजेन्द्र माली ने भी बालिकाओं का साथ दिया।

गुणसागर कर्णावट ने स्वागत करते हुए कहा पूज्यश्री का गांधी सेवा सदन में आगमन हमें नई प्रेरणा दे रहा है। ग्राम्य अंचल में नशामुक्ति तथा पर्यावरण जागरूकता की दिशा में सघन कार्य करने का हमने निर्णय लिया है। मैं अणुव्रत दर्शन को आगे बढ़ाने में पूरा समय लगाऊंगा।

लोक कवि माधव दरक ने आचार्य स्तुति में 'स्वयं भगीरथ लेकर आए कर लो गंगाजल रसपान' का संगान किया। गुलाबपुरा से राजसमंद के यात्रा पथ में संग्रहित 18570 पंचसूत्रीय अणुव्रत संकल्प पत्रों को नौरतनमल कांठेड़, सम्पत सामसुखा, हेमलता चौधरी, डॉ. बी.एल. खाब्या, राधेश्याम राणा, जसराज सरगरा, विजयसिंह सिंघवी, डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने आचार्य महाश्रमण को भेंट किये।

कवि अब्दुल जब्बार ने ''तेरापंथ के हैं महानायक अभिनंदन स्वीकार करो, आलोकित मन के महासाधक ये वन्दन स्वीकार करो'' गीत का कर्णप्रिय संगान किया।

इस अवसर पर अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. महेन्द्र कर्णावट के अणुव्रत महासमिति के अध्यक्षीय काल के चार वर्षों के संस्मरणों का संग्रह ''स्मृतियों के वातायन'' का लोकार्पण आचार्य महाश्रमण ने किया। उक्त पुस्तक का प्रकाशन अणुव्रत सेवी मगन जैन तुषरा की धर्मपत्नी स्व. सीता देवी जैन की स्मृति में उनके अर्थ सौजन्य से हुआ। जिसे जी.एल. नाहर, जुगराज नाहर एवं बी.एन. पांडेय ने पूज्यवरों को समर्पित किया। आचार्य महाश्रमण ने पुस्तक की शुभाशंसा में कहा उस साहित्य का महत्व होता है, जिसमें सच्चाइयां प्रकट होती हैं और जो दूसरों का पथ-दर्शन करने वाला होता है। डॉ. महेन्द्र कर्णावट अणुव्रत से जुड़े हुए एक विशिष्ट कार्यकर्ता हैं, एक प्रबुद्ध व्यक्ति हैं। उनकी कृति 'स्मृतियों के वातायन' पाठकों का पथदर्शन और ज्ञानवृद्धि करने वाली सिद्ध हो।

अणुव्रत महारथी, गांधी सेवा सदन के संस्थापक देवेन्द्र कुमार कर्णावट की स्मृति में प्रतिवर्ष दिये जाने वाला देवेन्द्र पुरस्कार राजसमंद क्षेत्र के एक निष्ठावान, प्रामाणिक एवं व्यसनमुक्त जीवन के धनी व्यक्तित्व को प्रदान किया जाता है जिनका समाज सेवा, साहित्य, पत्रकारिता शिक्षा क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान रहा हो।

देवेन्द्र पुरस्कार के अंतर्गत सम्मान राशि 21 हजार रुपये, प्रतीक चिह्न, साहित्य एवं शॉल समर्पित किया जाता है। वर्ष 2008 में प्रथम पुरस्कार शिक्षाविद् यमुनाशंकर दशोरा, वर्ष 2009 में द्वितीय पुरस्कार लोक कवि माधव दरक को समर्पित किया गया। वर्ष 2010 में तृतीय देवेन्द्र पुरस्कार अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में राजसमंद की जनप्रिय महिला चिकित्सक डॉ. पुष्पा खिलनानी को संस्था पदाधिकारी ख्यालीलाल तातेड़, मधुसूदन व्यास एवं विजयराज सुराणा ने प्रदान किया। डॉ. पुष्पा खिलनानी का परिचय मधुसूदन व्यास ने प्रस्तुत किया।

गांधी सेवा सदन, भिक्षु बोधि स्थल, अणुव्रत समिति तथा कर्णावट परिवार राजसमंद द्वारा अणुव्रत अनुशास्ता को अभिनंदन पत्र भेंट कर उनकी अभिवंदना की गयी। अभिनंदन पत्र का वाचन भिक्षु बोधि स्थल के अध्यक्ष गणपत धर्मावत ने किया तथा ख्यालीलाल तातेड़, डूंगरसिंह कर्णावट, मधुसूदन व्यास, ललित बड़ोला, आबिद अली ने अणुव्रत अनुशास्ता को भेंट किया।

नन्हीं बच्ची कृति कर्णावट ने इकराम राजस्थानी की विश्वशांति का विश्व में फैलेगा संदेश, महाश्रमण के साथ है सारा भारत देश कविता का बाल स्वरों में संगान किया। इस अवसर पर प्रकाशित अणुव्रत पाक्षिक के विशेष ''आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव अंक'' को जी. एल. नाहर, बाबूलाल गोलछा, विजयराज सुराणा ने पूज्यवरों को भेंट किया। तरुण सेठिया ने एक मुक्तक प्रस्तुत किया।

मुनि सुरेशकुमार, मुनि किशनलाल, मुनि सुखलाल, समणी चरित्रप्रज्ञा, साध्वी सिद्धप्रज्ञा, साध्वी सुमतिप्रभा, साध्वी परिवार ने आचार्य महाश्रमण के व्यक्तित्व-कृतित्व पर प्रकाश डाला। जैन विश्व भारती ने पूज्यश्री को अभिनंदन पत्र भेंट किया। साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा, मंत्री मुनि सुमेरमल ने आचार्यश्री के प्रति मंगल कामनाएं व्यक्त की। संयोजन मुनि मोहजीतकुमार ने किया। आचार्य महाश्रमण अभिवंदना समारोह में दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं दक्षिण भारत तथा अन्य प्रदेशों के 5000 से अधिक श्रावकों ने भाग लिया।